PDF Compressor Free Version

Delhi Postal Regd. No. DL (C) - 01/1272/2021-23 R.N.I. No. 72014/98 Posted at LPC Delhi RMS, Delhi-6 Monday & Tuesday

अखिल भारतीय तेरापंथ टाइम्स

संघीय समाचारों का साप्ताहिक मुखपत्र

अर्हत उवाच

सए सए उवट्ठाणे,
सिद्धिमेव ण अन्नहा।

अपने मत की प्रशंसा करने वाले कहते हैंअपने-अपने सांप्रदायिक अनुष्ठान में ही सिद्धि होती है, दूसरे प्रकार से नहीं होती।

• नई दिल्ली • वर्ष 24 • अंक 28 • 17 - 23 अप्रैल, 2023 प्रत्येक सोमवार • प्रकाशन तिथि : 15-04-2023 • पेज : 16 • ₹10

मुनि महेंद्रकुमारजी हमारे धर्मसंघ के उच्च कोटि के विद्वान संत थे

मानव जीवन का परम लक्ष्य मोक्ष प्राप्ति : आचार्यश्री महाश्रमण

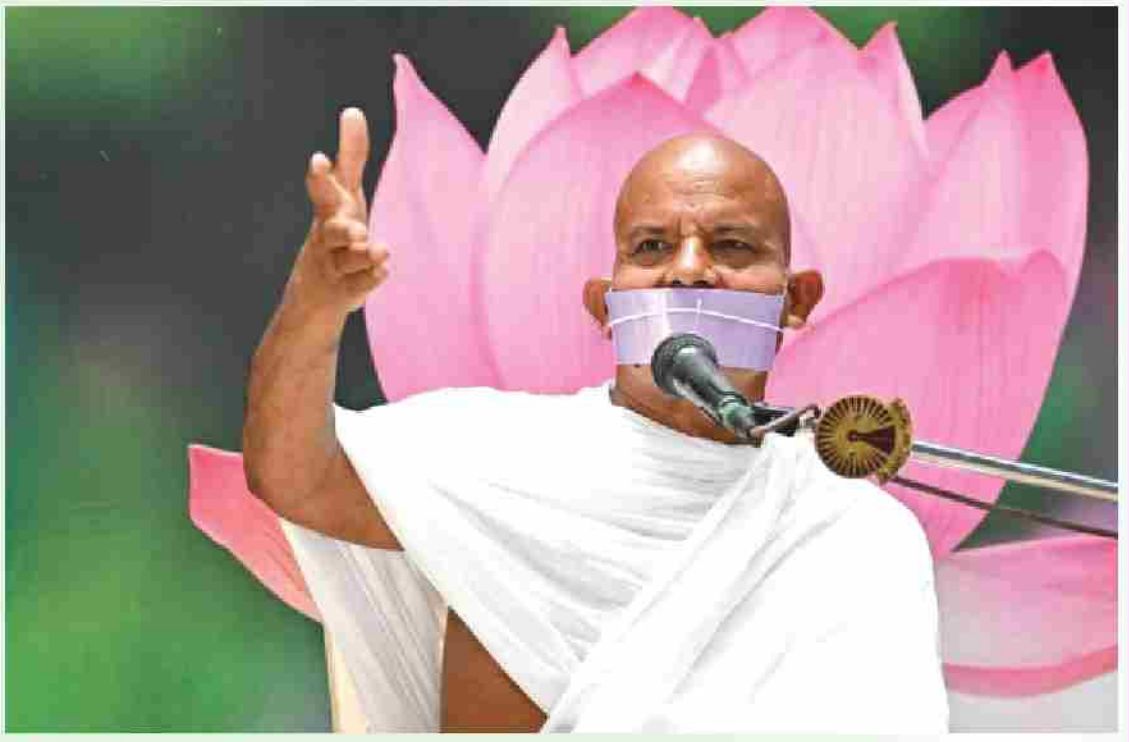

कंडारी, वड़ोदरा १० अप्रैल, २०२३

अध्यात्म जगत के महासूर्य आचार्यश्री महाश्रमण जी अणुव्रत यात्रा के साथ प्रातः कंडारी पधारे। आचार्यश्री ने पावन प्रेरणा पाथेय प्रदान करते हुए फरमाया कि शास्त्रों में मोक्ष की बात आती है और मानव जीवन का लक्ष्य क्या होना चाहिए, इस विषय में भी मैं यह बताना चाहूँगा कि मानव जीवन का परम लक्ष्य मोक्ष प्राप्ति की साधना होना चाहिए।

जीवन में भौतिक सुविधाओं के संसाधन मिल गए पर कोई बड़ी बात नहीं। जीवन है कितना आखिर तो मृत्यु है। मृत्यु के बाद जन्म होता है। जैसे कर्म प्राणी करता है, वैसे फल भी उसे भोगने पड़ते हैं। स्थायी सुख तो मोक्ष में ही मिल सकेगा, इसके लिए कुछ साधना करें तो हमारा मानव जीवन सफल सिद्ध हो सकता है।

भारत के पास प्राचीन ग्रंथों की ज्ञान संपदा है। संत भी विचरण करते हैं। धर्मों के भी विभिन्न पंथ हैं। मोक्ष की साधना में बाधाएँ भी हैं। जो आदमी चंड, क्रोधशील होता है, यह मोक्ष में बाधक है। गुस्सा ज्ञानार्जन में भी बाधक है। गुस्सा अनेक दृष्टियों से आदमी का शत्रु हो सकता है। मन में शांति रहे।

अहंकार भी बाधा है। जिंदगी में ज्ञान, पैसे और सत्ता का घमंड नहीं करना चाहिए। अभिमान तो सुरापान के समान है। निंदा करना, चुगली करना, अनुशासन व विनय को नहीं समझना, संविभाग करना भी बाधक है। विद्यार्थियों में ज्ञान के साथ अच्छे संस्कारों का विकास हो। संस्कार युक्त ज्ञान परिपूर्णता है। यह एक प्रसंग से समझाया कि परमात्मा सब जगह देखते हैं।

जीवन विज्ञान से अच्छे संस्कार आ सकते हैं। भावनात्मक विकास हो सकता है। अध्यात्म-योग के प्रयोगों द्वारा हम सबमें अच्छे भाव रहें तो आत्मा शुद्ध रह सकती है। साधु-साध्वियाँ अध्यात्म की संपदा हैं। पूज्यप्रवर ने सभी को ध्यान के प्रयोग करवाए। अच्छी बात सामान्यतया कहीं से भी लेने में संकोच न करें।

पूज्यप्रवर ने विद्यार्थियों को सद्भावना, नैतिकता और नशामुक्ति के संकल्पों को समझाकर स्वीकार करवाए।

व्यवस्था समिति द्वारा स्कूल परिवार का सम्मान किया गया। आज का पूज्यप्रवर का प्रवास मानव केंद्र ज्ञान मंदिर स्कूल कंडारी में हुआ।

आगम मनीषी, बहुश्रुत परिषद के संयोजक मुनि महेंद्र कुमार जी की स्मृति सभा

पूज्यप्रवर ने स्मृति सभा की शुरुआत करते हुए मुनि महेंद्र कुमार जी के जीवन परिचय के बारे में संक्षेप में फरमाया। मुनिश्री २० वर्ष की युवावस्था में धर्मसंघ में दीक्षित हुए। वे ज्ञान के क्षेत्र में विकसित थे। अनेक भाषाओं के जानकार व शतावधानी थे। अणुव्रत, प्रेक्षाध्यान, जीवन विज्ञान के प्रचार-प्रसार में वे सक्रिय रहे थे। आगमों के संपादन में वे सहयोगी रहे और उनका साहित्यिक अवदान रहा है।

पूज्यप्रवर ने मुनिश्री के कालधर्म को प्राप्त होने पर ७ अप्रैल को जो संदेश दिया था उसका पुनः वाचन करवाया। पूज्यप्रवर ने फरमाया कि अनेक व्यक्तित्व विशेष योगदान देने वाले होते हैं। मुनि महेंद्र कुमार जी हमारे धर्मसंघ के उच्च कोटि के विद्वान संत थे। उनके जाने से एक विशिष्ट संत हमारे धर्मसंघ से चले गए। वे बहुत ज्ञानी संत थे। हमारे मुंबई पहुँचने से पहले ही उनका महाप्रयाण हो गया है। शासन एवं शासनपति के प्रति भक्ति के भाव थे। उनकी स्मृति में मध्यस्थ भावना से चार लोगस्स का ध्यान करवाया।

श्रद्धांजलि समर्पण के स्वर में मुख्य मुनि महावीर कुमारजी, साध्वीप्रमुखाश्री विश्रुतविभाजी, साध्वीवर्या सम्बुद्धयशाजी, मुनि धर्मरुचिजी, मुनि योगेश कुमारजी, मुनि कुमार श्रमणजी, मुनि अक्षय प्रकाशजी, मुनि मनन कुमारजी ने अपनी भावपूर्ण श्रद्धांजलि अर्पित की।

कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेश कुमार जी ने किया।

अक्षय तृतीया

वैशाख शुक्ला - ३ (२३ अप्रैल, २०२३)

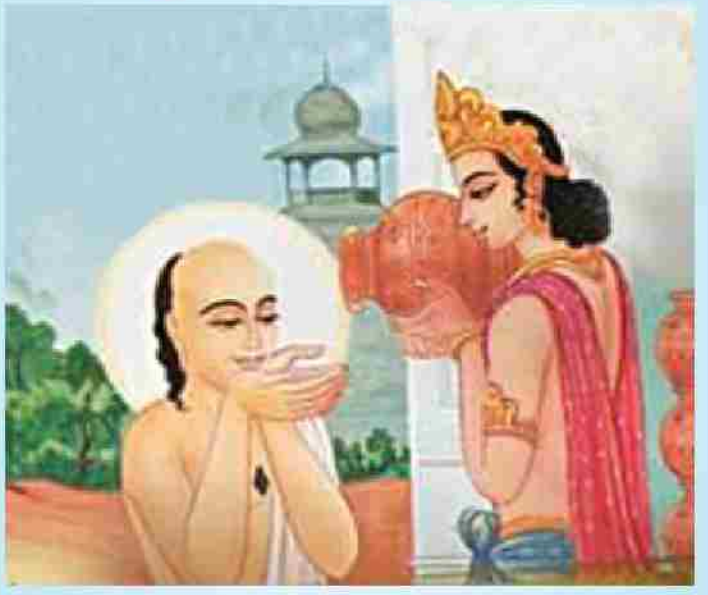

जैन धर्म के प्रथम तीर्थंकर भगवान ऋषभ के चरणों में श्रद्धासिक्त नमन

– : तेरापंथ टाइम्स परिवार : –

मानव जीवन रूपी अनमोल पूंजी व्यर्थ न गंवाएँ : आचार्यश्री महाश्रमण

बड़ोदरा, ८ अप्रैल, २०२३

महातपस्वी आचार्यश्री महाश्रमण जी प्रातः लगभग १४ किलोमीटर का विहार कर बडोदरा के उत्तरी भाग से दक्षिण भाग में पधारे। पावन प्रेरणा पाथेय प्रदान करते हुए महामनीषी ने फरमाया कि हम सब मनुष्य गति में हैं। चार गतियाँ बताई गई हैं–नरक, तिर्यंच, मनुष्य और देवगति। इन चार गतियों में सभी सांसारिक जीवों का समावेश हो जाता है। शेष जीव जो बचते हैं, वो सिद्ध होते हैं। वे जन्म-मरण की परंपरा से मुक्त हो गए हैं।

मनुष्य मरकर वापस चारों गति में जन्म ले सकता है तो कोई-कोई मोक्ष में भी जा सकता है। हमें मनुष्य जन्मरूपी महत्त्वपूर्ण पूँजी प्राप्त है। इस पूँजी को कोई व्यर्थ गँवा सकता है, तो कोई मूल को सुरक्षित रख सकता है, कोई-कोई तो इसे और अधिक बढ़ा सकता है।

(शेष पृष्ठ २ पर)

PDF Compressor Free Version

अखिल भारतीय
तेरापंथ टाइम्स
17 - 23 अप्रैल, 2023

✦ *जितना-जितना राग और भोग बढ़ेगा, उतना-उतना दुःख भी बढ़ेगा। जितना-जितना वैराग्य और त्याग बढ़ेगा, उतना-उतना आत्मिक सुख का अनुभव होगा।*

—आचार्यश्री महाश्रमण

मन, वचन व काया की शुद्धि के लिए करें ध्यान : आचार्यश्री महाश्रमण

बड़ोदरा, ७ अप्रैल, २०२३

जिनशासन प्रभावक आचार्यश्री महाश्रमण जी प्रातः धवल सेना के साथ लगभग ११ किलोमीटर का विहार कर बडोदरा नगर में पधारे। परम पावन ने मंगल प्रेरणा प्रदान करते हुए फरमाया कि ध्यान अध्यात्म जगत का एक प्रयोग है। विभिन्न ध्यान पद्धतियाँ दुनिया में चल रही हैं। अनेक लोग ध्यान शिविरों में भाग लेते हैं। व्यक्तिगत रूप में लोग ध्यान करते हैं।

हमारे यहाँ प्रेक्षाध्यान के नाम से ध्यान पद्धति प्रचलित है। परमपूज्य आचार्यश्री महाप्रज्ञ जी इस प्रेक्षाध्यान का संवर्धन करने वाले, गुरुदेव तुलसी की सन्निधि में इसे आगे बढ़ाने वाले एवं स्वयं ध्यान शिविरों का संचालन करने वाले व्यक्तित्व थे। ध्यान एक साधना का प्रयोग है।

जैन दर्शन में ध्यान के चार प्रकार बताए गए हैं—आर्तध्यान, रौद्रध्यान, धर्मध्यान और शुक्लध्यान। ध्यान यानी चिंतन करना। एक आलंबन पर मन को केंद्रित कर देना अथवा मन, वचन, काया का निरोध करना ध्यान हो जाता है। मन की चंचलता को कम कर देने का एक प्रयोग ध्यान बन सकता है। मन तो हमारा हर समय चलता रहता है। मन का स्वभाव है—चंचलता। पर चंचलता को कम करने का प्रयास हो।

जैसे हवा को रोकना दुष्कर है, वैसे ही मन की चंचलता को रोकना दुष्कर कार्य है। पर अभ्यास और वैराग्य के द्वारा इस मन को निग्रहीत किया जा सकता है। ध्यान में एकाग्रता शक्ति का काम करती है। एकाग्रता दो प्रकार की होती है—शुभ और अशुभ एकाग्रता। आर्त और रौद्र अशुभ ध्यान है। धर्म और शुक्ल शुभ ध्यान है।

सामायिक साधना का एक अच्छा प्रयोग है। सामायिक में असत् बातें न हों। जप-स्वाध्याय, ध्यान का प्रयोग हो। मन की चंचलता को कम करने का प्रयास हो। ज्ञानशाला के बच्चे हैं, इनमें भी ज्ञान और संस्कारों का अच्छा विकास हो। पूज्यप्रवर ने ध्यान का प्रयोग भी करवाया।

आज बड़ोदा आए हैं। बड़ोदा में भी अच्छी धर्म जागरणा, सद्भावना, नैतिकता, नशामुक्ति के संस्कार जनता में रहें। खूब धार्मिक-आध्यात्मिक विकास होता रहे।

आचार्यप्रवर ने फरमाया कि बहुश्रुत परिषद के संयोजक मुनि महेंद्र कुमार जी का कल दोपहर लगभग ३:२३ पर मुंबई में देवलोकगमन हो गया था। वे आगम मनीषी अलंकरण से विभूषित थे। आगम संपादन में उनकी अच्छी भूमिका रही। मुनिश्री ने प्रेक्षाध्यान को भी आगे बढ़ाने में विशेष कार्य किया था। उनकी आत्मा के प्रति मंगलकामना।

पूज्यप्रवर के स्वागत में स्थानीय सभाध्यक्ष हस्तीमल मेहता, किशोर मंडल एवं तेयुप द्वारा समूह गीत प्रस्तुत किया गया। तेमम अध्यक्षा गीता श्रीमाल, अणुव्रत समिति से संतोष सिंघवी, टीपीएफ से अजय सुराणा, कन्या मंडल, तेयुप से पंकज बोलिया आदि गणमान्यजन उपस्थित रहे। ज्ञानशाला ज्ञानार्थियों ने अपनी भावना अभिव्यक्त की।

बड़ोदरा श्रावक समाज ने गीत प्रस्तुत किया। भाजपा बड़ोदरा अध्यक्ष विजयभाई शाह का व्यवस्था समिति द्वारा साहित्य से सम्मान किया गया।

साध्वीप्रमुखाश्री विश्रुतविभा जी ने कहा कि पूज्यप्रवर ने प्रलंब अहिंसा यात्रा की और अब अणुव्रत यात्रा करवा रहे हैं। देशाटन-यात्राओं से पूज्यप्रवर लोक-कल्याण का कार्य करवा रहे हैं। सद्भावना से अनेक लोग आप से जुड़े हैं। अनेक धर्म और संप्रदाय के लोग आपसे मिलने आते हैं। अहमदाबाद यात्रा में तो राज्यपाल महोदय दो बार आपकी सन्निधि में पधारे थे। आपका आभामंडल शक्तिशाली है।

कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेश कुमार जी ने किया।

मानव जीवन रूपी अनमोल पूंजी...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

जीवन में अगर शिक्षा नहीं ग्रहण की तो एक कमी रह सकती है। वह माता शत्रु और पिता दुश्मन है, जो अपने बच्चे को शिक्षा नहीं दे पाता है और अच्छे संस्कार देने का प्रयास नहीं करता है। हमारे जीवन में भाग्य भी अपना काम करता है। बिना भाग्य के कई बार विशेष मिलना मुश्किल है। भाग्य होने पर पग-पग पर निदान होता है।

धर्म की दृष्टि से तीर्थंकर हमारे पिता के समान हैं। उनसे हमें जो मिला है, उसका अच्छा उपयोग करें। मनुष्य गति हमारी मूल पूँजी है। बुरे काम करने वाले नरक या तिर्यंच गति में पैदा होते हैं। मनुष्य गति में हम धर्म कर संवर व निर्जरा को प्राप्त करें।

हमारी अणुव्रत यात्रा चल रही है, इसमें हम सद्भावना, नैतिकता, नशामुक्ति का प्रचार कर रहे हैं। कार्यकर्ता जो अणुव्रत से संबंधित हैं, वे भी जगह-जगह लोगों को समझाने का प्रयास कर रहे हैं। जीवन में अच्छे संस्कार हों। धर्म की दिशा में और आगे बढ़ने का प्रयास करें। प्रेक्षाध्यान, जीवन विज्ञान व ज्ञानशाला के माध्यम से भी अच्छे संस्कार आ सकते हैं। ये सब लोक-कल्याणकारी है। आध्यात्मिक उन्नयन करने का प्रयास करें।

स्कूल के विद्यार्थी वेद पटेल ने पूज्यप्रवर के दर्शन किए। बड़ोदरा म्यूनिसिपल के चेयरमैन डॉ० हितेंद्र भाई ने पूज्यप्रवर के दर्शन कर अपनी भावना अभिव्यक्त की। व्यवस्था समिति द्वारा हितेंद्र भाई का सम्मान किया गया।

कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेश कुमार जी ने किया।

संदेश

ज्ञानी संत का महाप्रयाण

बहुश्रुत परिषद् संयोजक मुनिश्री महेंद्र कुमारजी स्वामी का आज ६ अप्रैल को अपराह्न में महाप्रयाण हो गया। हमारे धर्मसंघ का एक विद्वद्वरेण्य व्यक्तित्व विदा हो गया। वे 'आगम मनीषी' अलंकरण से विभूषित थे और इस अलंकरण के अनुरूप उनका कर्तृत्व भी सामने आ रहा था। जैन आगम—भाष्य लेखन आदि कार्य में उनकी अच्छी भूमिका रही थी।

परम पूज्य आचार्यश्री तुलसी द्वारा दीक्षित मुनिश्री महेंद्र कुमारजी स्वामी संस्कृत, हिंदी, अंग्रेजी, गुजराती आदि अनेक भाषाओं के वेत्ता थे।

'प्रेक्षाप्राध्यापक' के रूप में प्रतिष्ठापित मुनिश्री महेंद्र कुमार जी स्वामी की प्रेक्षाध्यान जगत को अनेक रूपों में सेवाएँ प्राप्त हुईं। योगक्षेम वर्ष की पृष्ठभूमि के निर्माण और प्रशिक्षण में भी उनकी अच्छी सेवा रही थी। जैन विश्व भारती और जैन विश्व भारती इंस्टीट्यूट, लाडनूं के विकास में मुनिश्री का अच्छा योगदान रहा था। अवधान विद्या में भी वे निपुण थे। उनकी ज्ञानात्मक श्रमनिष्ठा तथा शासन और शासनपति के प्रति भक्ति स्तुत्य थी। उनकी अपनी अध्यात्म साधना भी विशिष्ट प्रतीत हुई। परम पूज्य आचार्यश्री तुलसी और परम पूज्य आचार्यश्री महाप्रज्ञजी के वे कृपापात्र रहे थे।

मुनिश्री महेंद्र कुमारजी स्वामी के सहवर्ती मुनि अजित कुमारजी, मुनि जम्बूकुमारजी 'मिंजूर', मुनि अभिजीत कुमारजी, मुनि जागृतकुमारजी और मुनि सिद्धकुमारजी खूब मनोबल रखें, खूब चित्त समाधि में रहें। सहवर्ती संतों को मुनिश्री की सन्निधि, सेवा और उनसे शिक्षण प्राप्त करने का अवसर प्राप्त हुआ। पाँचों संत खूब धर्मसंघ की सेवा करते रहें और अपना विकास करते रहें।

मुनिश्री महेंद्र कुमारजी स्वामी का मुंबई में लंबा प्रवास हुआ। मुंबई समाज को भी उनकी सेवा का अवसर मिला।

मैं आध्यात्मिक मंगलकामना करता हूँ कि कालधर्म प्राप्त मुनिश्री की आत्मा शीघ्र मोक्षश्री का वरण करे।

दक्षरथ, गुजरात — आचार्य महाश्रमण

भवसागर से तरने के लिए करें धर्म की साधना : आचार्यश्री महाश्रमण

मोगर, आणंद (गुजरात) ४ अप्रैल, २०२३

जिन शासन प्रभावक आचार्यश्री महाश्रमण जी प्रातः लगभग १४ किलोमीटर का विहार कर अपनी धवल सेना के साथ मोगर के एच०एस० महिदा हाई स्कूल में पधारे। मंगल देशना प्रदान करते हुए महामनीषी ने फरमाया कि शास्त्र में शरीर को नौका कहा गया है। हमारे धर्मशास्त्रों में बहुत आध्यात्मिक ज्ञान प्राप्त होता है। सुखी जीवन जीने के सूत्र प्राप्त होते हैं। सृष्टि व तत्त्व के बारे में भी शास्त्रों में बातें मिलती हैं।

संसार अरणव में जन्म-मरण का चक्र चल रहा है। कई जीव अनंत काल से संसार सागर में भ्रमण कर रहे हैं, तो कई जीवों का भ्रमण पार भी आ सकता है। इस संसार को तरने के लिए शरीर रूपी नौका उपयोग करो। मानव शरीर से उच्च कोटि की अध्यात्म साधना की जा सकती है। शरीर का उपयोग संयम-संवर की साधना और तप में करें।

धर्म की साधना के लिए शरीर एक साधन है। जब तक शरीर सक्षम है, तब तक साधना कर लो। बुढ़ापा और बीमारी अक्षमता के कारण है। इंद्रिय शक्ति कमजोर पड़ने से भी अक्षमता आ सकती है। इन तीनों स्थितियों में धर्म की साधना संभव नहीं है। हम संसार रूपी समुद्र को तैरना सीख लें। धर्म के द्वारा व सम्यक् दर्शन, ज्ञान और चारित्र द्वारा संसार सागर को तरा जा सकता है। शरीर नाव है, जीव नाविक है और संसार अरणव है। इसको महर्षि लोग तर जाते हैं।

आज यहाँ मोगर के विद्या संस्थान में आए हैं। यहाँ अनेक विषय पढ़ाए जाते हैं, इसके साथ में अच्छे संस्कार भी विद्यार्थियों में पुष्ट हों। विद्यालय का उन्नयन होता रहे।

पूज्यप्रवर के स्वागत में विद्यालय परिवार से जसवंत सिंह सोलंकी ने अपनी भावना अभिव्यक्त की। व्यवस्था समिति व अणुविभा द्वारा विद्यालय परिवार का सम्मान किया गया।

कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेश कुमार जी ने किया।

PDF Compressor Free Version

अक्षय तृतीया पर विशेष

भगवान ऋषभ के पारणे से जुड़ा है - अक्षय तृतीया पर्व

❐ मुनि कमल कुमार ❐

संसार में विभिन्न प्रकार के पर्व मनाए जाते हैं। हर पर्व का अपना इतिहास है। हमें गौरव की अनुभूति होती है कि जैन धर्म में भी कई पर्व मनाए जाते हैं। उनमें एक पर्व है—अक्षय तृतीया। इस दिन आदिनाथ भगवान ने तेरह महीने दस दिन की चौविहार तपस्या का पारणा अपने प्रपौत्र श्रेयांस कुमार के हाथों से शुद्ध प्रासुक इक्षु रस से किया। तब से ही वैसाख शुक्ला तृतीया को शुभ माना जाने लगा। इस दिन राजस्थान में विवाह, गृह प्रवेश, संस्थानों का शुभारंभ आदि मांगलिक कार्य बहुत शुभ माने जाते हैं। घर-घर में इक्षुरस के अभाव में इमली का पानक और खीचड़ा बनाते हैं, घरों में पानी के लिए नए घड़े डाले जाते हैं, बच्चे युवक ही नहीं प्रौढ़ और वृद्ध भी पतंग उड़ाते हुए नजर आते हैं। वहीं भगवान के तप का आंशिक अनुसरण ही कहा जा सकता है कि भगवान आदिनाथ दीक्षा कल्याणक अथवा चैत्र कृष्ण अष्टमी से एक दिन छोड़कर एक दिन का उपवास करने वाले पारणा अर्थात् तप की संपूर्ति करते हैं। भगवान ने तो चैत्र कृष्ण अष्टमी से लेकर वैसाख शुक्ला द्वितीया तक पानी तक ग्रहण नहीं किया। वे अनंत बली थे परंतु वर्तमान में एक दिन छोड़कर एक दिन भी चौविहार तप करने वाले कम नजर आते हैं। अक्सर लोग उपवास भी चौविहार कम कर पाते हैं। इसलिए इसे आंशिक अनुसरण कहना अनुपयुक्त नहीं लगता। वर्तमान युग भौतिक युग कहलाता है। दिन में दो-तीन बार खाने वाले लोग ज्यादा बढ़ते जा रहे हैं। कई इससे भी ज्यादा बार खाते-पीते रहते हैं। इसलिए वर्तमान में नाना प्रकार की बीमारियाँ बढ़ती जा रही हैं। आजकल हम देखते हैं कि इतने डॉक्टर और चिकित्सालय बढ़ते जा रहे हैं फिर भी कई घंटे नहीं कई-कई दिन पहले डॉक्टरों से समय लेना पड़ता है तब कहीं जाकर रोग का सम्यक् उपचार हो पाता है। जो भाई-बहन तपस्या के साथ जप, ध्यान और कायोत्सर्ग के साथ सामायिक-स्वाध्याय का क्रम बना लेते हैं वे वर्तमान युग में हर तरह से स्वस्थ मस्त नजर आते हैं। परंतु जो केवल खाने-पीने में ही लगे रहते हैं, वे नाना प्रकार की व्याधियों से ग्रस्त नजर आते हैं। स्वस्थ जीवन के लिए तपस्या आध्यात्मिक औषध है, जिससे तन-मन के विकार समाप्त हो जाते हैं। जो तपस्या में जप, ध्यान, मौन एवं स्वाध्याय का आलंबन नहीं लेते वे आभ्यंतर तप का आनंद नहीं ले सकते। तीर्थंकरों के जो केवल्य ज्ञान होता है, उसमें ध्यान का बहुत बड़ा आलंबन होता है। ध्यान से व्यक्ति एकाग्रचित्त हो जाता है। चित्त की एकाग्रता व्यक्तित्व विकास का बहुत बड़ा साधन है। इन वर्षों में जगह-जगह ध्यान का स्वर सुनाई दे रहा है। वर्तमान की सरकार भी ध्यान और योग के कार्यक्रम को बढ़ावा दे रही हैं। यह सब शुभ भविष्य का ही सूचक है। हमारे जितने भी तीर्थंकर हुए हैं उन्होंने ध्यान और योग से अपने आपको भावित किया था इसलिए वे आत्मस्थ, स्वस्थ और सदा मस्त रहें। जो व्यक्ति आत्मस्थ बन जाता है वह सब प्रकार के भयों से, रोगों से एवं तनावों से मुक्त हो जाता है।

अक्षय तृतीया हमारे लिए भाग्योदय का सूचक बनें। इस वर्ष अक्षय तृतीया का भव्य कार्यक्रम गुजरात के प्रसिद्ध शहर सूरत में महातपस्वी शांतिदूत आचार्यश्री महाश्रमण जी के पावन सान्निध्य में आयोजित होने जा रहा है और सुनने में आया है कि लगभग ११०० व्यक्तियों के वर्षीतप का पारणा श्रीचरणों में होने वाला है। यह वर्ष पूज्य गुरुदेव के ५०वें दीक्षा दिवस के रूप में आ रहा है। हमें अपनी शक्ति के अनुसार वर्षीतप नहीं हो सके तो बारह महीने रात्रि भोजन का त्याग करके मनाना चाहिए। ताकि हम भगवान आदिनाथ और वर्तमान के तीर्थंकर कहूँ तो भी अतिशयोक्ति नहीं होगी, जिन्होंने अपने सुश्रम और सुचिंतन से जन-जन को जीने की कला सिखाई। ऐसे पूज्यप्रवर आचार्यश्री महाश्रमण जी जिन्हें शत-शत बार नमन कर अपनी श्रद्धा समर्पित करता हूँ। हमें दीर्घकाल तक पूज्यप्रवर का मार्गदर्शन मिलता रहे, जिससे हम भी आत्म-कल्याण के साथ जन-कल्याण और संघ प्रभावना में अपने आपको नियोजित करते रहें।

दिल्ली स्तरीय स्वागत कार्यक्रम

पूज्यप्रवर के श्रीचरणों में तप-जप की भेंट चढ़ाना है

दिल्ली।

साध्वी अणिमाश्री जी का प्रथम बार दिल्ली पदार्पण पर श्री जैन श्वेतांबर तेरापंथी सभा, दिल्ली द्वारा 'दिल्ली स्तरीय स्वागत कार्यक्रम' आयोजित हुआ। भव्य एवं गरिमामय उपस्थिति में न्यू फ्रेंड्स कॉलोनी के माता मंदिर में संघ प्रभावक कार्यक्रम आयोजित हुआ। जिसमें समाजसेवी के०एल० जैन, मुख्य अतिथि एवं प्रतिभाधारी श्रावक धनराज बैद, मुख्य वक्ता के रूप में उपस्थित थे। दिल्ली की समस्त सभा-संस्थाओं एवं क्षेत्रीय सभा-संस्थाओं के पदाधिकारियों की उपस्थिति रही।

साध्वी अणिमाश्री जी ने कहा कि संतों का स्वागत त्याग की चेतना का स्वागत है। अध्यात्म के आनंद व उल्लास का स्वागत है। भारतीय संस्कृति को अनवरत सिंचन देने वाली ऋषि परंपरा का स्वागत है। माता मंदिर के पवित्र प्रांगण में हमारे स्वागत का कार्यक्रम दिल्ली सभा ने आयोजित किया है। मुझे ऐसा महसूस हो रहा है कि यह स्वागत आचार्य भिक्षु की मर्यादा और अनुशासन का है। यह स्वागत पूज्य गुरुदेव की कृपामय दृष्टि का है। पूज्यप्रवर ने हमें दिल्ली भेजा है। इस वर्ष पूज्यप्रवर का दीक्षा कल्याणक महोत्सव वर्ष है। प्रभु को तप-जप और व्रत की भेंट चढ़ानी है। दिल्ली शहर में प्रभु मंत्र का ग्यारह करोड़ का तप के साथ जप करना है। पचरंगी तप करके प्रभु चरणों में तप का अर्घ्य चढ़ाएँ। बारह-व्रती श्रावक बनकर प्रभु को व्रतों का उपहार दें। त्यागी संतों का सच्चा स्वागत त्याग से ही हो सकता है। त्याग की चेतना और संकल्प की चेतना को जगाने के लिए ही संतों का आगमन होता है।

साध्वी कर्णिकाश्री जी ने कहा कि संत पाप, ताप व संताप का हरण कर जीवन को अध्यात्म के शृंगार से शृंगारित करने आते हैं।

डॉ० साध्वी सुधाप्रभा जी ने कहा कि साध्वी अणिमाश्री जी अमृत के महासागर आचार्यश्री महाश्रमण जी से अमृत लेकर अध्यात्म का अमृतपान करते आई हूँ।

साध्वी मैत्रीप्रभा जी ने कहा कि गुरुकृपा से जो गंगा आई है, उसका पूरा लाभ लें। साध्वी कर्णिकाश्री जी, साध्वी डॉ० सुधाप्रभा जी, साध्वी समत्वयशा जी, साध्वी मैत्रीप्रभा जी ने गीत का संगान किया।

नगर निगम के पार्षद राजपाल सिंह ने साध्वीवृंद का स्वागत किया। सभाध्यक्ष सुखराज सेठिया, समाजसेवी पूर्व सभाध्यक्ष के०एल० पटावरी, धनराज बैद, शाहदरा सभा अध्यक्ष पन्नालाल बैद, फरीदाबाद सभा मंत्री संजीव बैद, अणुव्रत समिति के अध्यक्ष शांतिलाल पटावरी, अणुव्रत न्यास के अध्यक्ष के०सी० जैन, तेयुप अध्यक्ष विकास जैन, दक्षिण दिल्ली सभाध्यक्ष हीरालाल गेलड़ा, टीपीएफ अध्यक्ष राजेश कुमार जैन, कल्पना सेठिया, महिला मंडल अध्यक्षा मंजु जैन ने भावाभिव्यक्ति दी। संचालन सभा के मंत्री प्रमोद धोड़ावत ने किया। महिला मंडल ने मंगल संगान व स्वागत गीत प्रस्तुत किया।

आगम मनीषी बहुश्रुत परिषद के संयोजक मुनि महेंद्रकुमारजी का देवलोकगमन संपूर्ण जैन समाज की क्षति है

दिल्ली।

आगम मनीषी मुनि महेंद्रकुमारजी एक विरल, विशिष्ट और आध्यात्मिक वैज्ञानिक व्यक्तित्व के धनी थे। उनके देवलोकगमन से संपूर्ण जैन समाज में रिक्तता का बोध हो रहा है। इस आशय के उद्गार उग्रविहारी तपोमूर्ति मुनि कमल कुमारजी ने मुनि महेंद्रकुमारजी की स्मृति में अणुव्रत भवन में आयोजित गुणानुवाद सभा में व्यक्त किए।

मुनिश्री विशेष रूप से लगभग १६ किलोमीटर का विहार कर अणुव्रत भवन पधारे और वापस विहार किया। शासनश्री साध्वी संघमित्राजी ने दिल्ली में वर्ष १९८५ में उनके अणुव्रत भवन के चातुर्मास के संस्मरण सुनाए। ज्ञातव्य है कि वर्ष १९८५ में ही दिल्ली के सुराणा स्मृति भवन, सदर बाजार में साध्वीश्री का चातुर्मास था। शासनश्री साध्वी शीलप्रभाजी ने उनको ज्ञानवान के साथ-साथ एक अच्छा शिक्षक भी बताया। उन्होंने कविता के माध्यम से मुनि महेंद्र कुमारजी के प्रति भावांजलि अर्पित की। दिल्ली में सर्वाधिक अठारह चातुर्मास करने वाले मुनिश्री का दिल्ली में जैन-जैनेत्तर विद्वज्जनों, शीर्ष राजनेताओं, साहित्यकारों जैन समाज के शीर्ष नेताओं से निरंतर वार्तालाप, विचार-विनिमय व कार्यक्रमों की आयोजना होती रहती थी।

इस अवसर पर राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के उत्तर भारतीय संघ चालक बजरंग लाल गुप्ता ने मुनिश्री के साथ समय-समय पर होने वाली सार्थक चर्चाओं को याद किया। उन्होंने कहा कि हाल ही में मुंबई जाकर मुनिश्री के दर्शन करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। समाजभूषण मांगीलाल सेठिया, जैन महासभा के अध्यक्ष दिनेश भाई डोसी, सुप्रसिद्ध पत्रकार स्वदेश भूषण जैन, मूर्तिपूजक समाज के ललित नाहटा, कल्याण परिषद के संयोजक व अणुव्रत न्यास के प्रबंध न्यासी के०सी० जैन, महासभा के उपाध्यक्ष संजय खटेड़ आदि ने भावांजलि अर्पित की। दिल्ली सभा के अध्यक्ष सुखराज सेठिया ने दिल्ली समाज के विकास में मुनि महेंद्रकुमारजी के योगदान की चर्चा की। दिल्ली में विराजित शासनश्री साध्वी रतनश्री जी, शासनश्री साध्वी रविप्रभाजी, साध्वी अणिमाश्रीजी व साध्वी डॉ० कुंदनरेखाजी के संदेशों का वाचन हुआ। सभा के पूर्वाध्यक्ष अणुव्रत भवन के प्रभारी न्यासी शांति कुमार जैन, महिला मंडल अध्यक्षा मंजु जैन, तेयुप अध्यक्ष विकास सुराणा, टीपीएफ अध्यक्ष राजेश गेलड़ा, वरिष्ठ प्रेक्षा प्रशिक्षक रमेश कांडपाल आदि ने मुनि महेंद्रकुमार जी के जीवन दर्शन पर भाव प्रकट किए। संयोजन सभा के महामंत्री प्रमोद धोड़ावत ने करते हुए मुनिश्री का जीवन परिचय प्रस्तुत किया।

उत्सव रिश्तों का प्रेम ननद-भाभी का

भीलवाड़ा।

अभातेममं के निर्देशन में तेममं द्वारा तेरापंथ भवन नागौरी गार्डन में उत्सव रिश्तों का प्रेम ननद-भाभी का कार्यशाला आयोजित हुई। तेममं की बहनों ने प्रेरणा गीत से कार्यशाला का आगाज किया। तेममं अध्यक्ष मीना बाबेल ने सभी का स्वागत अभिनंदन किया। यह प्रतियोगिता तीन राउंड में आयोजित हुई।

पहले राउंड में ननद-भाभी की जोड़ियों ने अपना परिचय प्रस्तुत किया। तत्पश्चात संयोजक बहनों ने ज्ञानवर्धक दिमागी कसरत एवं जैन धर्म से संबंधित सरल प्रश्न प्रतिभागी जोड़ियों से पूछे। तीसरा राउंड जिसमें प्रतिभागियों ने अपनी प्रतिभा दिखाते हुए ननद-भाभी के रिश्तों की मिठास को हास्य-लघु संवाद, चुटकुले, कविता आदि के माध्यम से अभिव्यक्त किया। जज की भूमिका नगर माहेश्वरी महिला मंडल की उपाध्यक्ष शशि अजमेरा एवं थेली सीमिया रिलीफ सोसायटी के अध्यक्ष एकता ओस्तवाल ने निभाई। प्रथम ननद-भाभी की जोड़ी सपना दुगड़, रानू रांका, द्वितीय ललिता बाफना, मैना कांठेड़ एवं तृतीय श्वेता जैन, सुरभि टोडरवाल रहीं। जज ने सभी प्रतिभागियों की प्रशंसा करते हुए मंडल के इन रिश्तों को संवारते कार्यक्रम की सराहना की। सरप्राईज आकर्षण पुरस्कार दर्शकों को सवाल के जवाब देने पर दिए गए। मीडिया प्रभारी नीलम लोढ़ा ने बताया कि लगभग ११ ननद-भाभी की जोड़ियाँ इसमें प्रतिभागी रहीं। विजेता जोड़ियों एवं अन्य जोड़ियों को उपहार सर्टिफिकेट देकर कार्यकारिणी टीम द्वारा सम्मानित किया गया। जज को साहित्य देकर सम्मानित किया गया। विनीता सुतरिया, पुष्पा पामेचा, सरोज मेहता, विनीता लोढ़ा ने अपना सहयोग प्रदान किया। मंत्री रेणु चोरड़िया ने आभार व्यक्त किया।

PDF Compressor Free Version

अखिल भारतीय
तेरापंथ टाइम्स
17 - 23 अप्रैल, 2023

✦ *यदि व्यक्ति के जीवन में साधना का बल है तो व्याधि के रहने पर भी वह अपनी समाधि को नहीं खोता।*
—आचार्यश्री महाश्रमण

महिला मंडल के विविध आयोजन

तालमेल वर्क एंड होम कार्यक्रम का आयोजन

अररिया कोर्ट।

अभातेममं के निर्देशानुसार तेममं, अररिया कोर्ट के तत्त्वावधान में अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस एवं तालमेल वर्क एंड होम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ नमस्कार महामंत्र के सामूहिक संगान से हुआ। तत्पश्चात महिला मंडल की बहनों ने मंगलाचरण किया।

अध्यक्ष ज्योति बोथरा ने अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस की बधाई दी। मुख्य अतिथि नगर थाना प्रभारी मेनका रानी एवं सभी का स्वागत किया। सशक्तिकरण के साथ-साथ हमें अपने नारीयोचित गुणों—विनय, वात्सल्य, विनम्रता, कोमलता, सहनशीलता एवं सामंजस्यता को भी बरकरार रखना है एवं अपने बच्चों में सद्संस्कारों का बीजारोपण करना है।

अभातेममं के निर्देशानुसार जनसाधारण को सुरक्षा प्रदान करने वाली महिलाओं को प्रेरणा सम्मान देने के क्रम में महिला नगर थाना प्रभारी मेनका रानी एवं उनकी सहयोगी विभा एवं निहारिका को सम्मानित किया गया। मेनका रानी ने अपने वक्तव्य में तेममं द्वारा संपादित कार्यों की प्रशंसा की एवं समय-समय पर उन्हें आमंत्रित करने के लिए आभार व्यक्त किया।

मंत्री माला छाजेड़ ने बताया कि हम एक दिन अंतर्राष्ट्रीय दिवस मनाते हैं और भूल जाते हैं। क्या औरतों का सम्मान करने के लिए एक ही दिन काफी है। अगर हम हर दिन महिलाओं का सम्मान करें तो महिला दिवस मनाने की आवश्यकता ही नहीं रहेगी। कार्यक्रम का संचालन कविता बोथरा ने किया एवं संघ गान के द्वारा कार्यक्रम का समापन हुआ।

उर्वी मुखरित दीवारें कार्यक्रम का आयोजन

पचपदरा।

अभातेममं के निर्देशानुसार राष्ट्रीय अध्यक्ष नीलम सेठिया की अध्यक्षता में पचपदरा कन्या मंडल द्वारा बनाई गई 'उर्वी मुखरित दीवारें' का अनावरण किया गया।

जी-२० के अंतर्गत सी-२० में अभातेममं का चयन होने पर अभातेकमं से आए हुए 'उर्वी मुखरित दीवारें' कार्यक्रम के अंतर्गत कन्या मंडल की प्रभारी कीर्ति चोपड़ा, संयोजिका रूपेंदु ढेलड़िया, सह-संयोजिका प्रतीक्षा कांकरिया और सभी कन्याओं ने मिलकर स्वयं अपने हाथों से दीवारों पर कलाकृति बनाई और इस कलाकृति के माध्यम से लोगों में स्वच्छता, ग्रीन इंडिया और वृक्षारोपण का संदेश दिया।

कार्यक्रम में राष्ट्रीय अध्यक्ष नीलम सेठिया, राष्ट्रीय महामंत्री मधु देरासरिया, राष्ट्रीय उपाध्यक्ष सरिता डागा, राष्ट्रीय कन्या मंडल प्रभारी अर्चना भंडारी, राष्ट्रीय कार्यसमिति सदस्य माला कातरेला एवं सारिका वागरेचा की उपस्थिति रही।

आचार्य महाश्रमण कन्या सुरक्षा स्तंभ

पचपदरा।

अभातेममं के निर्देशानुसार तेममं द्वारा निर्मित आचार्य महाश्रमण कन्या सुरक्षा स्तंभ का उद्घाटन अभातेममं की राष्ट्रीय अध्यक्ष नीलम सेठिया, ग्राम पंचायत पचपदरा, सरपंच पूजा राठौड़, उप-सरपंच राकेश चोपड़ा द्वारा किया गया। उद्घाटन से पूर्व तेरापंथ कन्या मंडल और महिला मंडल द्वारा तेरापंथ भवन से आचार्य महाश्रमण कन्या सुरक्षा स्तंभ तक रैली निकाली गई।

इस अवसर पर राष्ट्रीय अध्यक्ष नीलम सेठिया ने कहा कि इस तरह के स्तंभ हमारे देश के ८० शहरों में बने हुए हैं। इस स्तंभ का ध्येय वाक्य 'करनी है जीवन की रक्षा, कन्याओं की करो सुरक्षा' हर आते-जाते राहगीर को यह प्रेरणा देगा कि कन्याओं की सुरक्षा हर हाल में होनी चाहिए।

कार्यक्रम में अभातेममं की राष्ट्रीय उपाध्यक्ष सरिता डागा, राष्ट्रीय महामंत्री मधु देरासरिया, राष्ट्रीय कन्या मंडल प्रभारी, ग्राम पंचायत स्टॉफ आदि अनेक पदाधिकारीगण एवं सदस्यों की उपस्थिति रही। स्तंभ के आर्थिक सहयोगकर्ता फूलचंद शंकरलाल डूंगरचंद, धर्मेन्द्र कुमार, सुरेंद्र कुमार, पंकज कुमार का स्मृति चिह्न और साहित्य द्वारा सम्मान किया गया।

शासनमाता साध्वीप्रमुखाश्री की पुण्यतिथि पर कार्यक्रम

मदुरै।

अभातेममं के निर्देशानुसार तेममं के तत्त्वावधान में शासनमाता साध्वीप्रमुखाश्री कनकप्रभाजी की प्रथम पुण्यतिथि पर कार्यक्रम आयोजित किया गया। नमस्कार महामंत्र से कार्यक्रम की शुरुआत हुई। 'ॐ ह्रीं श्री क्लीं शासनमात्रे नमः' मंत्र का सामूहिक जप किया गया।

महिला मंडल अध्यक्ष नयना पारख ने शासनमाता पर अपने विचार व्यक्त किए। तेरापंथ धर्मसंघ की महिला शक्ति को आगे बढ़ाने में उन्होंने महत्त्वपूर्ण भूमिका अदा की। बबिता गिडिया, बबिता लोढ़ा, मधु पारख ने भी अपने विचार व्यक्त किए। मंत्री दीपिका फूलफगर ने गीतिका के माध्यम से अपने भाव व्यक्त किए। धन्यवाद ज्ञापन सहमंत्री लता कोठारी ने किया।

टर्निंग पॉइंट कार्यशाला का आयोजन

बालोतरा।

अभातेममं के तत्त्वावधान में तेरापंथ कन्या मंडल द्वारा शासनश्री साध्वी सत्यप्रभा जी के सान्निध्य में टर्निंग पॉइंट कार्यशाला का दो सत्रों में आयोजन किया गया। प्रथम सत्र की शुरुआत कन्याओं द्वारा नमस्कार महामंत्र व मंगलाचरण से की गई। उसके बाद अभातेममं कार्यसमिति सदस्य विनीता बैंगानी ने कन्याओं को गेम खिलाए। अभातेममं कार्यसमिति सदस्य सारिका वागरेचा ने कन्याओं को मोटिवेट किया। अंत में राष्ट्रीय कन्या प्रभारी अर्चना भंडारी ने कन्याओं को महिला मंडल व कन्या मंडल के इतिहास के बारे में बताया।

द्वितीय सत्र में सर्वप्रथम कन्याओं द्वारा आपकी अदालत संवाद की प्रस्तुति दी गई। जिसमें करणीय कार्य के टॉप तीन कार्यों को दर्शाया गया था और कन्याओं द्वारा सुंदर प्रस्तुति दी गई। अन्य क्षेत्रीय प्रस्तुति में पचपदरा कन्या मंडल ने भी अपनी प्रस्तुति दी। अभातेममं राष्ट्रीय अध्यक्ष नीलम सेठिया ने भी कन्याओं को टर्निंग पॉइंट विषय पर उद्बोधन दिया।

महामंत्री मधुर देरासरिया ने भी अपने भाव व्यक्त किए। राष्ट्रीय कन्या प्रभारी अर्चना भंडारी ने टर्निंग पॉइंट को कैसे पहचाना जाए और उसे कैसे अपनाया जाए के बारे में बताया। शासनश्री साध्वी सत्यप्रभा जी ने कहा कि बालोतरा कन्या मंडल जागरूकता से अपना कार्य कर रही है। अंत में राष्ट्रीय कन्या प्रभारी अर्चना भंडारी का तेममं अध्यक्ष निर्मला संकलेचा, कन्या मंडल संयोजिका साक्षी वैद मेहता, सह-संयोजिका मनीषा ओस्तवाल द्वारा अभिनंदन पत्र देकर सम्मान किया गया। कार्यशाला में अभातेममं राष्ट्रीय उपाध्यक्ष सरिता डागा, राष्ट्रीय कार्यकारिणी सदस्य माला कातरेला, सारिका वागरेचा, विनीता बैंगानी व बालोतरा, तेममं मंत्री संगीता बोथरा, कन्या मंडल प्रभारी श्वेता सालेचा व सभी क्षेत्र से पधारी हुई कन्याएँ उपस्थित थीं।

महिला मंडल द्वारा कार्यक्रम का आयोजन

जसोल।

अभातेममं के तत्त्वावधान में सोहनी देवी सालेचा की अध्यक्षता में तेममं व कन्या मंडल जसोल द्वारा 'फीड द माइंड' लाइब्रेरी उद्घाटन और 'उर्वी मुखरित दिवारें' का आयोजन किया गया। सामूहिक नमस्कार महामंत्र से कार्यक्रम का शुभारंभ किया गया। दीप प्रज्ज्वलित कर स्कूल के बच्चों ने सरस्वती वंदना की।

तेममं द्वारा स्वागत गीत से मंगलाचरण किया गया। अध्यक्ष सोहनी देवी सालेचा ने सभी राष्ट्रीय पदाधिकारी, उपस्थित अतिथि व महिला मंडल व कन्या मंडल की ओर से स्वागत किया गया। कन्या मंडल संयोजिका कुनिका बगमार व आदर्श विद्या मंदिर के प्रधानाचार्य राजेंद्रपाल सेन ने अपनी अभिव्यक्ति दी।

महिला मंडल मंत्री ममता मेहता ने बहाया किया कार्यक्रम में राष्ट्रीय कार्यकारिणी सदस्य माला कातरेला ने कहा कि पुस्तकें ज्ञान का खजाना होती हैं। राष्ट्रीय महामंत्री मधु देरसरिया ने कहा कि पुस्तकें ज्ञान प्राप्त करने का अच्छा माध्यम है। मंडल सहमंत्री सुमन कोठारी ने आभार ज्ञापित किया। कार्यक्रम का संचालन मंडल उपाध्यक्ष नीतू सालेचा ने किया। इस अवसर पर अनेक पदाधिकारीगण, सदस्य एवं अन्य गणमान्यजनों की उपस्थिति रही।

श्रीउत्सव का आयोजन

ईरोड।

अभातेममं के निर्देशानुसार तेरापंथ महिला मंडल द्वारा श्रीउत्सव एक दिवसीय मेले का आयोजन किया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ मुख्य प्रायोजक मदन मोहन टेक्सटाइल के विनोद करबावाला द्वारा उद्घाटन किया गया। महिला मंडल के मंगलाचरण से कार्यक्रम प्रारंभ किया गया। सभी प्रायोजकों का महिला मंडल द्वारा सम्मान किया गया।

श्रीउत्सव मेले में लगभग ३० स्टॉलों का आयोजन हुआ, जिसमें तिरुपुर, सेलम, मैसूर और चेन्नई आदि द्वारा स्टॉल लगाई गई थी। कार्यक्रम में भाई-बहनों की अच्छी उपस्थिति रही। कार्यक्रम का संचालन मंजुबाई बोथरा व प्रज्ञा सुराणा द्वारा हुआ। आभार ज्ञापन महिला मंडल सचिव पिंकी वैद मूथा ने किया।

सेवा कार्य

टी-दासरहल्ली।

अभातेममं के निर्देशानुसार बैंगलोर तेममं द्वारा सेवा कार्य का आयोजन प्रगत चेरिटेबल ट्रस्ट में किया गया। जहाँ १५० गर्ल्स को भोजन करवाया। अध्यक्ष रेखा मेहर ने सबका स्वागत किया।

उपाध्यक्षा नेहा चावत, मंत्री गीता बाबेल, उपाध्यक्ष दीपिका गांधी, सरोज मारू ने अपने विचार व्यक्त किए। ट्रस्ट के मैनेजर और स्टाफ ने बैंगलोर तेममं की सराहना की। मंत्री गीता बाबेल ने सभी का आभार व्यक्त किया।

हर दिल में हो अध्यात्म का प्रवेश

सिकंदराबाद।

तेरापंथी सभा के तत्त्वावधान में नगर प्रवेश के अवसर पर साध्वी मंगलप्रज्ञा जी का स्वागत समारोह सुराणा भवन मलकपेट में आयोजित किया गया। साध्वीश्री जी ने कहा कि परम प्रसन्नता है कि हम परम पूज्य गुरुदेव द्वारा निर्देशित अपने चातुर्मास क्षेत्र में पहुँच गए हैं।

भगवान महावीर ने धर्म और अध्यात्म में प्रवेश के चार द्वार—क्षमा, मुक्ति, ऋजुता, मृदुता बताए हैं। धर्म के प्रथम द्वार क्षमा की साधना करें। जीवन को शांत सरोवर बनाएँ। कषाय के बंधन से मुक्त रहें।

हम सौभाग्यशाली हैं जिन्हें वीतराग शासन, मर्यादित, अनुशासित, वैक्षव शासन मिला है। वर्तमान में आचार्यश्री महाश्रमण जी का सशक्त सान्निध्य मिला है। गुरु दृष्टि हमारे लिए परम सृष्टि है।

अभिनंदन समारोह में तेरापंथी सभा के अध्यक्ष बाबूलाल बैद ने स्वागत स्वर प्रस्तुत किए। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि एल०बी० नगर के एम०एल०ए० देवी रेड्डी, सुधीर रेड्डी ने कहा कि मुझे यह अवसर भाग्योदय से प्राप्त हुआ है। समय-समय पर मैं आध्यात्मिक सान्निध्य का लाभ उठाता रहूँगा। कन्या मंडल एवं ज्ञानशाला ने प्रस्तुतियाँ दी। साध्वी चैतन्यप्रभा जी, साध्वी शौर्यप्रभा जी ने अपने गीत के द्वारा भाव व्यक्त किए। श्री संघ मलकपेट की ओर से पारस दोसी ने स्वागत किया।

महिला मंडल अध्यक्ष अनिता गिडिया ने विचार व्यक्त किए। सभा के पूर्व अध्यक्ष राजकुमार सुराणा, महिला मंडल, ज्ञानशाला प्रशिक्षिकागण, अणुव्रत समिति अध्यक्ष प्रकाश भंडारी, महासभा की ओर से ललित बैद सहित अनेक पदाधिकारियों ने शुभकामनाएँ प्रेषित की।

साध्वी राजुलप्रभा जी ने कहा कि अब जागरण का समय आ गया है। आगे उठने का समय आ गया है। इस चातुर्मास को अपने पुरुषार्थ से उपलब्धि भरा बनाएँ।

कार्यक्रम के दौरान मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित एल०बी० नंबर के विधायक सुधीर रेड्डी, जैन सेवा संघ के अध्यक्ष योगेश सिंघवी, महामंत्री अशोक मूथा, उपाध्यक्ष सुभाष सिरोहिया, विनोद संचेती एवं अन्य सभी पदाधिकारियों और सदस्यों का स्वागत किया गया। कार्यक्रम से पहले साध्वीवृंद चैतन्यपुरी से विशाल जुलूस के साथ मलकपेट सुराणा भवन पहुँचे। कार्यक्रम का संचालन लक्ष्मीपत बैद और राकेश सुराणा ने किया। आभार ज्ञापन सभा मंत्री सुशीला संचेती ने किया।

PDF Compressor Free Version

अक्षय तृतीया पर विशेष आलेख

मानवीय सभ्यता के युगपुरुष - भगवान ऋषभ

❐ मुनि चैतन्य कुमार 'अमन' ❐

भारतीय जन मानस पर जिन महापुरुषों का मानव जाति पर सर्वाधिक प्रभाव पड़ता है, उनमें आदितीर्थंकर भगवान ऋषभदेव का प्रमुख स्थान कहा जा सकता है। भगवान का व्यक्तित्व और कर्तृत्व का प्रभाव आज भी जन जीवन पर परिलक्षित हो रहा है। जैन, बौद्ध, वैदिक और यहाँ तक की इस्लाम परंपरा में भी भगवान ऋषभ का प्रभाव देखा जा सकता है। यद्यपि भगवान का समय वर्तमान काल गणना की परिधि में नहीं आ सकता। वे प्राग्-ऐतिहासिक महापुरुष हुए हैं। उनकी जीवन गाथा गंगोत्री के प्रवाह की तरह निर्मल-पवित्र रही है। जो कि हजारों-लाखों वर्षों से पूर्व से जन-जीवन को प्रेरणा प्रदान करती आ रही है। भगवान ऋषभ एक महापुरुष थे जिन्होंने भोग भूमि के मानवों को कर्म भूमि व धर्म भूमि में जीने लायक बनाया। असि, मसि व कृषि की शिक्षा से शिक्षित कर जन-जीवन में सुख-शांति की स्थापना की।

भगवान ऋषभ धर्मतीर्थ के आद्यप्रणेता, समाज सृष्टा व नीति निर्माता होने के कारण आदम बाबा के नाम से विश्रुत हुए। भारतीय इतिहास में चैत्र कृष्णा अष्टमी का दिन भी सदा स्मरणीय बना हुआ है, क्योंकि इस दिन राजा ऋषभ राज्य वैभव को ठुकराकर परमात्म तत्त्व की प्राप्ति के लिए संन्यास मार्ग पर प्रस्थित हुए। साधना के क्षेत्र में उपस्थित होने पर उन्होंने सव्वं सावज्जं जोग पच्चक्खामि—अर्थात् आज सर्व पापकारी प्रवृत्ति का त्याग कर दिया! दीक्षा अंगीकार करने के पश्चात वे परिवार, समाज और देश के कर्तव्यों से ऊपर उठ गए और विश्व मैत्री की विराट भावना उनकी आधारशिला बन गई।

भगवान अब मौन-ध्यान साधना में लीन हो गए। जब भगवान भिक्षा के लिए अग्लान चित्त तथा अव्यथित मन में ग्रामों, नगरों में भ्रमण करते किंतु उस समय भोली जनता साध्वाचार के अनुसार क्या देना है एवं भिक्षा की विधि से बिलकुल अनभिज्ञ और अपरिचित थी। अतः ऐसे महान राज ऋषि को अपनी भक्ति भावना से भाव-विभोर होकर कोई उन्हें रूपवती कन्या का, कोई बहुमूल्य वस्त्रों का, अमूल्य आभूषणों का सिंहासन, हाथी, घोड़े आदि लेने के लिए मनुहार करते, पर एक अकिंचन के लिए इनका कोई उपयोग नहीं था। पर आहार दान के लिए कोई नहीं कहता। यों करते-करते लगभग एक वर्ष का समय व्यतीत हो रहा था। भगवान के तप का क्रम चल रहा था।

एक बार भगवान ऋषभ का संसारपक्ष में पड़पौत्र श्रेयांस था, उसने रात्रि में स्वप्न दर्शन में अपने हाथों से मेरू पर्वत को अमृत से सिंचन करते हुए देखा। प्रातःकाल महल के गवाक्ष में बैठा हुआ इस स्वप्न के बारे में सोच रहा था कि लगता है मेरे हाथों से कोई महान कार्य होने वाला है, इतने में गवाक्ष में बैठा दूर से आते हुए भगवान ऋषभ को देखा और पूर्व भव की स्मृति हो आई और महलों से नीचे उतरकर भगवान के सामने आया, वंदन करके भगवान को भिक्षा ग्रहण करने का निवेदन किया। भगवान भिक्षा हेतु पधारे। उस समय किसानों द्वारा भेंटस्वरूप ईक्षु रस घड़ों में भरे हुए आए थे। श्रेयांस अहोभाव से बहराने के लिए उद्यत हुआ। भगवान ने अछिद्र कर पात्र से ईक्षु रस से पारणा किया। एक वर्ष के पश्चात पारणा हुआ वह दिन तृतीया का था। गगन मंडल में 'अहोदानं अहोदानं' की दिव्य ध्वनि हुई, देवताओं ने रत्नों की वृष्टि की और उस दिन को आज अक्षय तृतीया के रूप में मनाते हैं। जैन परंपरा में उस दिन की स्मृति में अनेक श्रावक-श्राविकाएँ वर्षभर एक दिन का उपवास, एक दिन पारणा करते हुए वर्षीतप करते हैं। क्योंकि निरंतर एक वर्ष तक भूखा रहकर तप करना वर्तमान में अशक्य है।

अन्य परंपरा में अक्षय तृतीया पर्व को परशुराम जयंती के रूप में मनाते हैं। इस दिन को अबुझ मुहूर्त माना गया है और कोई भी शुभ कार्य बिना किसी रोक-टोक से किया जा सकता है। आज का यह मंगल दिवस मानव जाति के लिए मंगलमय रहे तथा जीवन में अक्षय सुख-शांति प्रदान करने वाला बने।

✦ आदमी को यह ध्यान देना चाहिए कि गया हुआ समय लौटता नहीं है। इसलिए आदमी को समय का अच्छा उपयोग करना चाहिए।
— आचार्यश्री महाश्रमण

योगक्षेम अभातेयुप योगक्षेम योजना

❋ अभातेयुप प्रबंध मंडल सत्र - 2019-2021	51,00,000
❋ श्री बच्छावत परिवार, सरदारशहर-जयपुर	5,00,000
❋ श्री बसंत अर्पित नाहर, महेंद्रगढ़-उधना	5,00,000
❋ श्री राकेश कठोतिया, लाडनूं-मुंबई	5,00,000
❋ श्री रूपचंद कोडामल जैनसुख दुगड़, बीदासर-मुंबई	5,00,000
❋ श्री शंकरलाल विमल विनीत पितलिया, भीलवाड़ा	5,00,000
❋ श्री शांतिलाल पारसमल दक उमरी, उधना-सूरत	5,00,000
❋ श्री सुमतिचंद गोठी, सरदारशहर-मुंबई	5,00,000
❋ श्री विपिन जैन पारख, सिरसा-मुंबई	5,00,000
❋ श्री राजकुमार गौतम प्रसाद जैन, बेलपाड़ा-उड़ीसा	5,00,000
❋ श्री सागरमल दीपक विमल कमलेश श्रीमाल, देवगढ़-बड़ौदा	5,00,000
❋ श्री जैनसुख दीपक बोथरा, छापर-सिलीगुड़ी	5,00,000
❋ श्री बसंत नवलखा, बीकानेर	5,00,000
❋ श्री बिमल चोपड़ा, गंगाशहर-यमुनानगर	5,00,000
❋ श्रद्धानिष्ठ श्रावक केशरीमल, अनिलकुमार, संजयकुमार, सुनीलकुमार चंडालिया (गंगापुर) सूरत	5,00,000
❋ श्री छत्तरमल गणेशमल विनीतकुमार बैद, राजलदेसर-चेन्नई	5,00,000

संस्कृति का संरक्षण - संस्कारों का संवर्द्धन जैन विधि - अमूल्य निधि

नूतन गृह प्रवेश

चेन्नई।

झुठा रायपुरम (पाली) निवासी, पुरुषवाक्कम-चेन्नई प्रवासी मंजुलादेवी-सुरेंद्र कुमार, प्रियंका-लोकेश कुमार, अरिहंत कुमार, कायरा बोहरा का नूतन गृह प्रवेश जैन संस्कार विधि से संस्कारक पदमचंद आंचलिया, स्वरूपचंद दांती, हनुमान सुखलेचा ने विधि-विधानपूर्वक संपन्न करवाया।

अभातेयुप, तेयुप चेन्नई और संस्कारकों की ओर से आशीर्वचन के साथ परिजनों को मंगलभावना पत्रक प्रदान किया गया। इस संस्कार विधि की संयोजना में भीखमचंद प्रवीण कुमार सुखलेचा का सहयोग रहा।

विजयनगर।

देशनोक निवासी, बैंगलोर प्रवासी बाबूलाल आंचलिया के सुपुत्र कमल आंचलिया के नूतन गृह प्रवेश कार्यक्रम जैन संस्कार विधि से संस्कारक भंवरलाल मांडोत, संजय भटेवरा, विनय पितलिया एवं धीरज भादानी ने विधि-विधानपूर्वक संपन्न करवाया।

आंचलिया परिवार ने तेयुप, विजयनगर का आभार व्यक्त किया। परिषद् द्वारा आंचलिया परिवार को मंगलभावना यंत्र भेंट किया गया। आभार ज्ञापन संजय भटेवरा ने किया।

सूरत।

सायरा निवासी, सूरत प्रवासी भूपेश फूलचंद कावड़िया के नूतन गृह प्रवेश का शुभारंभ जैन संस्कार विधि से संस्कारक विनीत सामसुखा, हिम्मत बम्ब, बजरंग बैद ने संपूर्ण विधि व मंगलमंत्रोच्चार से संपन्न करवाया।

भूपेश फूलचंद कावड़िया ने सभी का आभार ज्ञापन किया। तेयुप, सूरत की ओर से मंगलभावना पत्रक व मंगलकामना पत्र भेंट किया गया।

नामकरण संस्कार

सूरत।

मोमासर निवासी, सूरत प्रवासी छगनलाल संचेती के सुपुत्र दिनेश-स्नेहा संचेती के प्रांगण में कन्या धन का जन्म हुआ। नामकरण संस्कार जैन संस्कार विधि से संस्कारक धर्मचंद सामसुखा, सतीश संखलेचा ने संपूर्ण विधि-विधान व मंगल मंत्रोच्चार से संपन्न करवाया।

नानाजी डालमचंद सिंघी व छगनलाल ने उपस्थित पारिवारिकजनों व संस्कारकों का आभार ज्ञापन किया। कार्यक्रम को संपादित करवाने में विजय बैंगानी की विशेष भूमिका रही। तेयुप, सूरत की ओर से नामकरण पत्रक व मंगलभावना पत्रक भेंट किया गया।

नवीन प्रतिष्ठान का शुभारंभ

रायपुर।

रायपुर प्रवासी महेंद्र एवं पुनीत बाफना के नवीन प्रतिष्ठान का शुभारंभ जैन संस्कार विधि से संस्कारक अनिल दुगड़, सूर्यप्रकाश बैद एवं अर्पित गोखरू द्वारा विधिवत् मंत्रोच्चार द्वारा संपन्न करवाया।

तेयुप मंत्री महेश गोलछा ने बाफना परिवार एवं संस्कारकों का आभार व्यक्त किया।

गंगाशहर।

केशरीचंद भुगड़ी के पौत्र व महेंद्र कुमार शीतल देवी भुगड़ी के सुपुत्र संजय जैन भुगड़ी के नूतन प्रतिष्ठान का शुभारंभ जैन संस्कार विधि द्वारा संस्कारक देवेंद्र डागा ने विधि-विधानपूर्वक संपन्न करवाया।

तेयुप से मनीष जैन सहयोगी के रूप में उपस्थित रहे। सभी ने तेयुप, गंगाशहर द्वारा आयोजित कार्यक्रम की सराहना की।

PDF Compressor Free Version

अखिल भारतीय
तेरापंथ टाइम्स
17 - 23 अप्रैल, 2023

✦ नाम, यश, पद, प्रतिष्ठा, पैसा—यह सब नैतिक मूल्यों के आगे गौण रहें तो राजनीति की प्रतिष्ठा और सार्थकता पर प्रश्नचिह्न नहीं लग सकेगा।

—आचार्यश्री महाश्रमण

प्रो. मुनि महेंद्र कुमारजी के प्रति आध्यात्मिक उद्‌गार

अर्हम

● मुनि मोहजीत कुमार ●

तेरापंथ धर्मसंघ में २०वीं एवं २१वीं सदी के संतों की कड़ी में प्रो० मुनि महेंद्र कुमार जी स्वामी का अपना विशिष्ट स्थान था। मुनि महेंद्र कुमार जी स्वामी ने आचार्य तुलसी के करकमलों से संयम रत्न ग्रहण कर अपने जीवन के प्रत्येक क्षण को ज्ञान, ध्यान, स्वाध्याय एवं आगमों का तलस्पर्शी अध्ययन के साथ संपादन सहयोग एवं अंग्रेजी भाषा में अनुवाद कर संघ की गौरव वृद्धि की।

आगम मनीषी मुनि महेंद्र कुमार जी स्वामी का व्यक्तित्व और कर्तृत्व धर्मसंघ की अमूल्य निधि थी। उनकी मेधा और स्फूरणा के लिए समूचा धर्मसंघ कायर है। उनकी ज्ञान की समृद्धि अतुल्य थी। उन्होंने निरपेक्ष भाव से जो कार्य किया वह धर्मसंघ की थाती के रूप में सदियों तक स्मृति का आधार रहेगा।

बहुश्रुत परिषद के संयोजक मुनि महेंद्र कुमार जी का समृद्ध चिंतन संघ की अनेक विकासशील प्रवृत्तियों में योगभूत बना रहा। उनकी निष्पृहता अपने आपमें उल्लेखनीय उदाहरण है। तेरापंथ धर्मसंघ के नवम्, दशम् अधिशास्ता तथा वर्तमान अधिशास्ता आचार्यश्री महाश्रमण जी की कृपा का सत्त्व उन्हें अपने भाग्य से वरदायी रहा।

ऐसी महान विभूति का प्रयाण धर्मसंघ के लिए एक स्थान की रिक्तता का अनुभव कराता रहेगा।

मैं अपने भावों को ससीम में समेटता हुआ, उनके भावी भव के उत्थान की आध्यात्मिक मंगलकामना करता हूँ।

आत्मा के उद्‌गार

● मुनि श्रेयांस कुमार ●

बहुश्रुत परिषद के रहे, संयोजक सुखकार।
मुनि महेंद्र पर रही सदा, गुरु की कृपा अपार।।

गुरुवर श्री महाश्रमण का, मुंबई चातुर्मास।
लंबे समय से थी उन्हें, दर्शन की शुभ आश।।

पर अचानक छोड़ चले, मुनि महेंद्र कुमार।
दर्शन की मन में रही, जुड़ा गुरु से तार।।

साझ बनाया तब दिया, धर्मरुचि श्रेयांस।
साहु शांति श्रेयांस फिर, रहे मुनिवर के पास।।

विद्वत जन रहते चकित, जब करते अवधान।
राष्ट्रपति कलाम भी, देख विद्वता ज्ञान।।

तीन-तीन आचार्यों की, कृपा मिली अपार।
सेवा में तल्लीन रहे, मुनि अजीत कुमार।।

अभिजीत जागृत सिद्ध को, किया सदा तैयार।
अजीत मुनि व जम्बू को, दिए नये संस्कार।।

गुरुवर श्री तुलसी गणि, दीक्षा दाता खास।
महाश्रमण ज्यों नित मिला, जीता दिल विश्वास।।

हँसमुख सबसे बोलते, मुनि महेंद्र गुणवान।
धर्मसंघ में थी अरे! एक नई पहचान।।

श्रद्धांजलि अर्पित करे, मुनि श्रेयांस कुमार।
आत्मा मुक्ति को वरे, आत्मा के उद्‌गार।।

मंगल गीत

● मुनि चैतन्य कुमार 'अमन' ●

प्रोफेसर मुनिवर महेंद्र की यादें हमें सताएँ।
छोड़ अचानक चले गए वो कैसे उन्हें भूलाएँ।
मिलनसार गुणवान महान।
एक अलग उनकी पहचान।।

मुंबई महानगर में वर्षों तक प्रवास किया है।
मुंबई महानगर में देखो अंतिम श्वास लिया है।
है मलाल बस इसी बात का, गुरु दर्शन ना पाए।।

प्रेक्षा प्राध्यापक थे सच्चे आगम अनुसंधानी।
बहुश्रुत परिषद् के संयोजक, ज्ञानी प्रेक्षा ध्यानी।
अंग्रेजी के अच्छे ज्ञाता, क्या-क्या हम बतलाएँ।।

श्री तुलसी महाप्रज्ञ और श्री महाश्रमण गुरुदेवा।
तीन-तीन आचार्यप्रवर की, उन्हें मिली थी सेवा।
सुघड़ साहित्य रचना करके, साहित्यकार कहाए।।

मुनि अजित अभिजीत व जागृत जम्बू सिद्ध मुनिवर।
सेवा की सभी संतों ने, पाया है आशीर्वर।
मुनि महेंद्र ने भी तो इनको, खूब ही लाड़ लड़ाए।।

मुनि श्रेयांस कुमार और चैतन्य 'अमन' गुण गाएँ।
विमल विहारी मुनि प्रबोध भी उनकी स्मृति कर पाए।
गंगाणै की तपोभूमि में, मंगल गीत सुनाएँ।।

लय : मांय न मांय---

अर्हम

● मुनि जम्बू कुमार (मिंजूर) ●

बहुश्रुत, आगम मनीषी, मुनिवर महेंद्र कुमार।
आध्यात्मिक पथदर्शक, मुनिवर महेंद्र कुमार।।

मुंबई में जन्म लिया, जेठा सूरज आँगन,
बीएससी पारंगत, हर्षित झवेरी सदन।
भुज कच्छ के वासी, मुनिवर महेंद्र कुमार।।

उन्नीस सौ सत्तावन, गुरु तुलसी कर दीक्षा,
शिक्षण व प्रशिक्षण से, पाते नित नव ईक्षा।
प्रेक्षा के प्राध्यापक, मुनिवर महेंद्र कुमार।।

दिव्यात्मा पुण्यात्मा, शम सम श्रम मय जीवन,
आगम अनुसंधाता, अनुभव-युत अनुशीलन।
वक्ता, वेत्ता, ज्ञाता, मुनिवर महेंद्र कुमार।।

गुरुत्रय की अनहद थी, करुणा दृष्टि प्यारी,
इतनी क्या जल्दी थी, स्वागत की थी बारी।
क्यूँ छोड़ चले सबको, मुनिवर महेंद्र कुमार।।

लय : होठों से छू लो तुम—

वीतरागाय नमः

● शासन गौरव साध्वी राजीमती ●

शासनश्री, बहुश्रुत परिषद के संयोजक मुनि महेंद्र कुमार जी!

आज वे हमारे बीच नहीं रहे यह जानकर फिर एक बार जीवन की अनित्यता का साक्षात्कार हुआ।

- यों तो आठों ही कर्मों के भोग में कठिनाई होती है, परंतु असातवेदनीय और अंतरायकर्म ये दो विशेष बाधक बनते हैं। मुनिश्री पूना तक जाकर भी गुरुदर्शन नहीं कर सके और पूज्यवर के दर्शनों की प्रतीक्षा भी नहीं कर सके।
- मुनि महेंद्र कुमार जी का व्यक्तित्व संघ में प्रतिष्ठित था। वे आचार्यों के कृपापात्र, विश्वासी एवं गहन चिंतक के रूप में स्वीकृत थे।
- मुनि महेंद्र कुमार जी जैन शासन में जाने-माने एक प्रबुद्ध संत थे।
- जब उनकी सुजानगढ़ में दीक्षा हुई तब मैंने अनेक लोगों से सुना कि आज हमारे तेरापंथ धर्मसंघ में एक वैज्ञानिक साधु बना है। लोक थुथकारा डाल रहे थे।
- प्रेक्षाध्यान के जन्म के साथ जेठाभाई जवेरी और मुनि महेंद्र कुमार जी जुड़े हुए थे। मानो कि वे प्रेक्षामय हो गए थे। ध्यान की वैज्ञानिक उपयोगिता बताने वाले उस समय प्रथम थे। आचार्यश्री महाप्रज्ञ जी उनके इस विषय में दिशा-निर्देशक तो थे ही।
- जीवन विज्ञान की उपज में खाद देने वाले मुनियों में एक थे मुनि महेंद्र कुमारजी।
- अब्दुल कलाम जैसे वैज्ञानिक को जैन धर्म, तेरापंथ और मानव धर्म (अणुव्रत) उनकी भाषा में समझाने वाले थे मुनि महेंद्र कुमारजी।
- संघीय विकासी हर चिंतन में लगभग अपना एक चिंतन देते थे मुनि महेंद्र कुमारजी।
- धर्मसंघ की, आचार्यों की प्रभावना में निरंतर लगे रहने वाले थे मुनि महेंद्र कुमारजी।
- स्वाध्याय के पाँचों ही प्रकारों के अच्छे साधक थे मुनि महेंद्र कुमारजी!
- उस ज्ञान वृक्ष के पास उपयोगी ज्ञान फल देने की कला थी उसका एक प्रमाण है सहवर्ती संतों का निर्माण।
- धन्य है इन सहवर्ती संतों को जो मुनिश्री की संयम यात्रा, आगम यात्रा तथा स्वास्थ्य यात्रा में चित्त समाधि पहुँचाते रहें।
- मुनि अजित कुमारजी—तपस्वी, ज्ञानी एवं सेवाभावी।
- मुनि जम्बूकुमारजी—आपके लिए कितना कल्याणकारी एवं उपकारी रहा मुनिश्री का सान्निध्य।
- मुनि अभिजीत कुमारजी—मुनिश्री के प्रेरणा पाथेय को सार्थकता देते रहें। रिक्तता भरते रहें।
- मुनि जागृतकुमार जी एवं मुनि सिद्धकुमारजी!
  मुनि महेंद्र कुमार जी के उपकारों से उऋण होने के उपायों को खोजते रहें तथा उनकी तरह पाँचों ही संत गुरुदृष्टि की आराधना करते हुए धर्मसंघ की सेवा करते रहें।
- मुनि महेंद्र कुमारजी ने मुंबई में जन्म लिया, मुंबई में ही उच्च शिक्षा प्राप्त की और अपनी संयम यात्रा को भी यहीं संपन्न किया।
- मुनिश्री की मेरे पर बहुत कृपा थी। मैंने जब-जब कोई प्रश्न पूछा, चिंतन माँगा तो आपने सम्मान के साथ समाधान दिया।
- मैंने एक पत्र भी लिख रखा था जिसे पूज्यवर के पधारने पर देना था। योगक्षेम वर्ष पर आप और मैं रहूँ या नहीं, आप कुछ बातें निवेदन इस प्रलंब समय में करना।
- मुनिश्री भगवती सूत्र के गहन ज्ञान जल में डुबकियाँ लगाते-लगाते, किनारे पर पहुँचते-पहुँचते कुछ पायदान शेष छोड़कर चले गए।

PDF Compressor Free Version

प्रो. मुनि महेंद्र कुमारजी के प्रति आध्यात्मिक उद्गार

एक महान वैज्ञानिक एवं बहुश्रुत मुनिप्रवर का महाप्रयाण

● मुनि आलोक, मुनि हिमकुमार, मुनि लक्ष्यकुमार ●

तेरापंथ धर्मसंघ के शासन प्रभावक एक महान वैज्ञानिक एवं बहुश्रुत परिषद के संयोजक प्रो० मुनि महेंद्र कुमार जी स्वामी का महाप्रयाण एक अपूरणीय क्षति है।

प्रो० मुनि महेंद्र कुमार जी स्वामी परमपूज्य गुरुदेव आचार्य तुलसी के हाथों से दीक्षित हुए। उनमें संघ एवं संघपति के प्रति अमाप्य, अटूट भक्ति थी। वे सरलता, विनम्रता, ऋजुता, मधुरभाषिता आदि अनेकानेक आध्यात्मिक गुणों से महिमामंडित थे। वे विशेष ज्ञानलब्धि संपन्न थे। उन्होंने आगमों का गहन अध्ययन कर अनेक रहस्यों को उद्घाटित किया। जैन आगम भाष्य लेखन में उनकी सक्रिय भूमिका रही। वे एक महान वैज्ञानिक संत थे। उन्होंने अध्यात्म एवं विज्ञान पर तुलनात्मक विषय पर अनेकानेक राष्ट्रीय-अंतर्राष्ट्रीय कॉन्फ्रेंस में प्रखर प्रवचन देकर शासन की खूब प्रभावना की। वे प्रेक्षाध्यान, अणुव्रत, जीवन विज्ञान, आगम-अनुसंधान एवं अवधान विद्या के बहुत ही गहरे अध्येता थे। उनकी प्रवचन शैली बहुत ही सरस एवं सारगर्भित थी। उनके इन महान गुणों का जितना वर्णन करूँ उतना ही कम है।

प्रो० मुनि महेंद्र कुमार जी स्वामी का मेरे ऊपर भी अनंत-अनंत उपकार रहा है। उन्होंने मुझे ज्ञान-दर्शन-चारित्र एवं तप के प्रत्येक क्षेत्र में आगे बढ़ने की प्रेरणा दी। खासकर मेरे शोधकार्य में भी मुनिश्री का सतत् मार्गदर्शन मुझे मिलता रहा। मुनिश्री द्वारा प्राप्त असीम वात्सल्य को मैं कभी भी नहीं भूल सकता।

परमपूज्य गुरुदेव युगप्रधान आचार्यश्री महाश्रमणजी ने भी मुनिश्री का बहुत सम्मान रखा। पूज्य गुरुदेव ने उन्हें बहुश्रुत परिषद का संयोजक मनोनीत कर शासन की महिमा को वृद्धिंगत किया।

ऐसे महान शासन प्रभावक एवं असीम वात्सल्य प्रदायक मुनि महेंद्र कुमारजी स्वामी के प्रति श्रद्धाभाव से, विशेष अहोभाव से श्रद्धांजलि अर्पित करता हूँ। उनकी आत्मा परम लक्ष्य मोक्ष की ओर अग्रसर होती रहे, यही मंगलकामना हम तीनों ही संत करते हैं।

विशेष मुनि अजित कुमार जी स्वामी ने मुनि महेंद्र कुमार जी स्वामी की अग्लान भाव से लंबे वर्षों तक जो सेवा की वह हम सभी के लिए एक आदर्श प्रेरणा है। मैंने बहुत निकटता से अजित कुमारजी स्वामी को सेवा करते हुए देखा है। उनकी न केवल सेवा रही बल्कि आगमों के कार्यों में भी मुनिश्री की सक्रिय भूमिका रही है। ऐसे महान सेवाभावी तपस्वी संत को श्रद्धा से प्रणाम करता हूँ। साथ ही साथ मुनि जंबूकुमार जी, मुनि अभिजीत कुमारजी, मुनि जागृतकुमार जी एवं मुनि सिद्धकुमारजी की सेवा सराहनीय है, स्तुत्य है। खासकर इन छोटे युवा संतों ने प्रो० मुनि महेंद्र कुमार जी स्वामी के पास रहकर सेवा करते हुए अपनी ज्ञान चेतना को जगाया यह बहुत ही अनुमोदनीय बात है। अतः हम तीनों ही संत रत्नाधिक मुनि अजित कुमार जी स्वामी एवं सभी संतों के प्रति आध्यात्मिक मंगलकामना करते हैं।

मुंबई सभा, मुंबई चातुर्मास व्यवस्था समिति एवं सकल मुंबई के श्रावक समाज ने जो मुनिश्री की सेवा की, वह भी अपने आप एक स्मरणीय है। सकल मुंबई समाज खूब आध्यात्मिक विकास करता रहे।

पुनः दिवंगत आत्मा के प्रति हम तीनों ही संत श्रद्धाप्रणतिपूर्वक प्रणिपात करते हैं।

✦ *अणुव्रत की साधना करने वाला व्यक्ति अहिंसा और संयम को आंशिक रूप में साध सकता है। उसकी वह साधना पर्यावरण की दृष्टि से भी उपयोगी बन जाती है।*

– आचार्यश्री महाश्रमण

बहुश्रुत परिषद संयोजक मुनि महेंद्र कुमारजी स्वामी के स्वर्गवास पर रचित श्लोक

।। नमो जिनेभ्यः।।

● मुनि जागृत कुमार ●

।। महेन्द्रमुनिर्महान्।।
महेन्द्रकुमारजी स्वामी कौन थे?

पूतशतावधानी यो, वेदविदात्मरक्षकः।
मम संरक्षकोप्यासीत्, स महेन्द्रमुनिर्महान्।।१।।

जो पवित्र, शतावधानी, आगम के विशेषज्ञ, आत्मा की रक्षा करने वाले, मेरे संरक्षक थे, ऐसे मुनिश्री महेन्द्रकुमारजी स्वामी महान हैं।।

प्रेक्षाप्राध्यापकश्चासीत्, यो निजात्मगवेषकः।
हि कोविदोऽल्पभोजी च, स महेन्द्रमुनिर्महान्।।२।।

जो प्रेक्षाप्राध्यापक, अपनी आत्मा की गवेषणा करने वाले, विद्वान, अनुभवी, अल्पभोजी थे, ऐसे मुनिश्री महेन्द्रकुमारजी स्वामी महान हैं।।

स्वाक्रोशवधकश्चासीत्, बहुश्रुतो महर्द्धिकः।
क्यति दुष्कर्मशाखा यः, स महेन्द्रमुनिर्महान्।।३।।

जो अपने आक्रोश का वध करते थे, बहुश्रुत थे, महर्द्धिक थे, बुरे कर्म की शाखाओं का छेदन करते हैं। ऐसे मुनिश्री महेन्द्रकुमारजी स्वामी महान हैं।।

यश्च वंदनकं पूजां, सत्कारं नाम नैच्छत् हि।
सुनिष्ठावान् तपस्वी हि, स महेन्द्रमुनिर्महान्।।४।।

जो वंदन, पूजा, नाम, सत्कार की इच्छा नहीं करते, अच्छी निष्ठा वाले, तपस्वी थे, ऐसे मुनिश्री महेन्द्रकुमारजी स्वामी महान हैं।

तुलसीगुरु हस्ताभ्यां, दीक्षां लुब्धश्च कोमलः।
धन्योऽष्टादशभाषज्ञः तस्मै हि मुनये नमः।।५।।

जिन्होंने आचार्य तुलसी गुरु के हाथों से दीक्षा को प्राप्त किया, जो कोमल, धन्य, अठारह भाषाओं के जानकार थे, ऐसे मुनिश्री महेन्द्रकुमारजी स्वामी को मेरा नमस्कार।।

गीत

● शासनश्री मुनि विजयकुमार ●

मुनि महेंद्र तजकर सब कुछ हो गए रवाना है,
कोई पूछे वे कहाँ आज, मालूम न ठिकाना है।।

अध्यात्म और विज्ञान उभय से जुड़ा हुआ जीवन,
थी विशेषताएँ अनगिन सबने यह माना है।।१।।

था अद्भुत समय प्रबंधन, अवसर न व्यर्थ खोते,
संदेश दिया, श्रम करके निज भाग्य बनाना है।।२।।

बी०एस०सी० करके दीक्षा ली भैक्षव शासन में,
श्रद्धा से गौरव गाता यह सकल जमाना है।।३।।

आगम मनीषी मुनिवर, ज्ञानी प्रेक्षा ध्यानी,
उज्ज्वल इतिहास बना जो पड़ता न पुराना है।।४।।

व्यक्तित्व अनूठा था वह नहीं भूल कभी सकते,
मुनिवर के उच्च गुणों को हमको अपनाना है।।५।।

बहुश्रुत परिषद संयोजक था स्थान उच्च पाया,
है 'विजय' नाम अधरों पर सबका पहचाना है।।६।।

लय : प्रभु पार्श्वदेव चरणों में शत-शत प्रणाम हो---

मंगलभावांजलि

● शासनश्री साध्वी यशोधरा ●

आगम मनीषी प्रेक्षा प्रोफेसर बहुश्रुत परिषद् के संयोजक मुनि महेंद्र कुमार जी के देवलोकगमन से तेरापंथ धर्मसंघ की अपूरणीय क्षति हुई है। उन्होंने जिनशासन की बहुआयामी सेवा की है तथा भिक्षु शासन की श्रीसुषमा बढ़ाने में अतिशायी योगभूत बने हैं। वे सारे प्रसंग अविस्मरणीय एवं अनुकरणीय हैं। मुनि विरल विशेषताओं के समवाय थे।

उनका समर्पण भाव विशिष्ट था। अद्भुत थी उनकी क्षमता, अद्भुत थी उनकी समता और अद्भुत थी उनकी ममता। प्रबुद्धता के बावजूद अहंकारशून्य मानो उन्हें स्वभाव में ही प्राप्त थी। स्वास्थ्य यथेष्ट अनुकूल न होने पर भी उन्होंने सदैव अप्रमत्त भाव से क्षण-क्षण का उपयोग कर गण भंडार को भरा है।

वे धन्य थे, कृत पुण्य थे, जिन पर तीन-तीन आचार्यों की कृपादृष्टि की अमृतवर्षा अविराम बरसती रही।

आर्यत्रयी की वरदायी छत्रछाया में मुनि जीवन की सफल आराधना कर वे कृतकाम हो गए। जिस सिंहवृत्ति से उन्होंने संयम यात्रा प्रारंभ की उसी सिंह वृत्ति से संपन्न की है।

'ज्यों की त्यों धर दीन्हीं चदरिया' इस कहावत को सार्थक कर दिखाया। दिवंगत आत्मा के आध्यात्मिक ऊर्ध्वारोहण की मंगलकामना।

स्वर्गीय मुनि महेंद्र कुमार जी के प्रति शुभकामना

● शासनश्री साध्वी रतनश्री, साध्वी सुव्रता ●

दिनांक ६ अप्रैल को (श्रावकों द्वारा ज्ञात हुआ कि आगम मनीषी मुनि महेंद्र कुमार जी का मुंबई में स्वर्गवास हो गया) सुनते ही अनुभूति हुई कि आप एक श्रमनिष्ठ, श्रद्धानिष्ठ एवं विशिष्ट प्रतिभाशाली मुनि थे। आपके स्वर्गवास से एक अपूरणीय क्षति हुई है। आधुनिक विज्ञान, गणित आदि विषयों का तलस्पर्शी ज्ञान आपके पास था। तेरापंथ धर्मसंघ में ६ दशकों से जैन आगमों का शोधपूर्ण वैज्ञानिक संपादन आचार्यश्री तुलसी, आचार्यश्री महाप्रज्ञ एवं वर्तमान आचार्यश्री महाश्रमण जी की पुण्य सन्निधि में सतत् गतिमान हैं। उस महत्तम कार्य में मुनि महेंद्र कुमार जी भी कुछ अंशों में जुड़े रहे हैं। आपका विश्रुत नाम प्रोफेसर मुनि महेंद्र कुमारजी था।

तेरापंथ धर्मसंघ एक प्राणवान धर्मसंघ है। इसका आधार है एक आचार्य, एक मर्यादा एवं एक अनुशासन और एक व्यवस्था। संघ के नाभिकीय केंद्र हैं—आचार्य। उनके आज्ञा निर्देश के अनुसार चलने वाले हैं—साधु-साध्वी। वे पूर्ण रूप से समर्पित बनकर संघ के विकास के लिए हर क्षण कटिबद्ध रहते हैं। इसकी निष्पत्ति है इस अल्प संख्या वाले संघ ने विकास के शिखरों को छुआ है।

मुनि महेंद्र कुमार जी ने प्रलंब यात्रा, साहित्य लेखन, प्रवचन पटुता से इस संघ की सौरभ को दिगदिगंत में फैलाया है। अणुव्रत, प्रेक्षाध्यान, जीवन विज्ञान आदि का विशिष्ट कार्य किया है।

मैं यही कामना करती हूँ कि उनकी आत्मा उत्तरोत्तर गति-प्रगति करती हुई मोक्ष का वरण करे।

✦ *जब क्षयोपशम की स्थिति बनती है, तब संयम की भावना बनती है और वह उस दिशा में पादन्यास करता है।*

– आचार्यश्री महाश्रमण

PDF Compressor Free Version

अखिल भारतीय
तेरापंथ टाइम्स
17 - 23 अप्रैल, 2023

✦ *सेवा और शुचिता–दोनों का योग बना रहे तो 'नैतिकता की सरिता : महक उठे मानवता' की बात साकार हो सकती है।*
–आचार्यश्री महाश्रमण

मनोनुशासनम्

❑ आचार्य तुलसी ❑

पद्मासन के विविध रूप

(१) बद्धपद्मासन

विधि–दायें पैर का बायें ऊरु और बायें पैर को दायें ऊरु पर रखिए। एड़ियों को नाभि के नीचे के भाग से सटा दीजिए। दोनों हाथों को पीछे ले जाकर दायें हाथ की मध्यवर्ती तीन अंगुलियों से दायें पैर का और बायें हाथ की मध्यवर्ती तीन अंगुलियों से बायें पैर का अंगूठा पकड़िए। पेट को थोड़ा-सा अंदर ले जाइए और सीने को कुछ आगे की ओर उभारिए। फिर दीर्घ श्वास लीजिए।

समय–शारीरिक शक्ति के अनुसार आधा घंटा तक इसका अभ्यास किया जा सकता है।

फल–(१) फेफड़ों की शुद्धि। (२) कटि के स्नायुओं की सशक्तता। (३) इसके साथ मूलबंध करने से वीर्य-दोषों की शुद्धि। (४) उदर रोगों का शमन।

(२) योगमुद्रा

विधि–दायें पैर को बायें ऊरु पर रखिए और एड़ी को नाभि से सटा दीजिए। बायें पैर को दायें ऊरु पर रखिए और एड़ी को नाभि से सटा दीजिए। फिर दायें हाथ को पीछे ले जाकर फैला दीजिए और बायें हाथ को पीछे ले जाकर उससे दायें हाथ की कलाई को पकड़िए। ओ झुककर ललाट से भूमि का स्पर्श कीजिए।

समय–एक मिनट से आधा घंटा तक।

फल–(१) कोष्ठबद्धता दूर होती है। (२) ब्रह्मचर्य में सहायक।

(३) सोड्डीयान पद्मासन

विधि–पद्मासन में बैठकर, श्वास का रेचन कर, बहिःकुंभक की स्थिति में उड्डीयान बंध कीजिए–पेट को भीतर ले जाइए और फिर फुलाइए। एक कुंभक में दस आवृत्तियाँ की जाएँ तो दस बार में उसकी सौ आवृत्तियाँ हो जाती हैं। इस क्रिया में नाभि जितनी पृष्ठ-रज्जु की ओर जा सके, उतनी ले जानी चाहिए।

फल–उदर रोगों पर आश्चर्यकारी प्रभाव।

(४) अर्धपद्मासन

विधि–बायें या दायें किसी एक पैर को पद्मासन की मुद्रा में रखने से अर्धपद्मासन हो जाता है।

समय–पद्मासन की तरह।

फल–पद्मासन की तरह।

(५) ऊर्ध्वपद्मासन

विधि–सर्वांगासन या शीर्षासन के साथ पद्मासन करने से ऊर्ध्व पद्मासन हो जाता है।

समय–अभ्यास करते हुए आधा घंटा तक।

फल–(१) वीर्य का ऊर्ध्वाकर्षण। (२) मन की एकाग्रता।

(६) उत्थित पद्मासन

विधि–पद्मासन में बैठकर दोनों हथेलियों को भूमि पर टिकाइए और शरीर को भूमि से ऊपर उठाइए।

समय–दो-तीन मिनट।

फल–(१) पद्मासन के लाभ। (२) हथेली के स्नायुओं की सशक्तता।

इसे दोलासन या लोलासन भी कहा जाता है। कुछ आचार्यों ने पद्मासन को पर्यंकासन और अर्धपद्मासन को अर्धपर्यंकासन माना है।

वीरासन

विधि–बद्ध पद्मासन की तरह दोनों पैरों को रखिए और हाथों को पद्मासन की तरह रखिए।

समय–क्रमशः तीन घंटे तक बढ़ाएँ।

फल–धैर्य, संतुलन और कष्ट सहने की क्षमता का विकास।

कुछ आचार्यों ने कुर्सी पर बैठकर उसे निकाल देने पर जो मुद्रा बनती है, उसे वीरासन माना है।

सुखासन

विधि–किसी एक पैर को वृषण के पास ऊरु के निम्नवर्ती भाग से सटाकर बैठिए और दूसरे पैर को जंघा और ऊरु के बीच में रखिए। दूसरी बार में पैरों का क्रम बदल दीजिए।

समय–यह ध्यानासन है, इसलिए चाहे जितने समय तक किया जा सकता है।

फल– कामवाहिनी नाड़ी पर नियंत्रण।

कुक्कुटासन

विधि–पद्मासन में बैठकर ऊरु और जंघा के बीच में दोनों हाथों को कोहनी तक नीचे ले जाइए और हथेलियों को भूमि पर टिका दीजिए तथा उनके बल पर सारे शरीर को ऊपर उठाइए।

समय–एक मिनट से पाँच मिनट तक।

फल–(१) स्नायविक दुर्बलता के कारण उत्पन्न होने वाला क्रोध और मोह का विकार नष्ट हो जाता है।
(२) स्नायु पुष्ट होते हैं।
(३) मन शक्तिशाली और प्रशांत होता है।
(४) कामवासना पर विजय प्राप्त होती है।

सिद्धासन

विधि–बायें पैर की एड़ी को गुदा और सीवज के बीच में रखिए और दायें पैर की एड़ी को इंद्रिय के ऊपर स्थापित कीजिए। हाथों की मुद्रा पद्मासन की भाँति कीजिए।

समय–एक मिनट से तीन घंटा।

फल–वीर्य-शुद्धि।

भद्रासन

विधि–दोनों पैरों को सामने फैलाकर बैठिए। बाद में पैरों के तलों को संपुटित कीजिए–परस्पर मिलाइए। फिर उन्हें उपस्थ के समीप रखिए जिससे पैरों के अंगूठे भूमि पर और एड़ियाँ नाभि के समीप आ जाएँ। फिर पैरों को धीमे-धीमे घुमाइए जिससे पैरों की अंगुलियाँ नितंबों के नीचे चली जाएँ और एड़ियाँ वृषण-ग्रंथियों के नीचे सामने की ओर दीखें। दोनों हथेलियों को घुटनों पर टिकाइए।

समय–पाँच मिनट से आधा घंटा।

फल–कार्य करने की रुचि उत्पन्न होती है।

वज्रासन

विधि–घुटनों को मोड़कर पीछे की ओर ले जाइए जिससे दोनों ऊरु और जंघाएँ ऊपर-नीचे हो जाएँ। घुटने से अंगुलियों तक का भाग जमीन को छूते हुए रहना चाहिए।

समय–दस-पंद्रह मिनट किए बिना इसका परिणाम प्राप्त नहीं होता। विशेष लाभ के लिए इसे लंबे समय तक करना चाहिए।

फल–(१) भोजन के पश्चात् पंद्रह मिनट तक वज्रासन करने से पाचन शक्ति बढ़ती है।
(२) अपानवायु की शुद्धि।
(३) वीर्य-दोष की शुद्धि।
(४) घुटनों और पैरों के स्नायुओं की सशक्तता।

मत्स्येन्द्रासन

विधि–बायें पैर का पंजा दायें ऊरु के मूल में रखिए और एड़ी को पेडू से सटाइए। फिर दायें पैर को बायें घुटने से आगे ले जाइए। बायें हाथ को दायें हाथ को पीठ की ओर ले जाकर उससे बायें पैर की एड़ी पकड़िए। मुँह और पीठ के भाग को जितना मोड़ सकें, उतना पीछे की ओर ले जाइए। धीमे-धीमे श्वास लीजिए। दूसरी आवृत्ति में पैरों और हाथों का क्रम बदल दीजिए।

समय–एक या दो मिनट।

फल–पृष्ठ-रज्जु के स्नायुओं की शुद्धि।

अर्धमत्स्येन्द्रासन

जब बायें पैर की एड़ी को गुदा और सीवन के बीच रखकर दायें पैर को पूर्ववत् बायें घुटने से आगे ले जाकर रखा जाता है, दायें हाथ को पीठ के पीछे ले जाकर बायें ऊरु के मूल में स्थापित किया जाता है और शेष क्रिया पूर्ववत् की जाती है तब अर्धमत्स्येन्द्रासन हो जाता है। दूसरी आवृत्ति में पैरों और हाथों का क्रम बदल देना चाहिए। अर्धमत्स्येन्द्रासन का समय और फल पूर्ववत् है। मत्स्येन्द्रासन की अपेक्षा फल की मात्रा इसमें कम होती है।

पश्चिमोत्तानासन

विधि–सीधे बैठकर दोनों पैरों को आगे की ओर समरेखा में फैलाइए। फिर श्वास का रेचन कर शरीर को आगे की ओर झुकाते हुए दोनों हाथों की अंगुलियों से पैरों के अंगूठों को पकड़िए और सिर को दोनों घुटनों के बीच में टिका दीजिए।

समय–इस आसन की सिद्धि आधा घंटा तक करने से होती है।

फल–(१) मन्दाग्नि आदि उदर रोगों का शमन।
(२) हर्निया की बीमारी में लाभकारी।

महामुद्रा

विधि–किसी एक पैर की एड़ी सीवन और गुदा के मध्य भाग में लगाइए तथा दूसरे पैर को सीधा फैला दीजिए। श्वास बाहर निकालिए। उड्डीयान बंध कीजिए। सिर घुटने पर टिकाइए। दूसरे पैर से भी वैसी ही पुनरावृत्ति कीजिए।

समय–एक या दो मिनट।

फल–वीर्याशय तथा पाचनयंत्र की दृढ़ता।

संप्रसारण भूनमनासन

विधि–सीधे बैठकर पैरों को यथाशक्ति फैलाइए। हाथों से पैरों के अंगूठे पकड़कर सिर को भूमि पर रखिए।

समय–एक या दो मिनट।

फल–वीर्याशय की दृढ़ता।

कन्दपीड़नासन

विधि–सीधे पैर के पंजे को जमीन पर टेक एड़ी को सीवन तथा गुदा से सटाइए। बाएँ पैर को दाएँ घुटनों पर रखिए। दोनों हाथों से दोनों कमर के पार्श्वों को पकड़िए।

समय–एक या दो मिनट।

फल–वीर्य-वाहिनी नाड़ियों की शुद्धि।

(क्रमशः)

PDF Compressor Free Version

✦ *वाणी का असंयम व्यक्ति के व्यक्तित्व को बौना बनाने वाला होता है।*

—आचार्यश्री महाश्रमण

अखिल भारतीय
तेरापंथ टाइम्स
17 - 23 अप्रैल, 2023

संबोधि

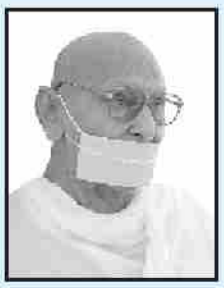

❑ आचार्य महाप्रज्ञ ❑

बंध-मोक्षवाद

मिथ्या-सम्यग्-ज्ञान-मीमांसा

भगवान् प्राह

(४३) स्वयंबुद्ध! मया बुद्धं, बोधितत्त्वं सुदुर्लभम्।
शरण्य! शरणं देहि, येन बोधिर्विशुद्ध्यति।।

हे स्वयंबुद्ध! मैंने सुदुर्लभ बोधितत्त्व को जान लिया है। हे शरण्य! मुझे शरण दो, जिससे मेरी बोधि विशुद्ध बन जाए।

बोधि सुदुर्लभ है, किंतु स्वयंबुद्ध भगवान महावीर के सहवास, सान्निध्य से उसके लिए सुलभ बन गई। **'सत्संगतिः कथय किं न करोति पुंसाम्'** सत्य को उपलब्ध पुरुषों की संगति क्या नहीं करती है? वह क्षुद्र को महान् बना देती है, भ्रांत को अभ्रांत बना देती है, पथ-भ्रष्ट को मार्ग में सुस्थिर कर देती है और नर को नारायण, अशिव को शिव बना देती है। मेघ शिव की कोटि में आ गया। उसके रोम-रोम से आनंद का स्रोत फूट पड़ा। उसने कहा—प्रभो! मैं अब आपकी शरण में हूँ, मेरी पतवार आपके हाथों में है। मुझे आप ऐसा आशीर्वाद प्रदान करें कि मेरी बोधि सदा विशुद्ध बनी रहे। उसमें कहीं कोई मलिनता प्रविष्ट न हो जाए। बस, मेरा आपसे यही अनुनय है।

इति आचार्यमहाप्रज्ञविरचिते संबोधिप्रकरणे
संयतचर्यानामा दशमोऽध्यायः।

आत्ममूलकधर्म-प्रतिपादन

भगवान् प्राह

(१) अस्त्यात्मा चेतनारूपो, भिन्नः पौद्गलिकैर्गुणैः।
स्वतंत्रः करणे भोगे, परतंत्रश्च कर्मणाम्।।

आत्मा का स्वरूप चेतन है। वह पौद्गलिक गुणों से भिन्न है। वह कर्म करने में स्वतंत्र और उसका फल भोगने में परतंत्र है।

आत्मा और पुद्गल (Matter) दोनों भिन्न हैं। दोनों में कुछ सामान्य गुणों का एकत्व होते हुए भी चेतन का स्व-बोध, ज्ञान-गुण उससे सर्वथा भिन्न है। पुद्गल में अपना कोई बोध नहीं है। वह जड़ है। निर्जीव और सजीव के बीच एक भेद-रेखा विज्ञान भी स्पष्ट देखने लगा है। शरीर से निकलने वाला वलय चेतना का ही विशेष गुण-धर्म है। प्राणी की प्राणशक्ति क्षीण होने पर आभावलय भी क्षीण होता हुआ देखा गया है। इससे दोनों की भिन्नता स्पष्ट प्रतीत होती है। जड़ और चेतन की भिन्नता के द्योतक और भी कुछ लक्षण हैं।

'अप्पा कत्ता विकत्ता य सुहाण य दुहाण य'—आत्मा ही सुख की कर्त्ता और विकर्त्ता है। यह वाक्य आत्म-स्वतंत्र्य का पूर्ण परिचायक है। यदि परतंत्र हो तो फिर उसके वश में कुछ नहीं होगा, फिर वह दूसरों के हाथ की कठपुतली होगी। मुक्ति या निर्वाण की बात कोई तथ्य-संगत नहीं होगी। सुख-दुःख के निर्माण में उसे पूर्ण स्वतंत्रता है। परतंत्रता है तो सिर्फ इतनी ही कि कर्म का भोग न चाहने पर भी उसे भोगना पड़ता है, क्योंकि स्वयं उसने तथानुरूप कर्मों का संग्रह किया है। यह भी स्पष्ट है कि चेतन आत्मा अचेतन कर्म का संग्रह कैसे करे? कर्म ही कर्म को आकृष्ट करता है। संस्कार अन्य संस्कार के लिए द्वार खुला रखता है। उसी मार्ग से वे आते हैं और आत्मा को बाँधते हैं। वे जब आत्मा से अलग होते हैं। तब स्व-बोध के कारण आत्मा रागात्मक, द्वेषात्मक और मोहात्मक रूप में परिणत नहीं होती। जिस दिन अज्ञान का आवरण मंद, मंदतर और मंदतम हो जाता है, उसी दिन स्वबोध, आवरण क्षय और दुःख क्षय के लिए वह सहज हो जाता है। संस्कार (कर्म) उखड़ते हैं किंतु वह उन्हें सहारा नहीं देती, उनके साथ प्रवाहित नहीं होती। शनैः-शनैः संस्कारों का पथ उखड़ जाता है और आत्मा अपने मूलरूप में विराजमान हो जाती है। यही पूर्ण स्वातंत्र्य है।

(क्रमशः)

अवबोध

❑ मंत्री मुनि सुमेरमल 'लाडनूं' ❑

धर्म बोध

भाव धर्म

प्रश्न २७ : चार भाव कहाँ होते हैं?

उत्तर : क्षायिक सम्यक्त्वी गृहस्थ व सामायिक आदि चार चारित्र वालों में भाव चार—औदयिक, क्षायिक, क्षायोपशमिक, पारिणामिक।
औपशमिक सम्यक्त्वी यथाख्यात चारित्र वालों में भाव चार—क्षायिक भाव छोड़कर।

प्रश्न २८ : पाँच भाव कहाँ होते हैं?

उत्तर : क्षायिक सम्यक्त्वी औपशमिक चारित्र वालों में भाव पाँचों ही होते हैं। ये मात्र ग्यारहवें गुणस्थान में होते हैं।

प्रश्न २९ : पाँच भाव में ज्ञेय, हेय व उपादेय कितने हैं?

उत्तर : ज्ञेय पाँचों ही भाव हैं। हेय एक औदयिक भाव है। पारिणामिक भाव हेय व उपादेय दोनों हैं। शेष तीन भाव उपादेय हैं।

(क्रमशः)

उपासना

(भाग - एक)

❑ आचार्य महाश्रमण ❑

आचार्य तुलसी

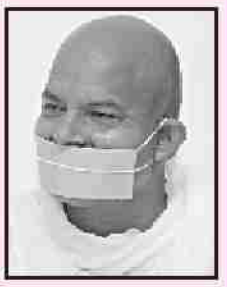

श्रमणोपासक कामदेव

श्रावक कामदेव चंपानगरी का निवासी था। उसकी पत्नी का नाम भद्रा था। कामदेव एक समृद्ध गृहपति था। उसके यहाँ छः कोटि सोनैया व्यापार में, छः कोटि सोनैया गृह उपकरणों में तथा छः कोटि सोनैया सुरक्षित निधि के रूप में जमीन में थीं। वह व्यापार के साथ-साथ कृषि कर्म भी किया करता था। उसके पास गौओं के छः गोकुल भी थे। प्रत्येक गोकुल में दस हजार गौएँ थीं। भगवान् महावीर के पास उसने और उसकी पत्नी भद्रा ने श्रावक धर्म स्वीकार किया और उसका निरतिचार पालन करने लगा। अवस्था के परिपाक के साथ-साथ गृहस्थी का सारा भार अपने ज्येष्ठ पुत्र को सौंपकर स्वयं धर्म क्रिया में लीन रहने लगा।

एक बार पौषधशाला में बैठा वह पौषध में तल्लीन था। उस समय एक मिथ्यात्वी देव आया। कामदेव को धर्म से विचलित करने के लिए महा भयंकर रौद्र पिशाच का रूप बनाया और फिर उसे मरणांतक उपसर्ग देते हुए कहा—'हे नराधम! तू तेरे व्रतों को छोड़। भगवान् महावीर का नाम रटना छोड़। आँख खोलकर मेरी ओर देख। अन्यथा अभी-अभी तलवार से तेरे शरीर के टुकड़े-टुकड़े करता हूँ।' यों कहकर तलवार का वार किया। पर कामदेव अविचल रहा।

तब क्रुद्ध होकर देव ने हाथी, सिंह, बाघ, सर्प आदि अनेक रूप बना-बनाकर भयंकर कष्ट दिए, पर कामदेव अपने प्रण पर अडोल रहा। तब देव अपने मूल रूप में कामदेव की स्तुति करता हुआ बोला—'कामदेव, तुम्हें धन्य है! तुम्हारी दृढ़ता को धन्य है! देवताओं की परिषद में स्वयं शक्रेन्द्र ने तुम्हारी दृढ़ता की प्रशंसा की थी। मुझे इंद्र की बात पर विश्वास न हुआ। इसलिए तुम्हारी दृढ़ता की परीक्षा लेने आया और तुम्हें उपसर्ग दिए। तेरी दृढ़ता वैसी ही है जैसी इंद्र ने बताई थी। मैं तुमसे क्षमायाचना करता हूँ।' यों कहकर देवता अपने स्थान को चला गया।

प्रातःकाल जब पौषधशाला में कामदेव ने प्रभु महावीर ने आगमन का संवाद सुना तब पौषध में ही दर्शनार्थ चल पड़ा। भगवान् महावीर ने कामदेव के उपसर्गों की चर्चा करते हुए, उसकी दृढ़ता को सराहते हुए साधु-सतियों को संबोधित करते हुए कहा—'आर्यो! गृहस्थवास में रहने वाला श्रमणोपासक भी देवकृत उपसर्गों में यों दृढ़ रह सकता है तब तुम लोगों को तो अविचल रहना ही चाहिए। कामदेव श्रावक ने धर्म-श्रद्धा का आदर्श उपस्थित किया है।'

कामदेव की दृढ़ता की चारों ओर प्रशंसा हुई।

कामदेव ने अपने पौषध को पूरा किया तथा वह अपने श्रावकधर्म में और भी दृढ़ रहने लगा। उसने क्रमशः श्रावक की ग्यारह प्रतिमाओं की आराधना की। अपने व्रतों का निरतिचार पालन करके अनशनपूर्वक समाधिमरण प्राप्त किया। सौधर्म स्वर्ग (प्रथम स्वर्ग) के अरुणाभ विमान में दिव्य-ऋद्धि वाला देव बना। वहाँ से महाविदेह क्षेत्र में उत्पन्न होकर मोक्ष प्राप्त करेगा।

श्रावक श्री बहादुरमलजी भंडारी

बहादुनमलजी भंडारी जोधपुर के प्रसिद्ध व्यक्तियों में से एक थे। जयाचार्य के समय में उन्होंने शासन की अनेक विशिष्ट सेवाएँ की थीं। वे जहाँ एक श्रावक थे, वहाँ प्रसिद्ध राज्य-कर्मचारी भी थे। कुछ समय के लिए वे जोधपुर-राज्य के दीवान भी रहे। वे जहाँ भी जिस कार्य के लिए नियुक्त किए गए, उन्होंने अपनी विशेष योग्यता की छाप छोड़ी। ऐसे निपुण व्यक्ति बहुत कम ही मिला करते हैं।

उनका जन्म अपने ननिहाल बोरावड़ में सं० १८७२ मिगसर कृष्णा द्वितीया को हुआ। उनके पिता भैरूंदासजी डीडवाना तहसील के दौलतपुरा ग्राम के निवासी थे। बाल्यकाल में बहादुरमलजी ने तत्कालीन शिक्षा पद्धति के अनुसार अक्षर-ज्ञान के अतिरिक्त प्रारंभिक गणित का भी थोड़ा-बहुत अध्ययन किया था।

(क्रमशः)

PDF Compressor Free Version

अखिल भारतीय
तेरापंथ टाइम्स
17 - 23 अप्रैल, 2023

✦ *व्यक्ति प्रसन्नता का आकांक्षी रहता है, परंतु वास्तविक और स्थायी प्रसन्नता तब प्राप्त हो सकती है, जब आदमी समता का अभ्यास कर लेता है।*

—आचार्यश्री महाश्रमण

विशेष आलेख

आध्यात्मिक वैज्ञानिक संत थे मुनि महेंद्र कुमारजी

❐ मुनि सिद्धप्रज्ञ ❐

आचार्यश्री तुलसी का एक सपना था कि ऐसा व्यक्तित्व तैयार हो, जिसमें अध्यात्म का विवेक एवं विज्ञान की शक्ति हो। क्योंकि कोरा अध्यात्म दूसरों का भला नहीं कर सकता तो कोरा विज्ञान खतरनाक होता है। अर्थात् एक ही व्यक्ति में दोनों तत्त्व होना ही आध्यात्मिक वैज्ञानिक व्यक्तित्व का निर्माण हो।

मैंने देखा और बहुत ही निकटता से देखा कि मुनि महेंद्रकुमार जी स्वामी ने जहाँ एक ओर अध्यात्म का जीवन जागरूकता से जीया। वैज्ञानिक संत होते हुए भी साधुचर्या के प्रति गहन आस्था एवं जागरूकता थी, फिर चाहे प्रसंग प्रतिक्रमण का हो या प्रतिलेखन का, आहार का हो या विहार का, प्रवचन का हो या वचन का, योग का हो या प्रयोग का, ज्ञान का हो या अवधान का, शयन का हो या भ्रमण का, सुबह हो या शाम, दिन हो या रात साधुचर्या के प्रति पूर्ण सजग थे। मैंने देखा इतने खुले विचार के संत होते हुए भी प्रतिक्रमण बहुत तन्मयता से करते थे। प्रतिक्रमण के दौरान कोई बात करता था, वंदना करता तो वे उसकी उपेक्षा कर देते थे। भावक्रिया के साथ प्रतिक्रमण आदि साधुचर्या में तल्लीन थे।

वैज्ञानिक संत : मुनिश्री के पिता श्री जेठालालजी जवेरी ने प्रेक्षाध्यान को वैज्ञानिक स्वरूप प्रदान किया था तो मुनिश्री ने जैन-दर्शन को विज्ञान के साथ तुलनात्मक अध्ययन कर तेरापंथ में एक विज्ञान की नई विधा को जन्म दिया। मुनिश्री ने दीक्षा के पूर्व ही बीएससी का अध्ययन प्राप्त कर लिया था। मुनिश्री संघ में ऐसे पहले संत थे जिन्होंने दीक्षित होने के पहले बीएससी की डिग्री प्राप्त कर ली थी। एक और वे विज्ञान के शोधकर्ता थे तो दूसरी ओर आगमों का इतना गहन अध्ययन कर तेरापंथ को वैज्ञानिक आधार प्रदान किया था। मुनिश्री की प्रेरणा एवं प्रयत्न से सैकड़ों साधु-साध्वी, समण-समणी, साधक-साधिकाओं ने अध्यात्म का जीवन जीते हुए विज्ञान का भी यथासंभव अध्ययन एवं अध्यापन किया। शरीर विज्ञान, जैन दर्शन और विज्ञान, शीर्ष पहेलिका, न्यूरो साइंस ऑफ कर्मा, विद्युत सचित या अचित? आदि पुस्तक उनकी वैज्ञानिक मस्तिष्क की उपज की देन थी। उनके वैज्ञानिक विचारधारा से प्रभावित होकर साधु समाज उन्हें वैज्ञानिक संत की उपमा दिया करते थे और बातचीत में कहते थे ये हैं आध्यात्मिक-वैज्ञानिक व्यक्तित्व।

प्रेक्षा प्राध्यापक : प्राध्यापक को अंग्रेजी में प्रोफेसर कहते हैं। प्रो० मुनिश्री ने अपना पूरा जीवन अध्ययन एवं अध्यापन में लगाया। उन्होंने प्रेक्षाध्यान एवं जीवन विज्ञान को वैज्ञानिक स्वरूप प्रदान करने में अपनी अहर्निश भूमिका निभाई। मुझे भी प्रेक्षाध्यान को अंग्रेजी भाषा में कराने का अभ्यास कराया। सन् १९८८ में आचार्य तुलसी का चौमासा जब डूंगरगढ़ था उस समय जीवन विज्ञान भवन में मुझे और समण स्थितप्रज्ञजी व श्रुतप्रज्ञजी मेरे साथ थे हम तीनों को अंग्रेजी भाषा में प्रेक्षाध्यान के प्रयोग कराए तथा तेरापंथ दर्शन आदि को अंग्रेजी भाषा में कैसे प्रस्तुत करें, इसका अच्छा ज्ञान कराया। मुनिश्री ने उस समय हमारे ऊपर काफी श्रम परिश्रम करके हमें विदेश में प्रचार-प्रसार करने के लिए तैयार किया। मुनिप्रवर का यह उपकार हम कभी विस्मृत नहीं कर सकते। सन् १९८९ में लाडनूं चौमासा में योगक्षेम वर्ष की आयोजना की गई। उस आयोजन को सफल एवं सुफल बनाने में मुनिश्री का बहुत योगदान रहा। मुनिश्री के श्रम और कार्य से प्रभावित होकर आचार्य तुलसी ने मुनिश्री को प्रेक्षा प्राध्यापक संबोधन प्रदान किया।

आगम मनीषी : मुनि महेंद्रकुमारजी ने आचार्य तुलसी से सुजानगढ़ में मुनि दीक्षा लेते ही अनेकों विषयों का अध्ययन करना शुरू कर दिया था। मुनिश्री ने अपना आधे से अधिक जीवन जैन आगमों का अध्ययन, अध्यापन, संपादन, अनुवाद आदि में बिताया। उन्होंने अनेकों आगमों का अंग्रेजी भाषा में अनुवाद करके जैन शासन की अभूतपूर्व प्रभावना की। भगवती जैन विशल और गूढ़ सूत्र का अनुवाद करना बहुत दुर्लभ काम था। अब तक भगवती के ६ भागों का अंग्रेजी में अनुवाद प्रकाशित कराकर एक महान काम किया। मुनिश्री ने आचार्य तुलसी, आचार्य महाप्रज्ञजी एवं आचार्य महाश्रमण जैसे देव दुर्लभ महान आचार्यों के शासनकाल में आगमों का विशेष कार्य किया। आचार्यश्री महाप्रज्ञ जी ने २००४ के जलगाँव मर्यादा महोत्सव पर मुनिश्री को आगम मनीषी संबोधन प्रदान किया। सचमुच तेरापंथ ही नहीं संपूर्ण जैन संप्रदाय मुनिश्री के आगम के कार्य को सदा स्मरण रखेगा। सचमुच वे आगम मनीषी संत थे। आगम का कार्य करके उन्होंने तीनों आचार्यों की बहुत अच्छी कृपा प्राप्त की।

ज्ञान की पराकाष्ठा : मुनिश्री अनेक देशी तथा विदेशी भाषाओं के जानकार थे। जब भी आचार्यों की पावन सन्निधि में अंतर्राष्ट्रीय या राष्ट्रीय कॉन्फ्रेंस, सेमिनार या शिविर होते थे सब मुनिश्री गुरुओं की वाणी का अंग्रेजी भाषा में तत्काल बहुत अच्छे एवं प्रभावी ढंग से अनुवाद करते थे तो विद्वान लोग उनकी बातों को सुनकर बहुत प्रसन्न व प्रभावित होते थे। अंग्रेजी आदि अनेकों भाषाओं के बहुत अच्छे जानकार होने से उन्होंने आचार्य तुलसी, आचार्य महाप्रज्ञजी व आचार्यश्री महाश्रमण जी की अनेकों पुस्तकों का, ग्रंथों का, आगमों का, भाष्यों का, अंग्रेजी व गुजराती भाषाओं में अनुवाद कर तेरापंथ में एक अमूल्य धरोहर प्रदान की थी। मुनिश्री स्वाध्यायप्रिय एवं एक प्रभावी प्रवचनकार भी थे। वे एक उच्च कोटि के मूर्धन्य साहित्यकार भी थे।

प्रोफेसर संत : आचार्यश्री तुलसी का पूरा जीवन बहुआयामी जीवन था। उनका एक सपना था—जैन विश्व भारती। विश्व भारती समाज की कामधेनु होने से अनेकों लोगों को वहाँ सहज ही रोजगार एवं सेवा देने का मौका मिलता था। आचार्यश्री तुलसी ने अपने कर्तृत्व व्यक्तित्व एवं वक्तव्य से जैन विश्व भारती में विश्वविद्यालय की स्थापना की। यह संपूर्ण जैन इतिहास में पहली दुर्लभ घटना थी जब वहाँ जैन विश्व भारती मान्य विश्वविद्यालय को भारत सरकार से मान्यता प्राप्त हुई। आचार्यश्री तुलसी के इस दिव्य स्वप्न को साकार कराने में मुनिश्री ने भागीरथ प्रयत्न किया था। जहाँ एक ओर मुनिश्री विज्ञान के शोधकर्ता थे तो वहीं दूसरी ओर दर्शन एवं अध्यात्म के कुशल पारखी भी थे। उन्होंने अपनी ज्ञान चेतना, दर्शन एवं चरित्र की आराधना कर सर्वांगीण विकास किया था। जैविभा यूनिवर्सिटी ने मुनिश्री को मानद प्रोफेसर की उपाधि से नवाजा था। मुनिप्रवर का योगदान विश्वविद्यालय परिवार कभी विस्मृत नहीं कर सकता। उन्होंने विश्व भारती में रहकर वर्षों तक अध्ययन एवं अध्यापन किया।

बहुश्रुत संत : मुनि महेंद्रकुमारजी स्वामी ने छोटी उम्र में मुनि दीक्षा लेकर गहन अध्ययन करना शुरू कर दिया था। वे अंग्रेजी, संस्कृत, प्राकृत, मराठी, गुजराती, फ्रेंच, इटालियन आदि अनेकों भाषाओं के जानकार थे। भाषा पर, उच्चारण पर अच्छा अधिकार होने से दलाईलामा, राष्ट्रपति डॉ० कलाम, डॉ० नत्रमल टाटिया, डॉ० दयानंद भार्गव, दूरदर्शन के निर्देशक मधुकर लेले अनेक वाइस चांसलर, डॉक्टर, प्रोफेसर वैज्ञानिक, राजनीतिज्ञ रशियन, जापानी, अमेरिका आदि देशों के लोग आदि अनेक प्रबुद्ध वर्गों के विशिष्टजन तेरापंथ धर्मसंघ के आयामों से तहेदिलों से जुड़ गए थे। अध्यात्म एवं विज्ञान के समन्वयक मुनिश्री अनेक योग्यता से संपन्न थे। उनकी योग्यता का अंकन एवं मूल्यांकन करते हुए सन् २०१२ में राजलदेसर मर्यादा महोत्सव पर आचार्यश्री महाश्रमण जी ने उन्हें बहुश्रुत परिषद का सदस्य बनाया। फिर सन् २०२० में मुनिश्री को बहुश्रुत परिषद का संयोजक मनोनीत किया था। मुनिश्री पिछले ६ सालों से मुंबई में प्रवासित थे। जब उन्हें इस बात की जानकारी मिली कि आचार्यप्रवर औरंगाबाद पधारेंगे तो मुनिश्री ने आचार्यप्रवर से अनुज्ञा प्राप्त कर मुंबई से विहार कर पुना तक पहुँच गए पर दुर्भाग्य से कोरोना काल होने से मुनिश्री पुना से वापस मुंबई पधार गए।

मुंबई में दीर्घ प्रवास का कीर्तिमान बनाया : सन् २०१५ में स्वास्थ्य की दृष्टि से मुनिश्री को आचार्यप्रवर अपने ५ सहयोगी संतों के साथ में मुंबई के लिए अनापत्ति स्वीकृति प्रदान की। मुंबई को लगातार ६ साल तक प्रवास करने वाले मुनिश्री पहले संत थे। मुनिश्री ने अपनी प्रज्ञा एवं परिश्रम से मुंबई में एक ऐसा वातावरण बनाया कि आचार्यप्रवर ने इस वर्ष २३ का चातुर्मास मुंबई घोषित कर दिया। जब गुरुदेव ने अपना चौमासा फरमाया तब से मुनिश्री गुरुदेव के चौमासे की तैयारी में लगे हुए थे। पर कुदरत को कुछ और ही मंजूर था। मात्र २ माह की ही देरी थी। मुनिश्री के मन में बड़े-बड़े ख्वाब थे, गुरुदेव के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित करना और युगप्रधान के रूप में आचार्यप्रवर का वर्धापन करना पर नियति को कुछ और ही मान्य था।

मुझे भी साथ रहने का मौका मिला : सर्वप्रथम मुझे मुनिश्री की सन्निधि १९८२ में लाडनूं में फिर योगक्षेम वर्ष में तुलसी अध्यात्म नीडम में लंबे समय तक फिर ९८ में दिल्ली में। एक बार की बात है सन् २००८ में मुझे दो माह तक जैविभा, लाडनूं में मुनिश्री के सान्निध्य निर्देशन में रहने का मौका मिला। एक बार मुनिश्री के अचानक पेट में तकलीफ हो गई थी। तब मुनिश्री को मंगलम में भर्ती किया गया। मुझे भी समण श्रेणी में रहते हुए साथ में रहने का सहज ही मौका मिला था। जब आचार्य महाप्रज्ञजी को पता चला कि महेंद्र मुनि बीमार हो गए और हॉस्पिटल में हैं तो आचार्य का संदेश फैक्स आया कि "मुझे पता चला कि महेंद्र मुनि अस्वस्थ हो गए तो मुझे सुनकर जोरदार झटका लगा।" इससे बड़ी और क्या कृपा होगी आचार्यों की। सन् २०१८ में मुझे मुनिश्री के साथ थाना मुंबई में रहने का अच्छा मौका मिला। उस समय श्रद्धानिष्ठ श्रावक विमल सोनी का बहुत अच्छा सहयोग रहा। मैंने देखा मुनिश्री कोई भी समस्या या विवाद उत्पन्न होता तो उसके समाधान का अच्छा तरीका निकाल लेते थे। मुझे मुनिश्री से बहुत कुछ सीखने का अवसर प्राप्त हुआ।

मैंने देखा तपस्वी संत मुनि अजित कुमारजी स्वामी ने इतने लंबे समय तक उनके पास जो छाया की तरह रहते थे बहुत चित्त समाधि में सहयोग किया। ये बहुत बड़ी बात है कि उनके सहयोगी मुनि अमृत कुमारजी, मुनि अभिजीत कुमारजी, मुनि जागृतकुमार जी व मुनि सिद्धकुमारजी ने लंबे समय तक रहकर एक ओर मुनिश्री की बहुत अच्छी सेवा की तो दूसरी ओर सभी संतों ने बहुत अच्छा विकास किया। मुनि जम्बूकुमारजी स्वामी जिन्होंने सेवा और अध्ययन के लिए अपना सब कुछ अर्पण कर दिया था सभी ने बहुत अच्छी सेवा की। सभी के प्रति बहुत-बहुत साधुवाद। एक शब्द में कहना चाहिए मुनि महेंद्रकुमार जी द्वितीय नहीं अद्वितीय संत थे।

आचार्यश्री तुलसी का महनीय अवदान है - अणुव्रत

गंगाशहर।

तुलसी शांति प्रतिष्ठान समाधि स्थल परिसर में गुरुदेवश्री तुलसी की मासिक पुण्यतिथि पर मुनि चैतन्य कुमार जी 'अमन' ने कहा कि आचार्यश्री तुलसी का महनीय अवदान है—अणुव्रत। नैतिकता और चरित्र के पुनरुत्थान में अणुव्रत आंदोलन का विशेष योगदान रहा है। प्रत्येक आंदोलन का एक आदर्श होता है। अणुव्रत का आदर्श है—संप्रदायातीत मानव धर्म का प्रवर्तन। जो मानवीय हितों को बल देने वाला है। अहिंसा, शांति, सद्भाव, मैत्री को बढ़ावा देने वाले इस आंदोलन ने व्यक्ति, समाज और राष्ट्र की दूरियों को कम करने में अपनी महत्त्वपूर्ण भूमिका अदा की है।

मुनि चैतन्य कुमार जी ने कहा कि उपासना तो बढ़ी है किंतु आचरण युक्त धर्म घट रहा है। इंटरनेट, मोबाइल के इस युग में संस्कारों की हानि हो रही है। आपसी व्यवहार छूट रहे हैं। आचरण शून्य धर्म व्यक्ति को भटकाव तथा भुलावे की ओर ले जा रहा है। अतः गुरुदेवश्री तुलसी के अनुसार धर्म को उपासना के साथ आचरण में लाने का प्रयास करने की आवश्यकता है।

मुख्य वक्ता डॉ० बबिता जैन ने कहा कि आचार्य तुलसी के अवदानों में एक अवदान है—शिक्षा। शिक्षा जगत में मान्य संस्थान जैन विश्व भारती विश्वविद्यालय जैन धर्म दर्शन को समर्पित है। जिसके माध्यम से अनेक छात्र-छात्राओं ने जैन विद्या और जीवन विज्ञान के क्षेत्र उत्कृष्ट कार्य किया है और कर रहे हैं। दार्शनिक और प्रायोगिक शिक्षा से आज के युवाओं में परिवर्तन घटित हो रहा है। जैन और जैनेत्तर वर्ग के विद्यार्थी युवा इसके माध्यम से अपना अच्छा कैरियर बनाने के लिए प्रयत्न करें।

मुनि श्रेयांस कुमार जी ने गुरुदेव तुलसी की अभ्यर्थना में गीत प्रस्तुत किया। मुनि प्रबोध कुमार जी, मुनि विमल विहारी जी ने विचार व्यक्त किए। मंगलाचरण महिला मंडल ने गीत के संगान से किया। शांति प्रतिष्ठान के अध्यक्ष हंसराज डागा ने स्वागत किया। आभार संस्थान के मंत्री किशन बैद एवं कार्यक्रम का संचालन कविता जैन ने किया।

PDF Compressor Free Version

✦ *ध्यान व जप करना साधना है तो मेरा चिंतन है हर क्रिया में समत्व का अभ्यास रहे तो चलना, बोलना, लिखना आदि भी साधना हो सकती है।*

—आचार्यश्री महाश्रमण

अखिल भारतीय
तेरापंथ टाइम्स
17 - 23 अप्रैल, 2023

आचार्य महाप्रज्ञ के १४वें महाप्रयाण दिवस पर विशेष आलेख

संपूर्ण मानव जाति के लिए प्रेरणा स्रोत थे आचार्य महाप्रज्ञ

❐ मुनि चैतन्य कुमार 'अमन' ❐

भारतीय परंपरा में अनेक ऋषि, महर्षि, संत, महंत, निर्ग्रन्थ व आचार्य हुए हैं, जिन्होंने अपनी आत्म साधना के साथ जन-मानस को कृतार्थ किया था। जो आज भी विश्व मानव के लिए प्रेरणा स्रोत बने हुए हैं। उनका विराट व्यक्तित्व और कर्तृत्व संपूर्ण जैन समाज ही नहीं बल्कि मानव मात्र के लिए पथदर्शक है। उन महान विभूति का नाम है—तेरापंथ धर्मसंघ के दशम अनुशास्ता आचार्यश्री महाप्रज्ञ। आचार्यश्री महाप्रज्ञ अनेक विशेषताओं को लिए हुए थे। वे अपने दीक्षा गुरु के प्रति सर्वात्मना समर्पित थे। दीक्षित होते ही पूज्य गुरुदेव कालूगणी ने ज्ञानार्जन हेतु अपने सुशिष्य मुनि तुलसी को सौंप दिया। आचार्य महाप्रज्ञ का जैसा समर्पण भाव कालूगणी के प्रति था वैसा ही शिक्षा गुरु मुनि तुलसी के प्रति रहा। उनकी एक ही भावना थी—'आणाए मामगं धम्मं' आगम का यह वाक्य उनका जीवन सहचर बन गया अर्थात् गुरु आज्ञा ही मेरा परम धर्म है। इसीलिए जब एक बार गुरु तुलसी ने आचार्य बनने के बाद पूछा—क्या तुम मेरे जैसा बनोगे तो महाप्रज्ञ ने सहज भाव से कहा—आप बनाओगे तो बन जाऊँगा। यह था उनका समर्पण भाव! उन्होंने गुरु के प्रति बहुमान और अटूट श्रद्धा का भाव रखा और उसी में अपूर्व आनंद की अनुभूति की।

कुछ लोग ऐसे होते हैं, जिनमें साधना होती है पर विद्वता नहीं, तो कुछ में विद्वता होती है पर साधना नहीं। आचार्य महाप्रज्ञ में साधना और विद्वता दोनों का समावेश था। उन्होंने ज्ञानार्जन के द्वारा विद्वता हासिल की तो प्रेक्षाध्यान के नित नए प्रयोगों से गहन साधना की। साधना की गहराई में उतरकर अन्वेषण कर अनेक उपलब्धियाँ हासिल की। इतने उद्भट विद्वान होने के बावजूद वे कभी लोकेषणा में नहीं गए। वे एक ऐसे अनगार थे, जिनमें अहंकार और आवेश का भाव नहीं था। वे स्वयं कहा करते थे कि मुझे पता नहीं कि कभी जीवन में किसी बात को लेकर मेरे मन में अहंकार अथवा आवेश के भाव आए हों। ऐसा व्यक्ति ही साधना के क्षेत्र में विकास कर सकते हैं।

आचार्य महाप्रज्ञ ऋजुप्राज्ञ थे। सरलता तो उनके रग-रग में थी। बचपन से ही वे भद्र प्रकृति थे। सरलता के साथ उनमें सहनशीलता का भी समावेश था। जैसा कि आचार्य तुलसी ने अनेक परिस्थितियों को समभाव से सहन की थी। उनके साथ रहकर आचार्य महाप्रज्ञ ने भी बहुत कुछ सहन किया था। सरलता और सहनशीलता के सद्गुण ने ही अपने गुरु तुलसी के दिल में एक विशिष्ट स्थान बना लिया था। यों कहा जाए तो अत्युक्ति नहीं होगी कि वे गुरुदेवश्री तुलसी के दिल में उतर गए। अनुकूल व प्रतिकूल दोनों ही परिस्थिति में समभाव रखा और यही बना उनका महान लक्ष्य।

यद्यपि वे एक धर्मसंघ के आचार्य बने पर उनका चिंतन सदैव ही असांप्रदायिक ही रहा। संप्रदाय को ये संघीय व्यवस्था मानते थे। उनके कार्य जैन शासन की प्रभावना तथा मानवता की सेवा के संदर्भ में थे। इसी बात को सामने रखकर सदा अपने प्रवचनों में सार्वभौम और सार्वजनीय हितोपदेश के रूप में कराते थे। यहाँ तक जीवन के आठवें दशक में उन्होंने अहिंसा यात्रा की सत्वेषु मैत्री की प्रबल भावना से उन्होंने पंचवर्षीय यात्रा के दौरान जन-जन को नैतिकता, सद्भावना और भाईचारे का संदेश दिया। जातिवाद, प्रांतवाद, संप्रदायवाद व्यक्ति और समाज में अलगाव पैदा करता है। अतः इसे कभी महत्त्व नहीं दिया। अतः भारत की अनेक महान हस्तियाँ उनके चरणों में आकर मार्गदर्शन प्राप्त करती थीं। चाहे वे राजनेता, समाजनेता, धर्मगुरु आदि किसी संस्था या संघ से जुड़े हुए क्यों नहीं थे। एक बार राष्ट्रपति अब्दुल कलाम उनके चरणों में आए तो महाप्रज्ञ ने एक ऐसी बात कही कि वे महाप्रज्ञ के फैन हो गए। महाप्रज्ञ ने कहा—कलाम साहब आपने अनेक मिसाईलें बनाई हैं, किंतु अब शांति की मिसाईल बनाइए। इस बात से वे इतने प्रभावित हुए कि प्रतिवर्ष महाप्रज्ञ के चरणों में आने लग गए। जब सूरत में आचार्य महाप्रज्ञ चातुर्मास करवा रहे थे तो वे अपना जन्मदिन मनाने व आशीर्वाद लेने पहुँच गए और एक शानदार कार्यक्रम आयोजित हुआ। फिर एक पुस्तक का निर्माण हुआ जो आचार्य महाप्रज्ञ और अब्दुल कलाम की संयुक्त सम्मिलित रूप में प्रकाशित हुई।

आचार्य महाप्रज्ञ द्वारा आगम संपादन के साथ साहित्य के क्षेत्र में दो सौ से अधिक पुस्तकें प्रकाशित हुई हैं। उनका वह साहित्य आज भी जन-जन का मार्गदर्शन कर रहा है। हम उनके महाप्रयाण के अवसर पर यही भावना करते हैं कि उनके द्वारा प्राप्त अवदानों से अपनी साधना वैभव को बढ़ाते रहे तथा उनकी आचार-निष्ठा, संयम-प्रियता, सरलता, गंभीरता, सहिष्णुता के साथ मानवता, नैतिकता व भाईचारे की भावना को विकसित कर सकें। हम भी जीएँ संयम से, चलें सजगता से---कहें सुगमता से रहें निस्पृहता से, सहे सहिष्णुता व समता से, मानें कृतज्ञता से। उन कुशल नेतृत्व प्रदानकर्ता आचार्यश्री महाप्रज्ञ के प्रति उनके १४वें महाप्रयाण दिवस पर कृतज्ञ भाव से चैतन्य का वंदन-वंदन-वंदन।

भगवान महावीर के सिद्धांत वर्तमान में प्रासंगिक है

तिरुपति।

आंध्र प्रदेश के तिरुपति शहर के जैन मंदिर में भगवान महावीर के २६२२वें जन्म कल्याणक समारोह का आयोजन मुनि दीप कुमार जी एवं मूर्तिपूजक संप्रदाय के आचार्य श्रीमद् विजय तीर्थ भद्रसुरीश्वरजी के शिष्य मुनि तीर्थ बोधिविजय जी के संयुक्त सान्निध्य में श्री जैन संघ तिरुपति एवं विजयनगर, बैंगलोर सभा द्वारा हुआ। कार्यक्रम में उपस्थिति अच्छी रही।

मुनि दीप कुमार जी ने कहा कि विश्व में अनेक व्यक्ति जन्म लेते हैं, पर सबकी जयंतियाँ नहीं मनाई जाती। जयंतियाँ उनकी मनाई जाती है जो अंधकार में निमग्न संसार को सत्य का प्रकाश दिखाते हैं। भगवान महावीर ऐसे ही महापुरुष थे।

मुनिश्री ने आगे कहा कि भगवान महावीर के सिद्धांत वर्तमान युग में प्रासंगिक हैं। अहिंसा, अपरिग्रह और अनेकांत।

मुनि तीर्थबोधिविजय जी ने कहा कि भगवान महावीर का जन्म कल्याणक हमें प्रभु के प्रति कृतज्ञता व्यक्त करने का अवसर दे रहा है।

कार्यक्रम में तिरुपति की तेरांपथी बहनों ने गीत का संगान किया। पवन सिंघी, नवरत्न सिंघी, महावीर बाफना, आदिश गादिया, सभा अध्यक्ष विजयनगर-बैंगलोर के प्रकाश गांधी, तेयुप अध्यक्ष विजयनगर श्रेयांस गोलछा, तेममं मंत्री विजयनगर सुमित्रा बरड़िया, अक्षरा बाबेल आदि ने अपने-अपने विचार रखे।

कार्यक्रम का संचालन बाल मुनि काव्य कुमार जी ने किया।

भगवान महावीर का संयममय जीवन का सिद्धांत आज की अधिकतम समस्याओं का समाधान कर सकता है

दिल्ली।

जैन श्वेतांबर तेरापंथी सभा, दिल्ली, अग्रवाल मित्र परिषद् एवं अखिल भारतीय अणुव्रत न्यास के संयुक्त तत्त्वावधान में अणुव्रत भवन में शासनश्री साध्वी संघमित्रा जी के मंगल मंत्रोच्चार से 'अपरिग्रह और अर्थव्यवस्था' विषय पर विचार गोष्ठी का आयोजन हुआ। कार्यक्रम में शासनश्री साध्वी शीलप्रभाजी ने संयम को धर्म का मूल आधार बताया और सभी को संयमित जीवन जीने की प्रेरणा दी।

कार्यक्रम के मुख्य वक्ता प्रो० संगीत रागी (राजनीतिज्ञ विभागाध्यक्ष दिल्ली विश्वविद्यालय) ने वर्तमान युग की परिस्थितियों के परिप्रेक्ष्य में अपरिग्रह के सिद्धांत को प्रासंगिक बताया। स्वागत वक्तव्य व परिचय दिल्ली सभा के अध्यक्ष सुखराज सेठिया ने देते हुए भगवान महावीर के जीवन-दर्शन पर प्रकाश डाला। अखिल भारतीय अणुव्रत न्यास के प्रबंध न्यासी के०सी० जैन ने भगवान महावीर के अपरिग्रह के संदेश की महत्ता पर प्रकाश डाला।

कार्यक्रम अध्यक्ष प्रो० पवन सिन्हा 'गुरुजी' ने कहा कि छोटे-छोटे संकल्पों के द्वारा महावीर के संदेश को जीवन में उतारकर हम अपने जीवन को सार्थक बनाएँ। इस कार्यक्रम में देश के प्रसिद्ध मनोवैज्ञानिक एवं एसोसिएशन ऑफ इंडियन यूनिवर्सिटी के ज्वाइंट सेक्रेटरी के पद पर कार्यरत डॉ० आलोक मिश्रा की उपस्थिति रही।

अंतर्राष्ट्रीय कवि और गीतकार गजेंद्र सोलंकी ने काव्यपाठ करते हुए अहिंसा-अपरिग्रह और अनेकांत के चिंतन को अणुव्रत का चिंतन बताया। अग्रवाल मित्र परिषद् के अध्यक्ष संजय जैन ने उपस्थित सभी महानुभावों का धन्यवाद ज्ञापित किया। मंच का संचालन सुप्रसिद्ध कवि राजेश चेतन ने किया।

जैन श्वेतांबर तेरापंथी सभा दिल्ली, अग्रवाल मित्र परिषद् एवं अखिल भारतीय अणुव्रत न्यास द्वारा सभी वक्ताओं एवं गणमान्य व्यक्तियों का मोमेंटो एवं शॉल से सम्मान किया गया। कार्यक्रम के संयोजक नत्थूराम जैन, महामंत्री प्रमोद घोड़ावत, समाजभूषण मांगीलाल सेठिया, न्यासी शांति कुमार जैन, डालमचंद बैद, सुभाष जैन, कमल जैन आदि अनेक गणमान्य महानुभावों की उपस्थिति रही।

क्रांति के पुरोधा - भगवान महावीर

रामपुराफूल।

महावीर जयंती का समारोह साध्वी कनकरेखा जी के सान्निध्य में संपन्न हुआ। परमेष्ठि स्तुति के साथ साध्वीश्री जी ने कार्यक्रम का शुभारंभ किया। स्वागत भाषण के साथ सभामंत्री सुरेंद्र बंसल ने बाहर से समागत समस्त अतिथियों का स्वागत किया।

साध्वी कनकरेखा जी ने कहा कि भगवान महावीर का संपूर्ण जीवन अहिंसा, संयम, तप-त्याग से सजा हुआ था। वह ऐसे समय में आए, जब अहिंसा की जगह हिंसा का तांडव नृत्य हो रहा था, आतंक भ्रष्टाचार का बीभत्स रूप छाया हुआ था। समाज विविध बुराइयों का शिकार हो चुका था। ऐसे समय में भारतभूमि किसी महापुरुष की प्रतीक्षा में थी। क्रांति के पुरोधा भगवान महावीर ने मानव कल्याण के लिए तीन महत्त्वपूर्ण अवदान दिए—अहिंसा, अनेकांत, अपरिग्रह। इन तीनों सिद्धांतों को पहले आपने जीया। इन सिद्धांतों की आज विशेष जरूरत है। इस अवसर पर साध्वी गुणप्रेक्षाजी, साध्वी संवरविभा जी, साध्वी केवलप्रभा जी व साध्वी हेमंतप्रभा जी ने भगवान महावीर के प्रति श्रद्धा समर्पित करते हुए सिम्पोजियम की प्रस्तुति दी। स्थानीय महिला मंडल, कन्याओं ने सुमधुर कव्वाली के साथ परिसंवाद की प्रस्तुति दी।

रामपुराफूल जय तुलसी अणुव्रत पब्लिक स्कूल के प्रिंसिपल उर्मिला बंसल, स्कूल की अन्य शाखा से प्रिंसिपल पूनम अत्री ने अपने विचार व्यक्त किए। टीचर्स ग्रुप ने महावीर के स्वप्नों की सुंदर झाँकी प्रस्तुत की। स्कूल के बालक-बालिकाओं द्वारा नमस्कार महामंत्र की मुद्रा सहित प्रस्तुति दी। साध्वी हेमलता जी ने अपने विचार रखे।

सरगम स्वरों के साथ तमन्ना व हेजल ने गीत के स्वर मुखरित किए। इसके पश्चात् तेरापंथ पंजाब-प्रांतीय समिति के अध्यक्ष, कार्यक्रम के मुख्य अतिथि केवलचंद बंसल, अतिथि विजयराज चोपड़ा ने अपने विचार रखे। साध्वी गुणप्रेक्षाश्री जी ने संचालन किया। साध्वीवृंद ने सुमधुर स्वरों के साथ मंगलाचरण किया। इस अवसर पर सुनाम, तपामंडी से श्रद्धालुओं की उपस्थिति रही। स्थानीय सभा, परिषद, महिला मंडल सभी ने उत्साह से भाग लिया। प्रवीण जैन ने आभार ज्ञापन किया।

हनीव शबीना ने भजन की प्रस्तुति दी। कार्यक्रम से पूर्व अहिंसा रैली जयनारों के साथ शहर के मुख्य मार्गों से होती हुई परिषद् के रूप में परिणत हो गई। दीपक, प्रधान सुभाष, मोहन, पवन, हैप्पी, हरीश, रामगोपाल, संदीप, महेश आदि ने सक्रियता के साथ भाग लिया।

PDF Compressor Free Version

अखिल भारतीय
तेरापंथ टाइम्स
17 - 23 अप्रैल, 2023

✦ समता की साधना जैन-अजैन सबके लिए उपयोगी होती है। समता धर्म है और विषमता पाप है।
—आचार्यश्री महाश्रमण

प्रो. मुनि महेंद्र कुमारजी के प्रति आध्यात्मिक उद्गार

मुनि महेंद्र कुमार जी के प्रति उद्गार

● मुनि कमल कुमार, मुनि अमन कुमार, मुनि नमि कुमार ●

बहुश्रुत परिषद् के संयोजक प्रेक्षाध्यापक प्रोफेसर मुनि महेंद्र कुमार जी स्वामी बी०एस०सी० से उत्तीर्ण होकर दीक्षा लेने वाले प्रथम संत थे। आपकी दीक्षा पूज्य गुरुदेवश्री तुलसी के करकमलों से हुई। दीक्षा के पश्चात आप अध्ययन और साधना की गहराई में गहरे उतरे, आपके द्वारा लिखित, संपादित ग्रंथ सबके लिए पठनीय और संग्रहणीय हैं। आचार्यश्री तुलसी, आचार्यश्री महाप्रज्ञ जी, आचार्यश्री महाश्रमण जी की आप पर निरंतर कृपा, करुणा बरसती रही। आपने अपनी कर्मजा शक्ति का भरपूर प्रयास करके संघीय आयामों को जो गति प्रदान की है वह चिरस्मरणीय रहेगी। आपको अनेक भाषाओं का तलस्पर्शी ज्ञान था। आपका वक्तव्य, लेखन अपने आपमें प्रशंसनीय ही नहीं हम सभी के लिए अनुकरणीय है। स्वाध्याय, ध्यान, जाप, कायोत्सर्ग का निरंतर अभ्यास प्रयोग चलता रहता था आपने इस अवस्था में भी अपने को पूर्ण सक्रिय और हर तरह से सक्षम बना रखा था। पूज्यप्रवर के स्वागत की तैयारी में अहर्निश लगे हुए थे। ऐसा मुंबई से आने वाले बता रहे थे। परंतु आयुष्य के आगे किसी का अब तक जोर नहीं चला है। हम काठमांडू से दिल्ली आए तब आपने हमें द्वारका तक २५ किलोमीटर स्वयम् संतों सहित पहुँचाया। कोलकाता जाते समय सूर्यनगर तक अजित मुनि को भेजा। मुंबई चातुर्मास एवं प्रवास में आठ बार मिलन हुआ।

आपकी सत् शिक्षा, प्रमोद भावना हमें सदा आपकी स्मृति दिलाती रहेगी। मुनि अजित कुमार जी को लंबे समय तक आपकी सेवा-उपासना, सुश्रुसा का अवसर मिला, यह उनके सौभाग्य की बात है। डॉ० मुनि अभिजीत कुमार जी को आपने विशेष रूप से तैयार किया है, यह गौरव का विषय है। मुनि जंबू कुमार जी को भी उत्तम अवसर मिल गया। मुनि जागृत कुमार जी, मुनि सिद्ध कुमार जी भी संस्कृतज्ञ बन गए। यह सब आपकी कृपा का फल मानता हूँ। स्मृति सभा में उपस्थित दिल्ली के श्रद्धालु भी आपकी कृपा को सदैव याद रखते हैं। आपके अनेक चातुर्मास प्रवास स्वतंत्र और तीनों ही आचार्यों के साथ हो चुके हैं। आपकी क्षतिपूर्ति करने वाले अनेक संत हों जिससे धर्मसंघ उत्तरोत्तर विकास करता रहे एवं आपके लिए भी हम यह मंगलकामना करते हैं कि आप भी अपने चरम लक्ष्य को अति शीघ्र प्राप्त करें।

सहज साधुता व फक्कड़ बाबा का जीवंत रूप थे - मुनि महेंद्र कुमारजी

● मुनि अनंतकुमार ●

तेरापंथ धर्मसंघ में अनेक सेवाभावी, तपस्वी, विद्वान और आत्मार्थी संत हुए हैं। जिन्होंने अपना जीवन संघ सेवा में समर्पित कर दिया। इन्हीं समर्पित संतों में एक विशिष्ट नाम है–आगम मनीषी मुनि महेंद्रकुमारजी स्वामी।

– तेरापंथ के वरिष्ठ व प्रभावशाली संतों में एक थे।
– १८ भाषाओं को जानने वाले एकमात्र संत थे।
– मुंबई से दीक्षित प्रथम संत थे।
– इंजीनियरिंग जैसी डिग्री प्राप्त प्रथम संत थे।
– अध्यात्म व विज्ञान की तुलनात्मक प्रस्तुति देने वाले श्रेष्ठ संत थे।
– वर्तमान संतों में सर्वाधिक ज्ञानी संत थे।
– सहज साधुता व फक्कड़ बाबा का जीवन रूप थे मुनि महेंद्र कुमारजी स्वामी।

ऐसे तेजस्वी, ओजस्वी, वर्चस्वी व यशस्वी मुनिप्रवर को जब भी मैं वंदना करता वह मुझसे गुजराती में बात करते थे। यदा-कदा कहा करते थे कि मेरे बाद के अभी कच्छी संत तुम ही हो। कच्छ के लोगों की तरह तत्त्वज्ञान करना है। मंत्री मुनिश्री की खूब सेवा करना है। उन्हें पूरी चित्त समाधि पहुँचाना है।

मुनि महेंद्रकुमारजी स्वामी आज हमारे बीच में नहीं रहे परंतु उनकी विरल विशेषताएँ और हित शिक्षाएँ उनकी विद्यमानता को जीवंत कर रही हैं।

बहुश्रुत परिषद के संयोजक मुनि महेंद्रकुमारजी स्वामी का परमपूज्य आचार्यप्रवर से मिलन से पूर्व देवलोकगमन हो गया। लोग कहते हैं आचार्यश्री के दर्शन की भावना मन की मन में रह गई। मेरा मुनिप्रवर से पूछना है कि द्रव्य महेंद्र से भाव महेंद्र बनने की इतनी क्या जल्दी थी?

मुनि अजितकुमारजी स्वामी, मुनि जम्बूकुमारजी स्वामी, मुनि अभिजीतकुमारजी, मुनि जागृतकुमारजी और मुनि सिद्धकुमारजी का सौभाग्य था कि उन्हें ऐसे महाज्ञानी संतों का सान्निध्य मिला। सेवा करने का सुअवसर मिला।

महान् आगमज्ञ मुनिप्रवर की आत्मा शीघ्र सिद्ध, बुद्ध, मुक्त बने, यही अंतर भावना।

तेरापंथ के अद्वितीय संत थे - मुनि महेंद्र कुमारजी स्वामी

● मुनि दीप कुमार ●

तेरापंथ धर्मसंघ में रत्नों की भरमार रही है। उन रत्नों में कई तो बहुमूल्य रत्न हुए हैं। उसी पंक्ति में एक दीप्तिमान नाम है–मुनि महेंद्र कुमार जी 'मुंबई' का। आचार्यों द्वारा प्रदत्त अलंकरण और सम्मान उसका प्रत्यक्ष प्रमाण है। बहुश्रुत परिषद् के संयोजक, आगम मनीषी, प्रेक्षा-प्राध्यापक, प्रोफेसर। मैं उन्हें कई संदर्भों में देखता हूँ तो वे मुझे तेरापंथ के अद्वितीय संत नजर आते हैं। उन कुछ बातों की मैं चर्चा करना चाहूँगा। मुनिश्री प्रथम संत मुंबई के तेरापंथ में। तेरापंथ के प्रथम संत जिन्होंने उस जमाने में बी०एस०सी० जैसी पढ़ाई संपन्न कर संत बने। तेरापंथ के प्रथम संत जो १६ भाषाओं के ज्ञाता थे। तेरापंथ के प्रथम संत जिन्होंने कितने आगमों का अंग्रेजी भाषा में अनुवाद किया। तेरापंथ के प्रथम संत जो 'भगवती' जैसे विशालकाय आगम के भाष्य का कार्य करा रहे थे। तेरापंथ के प्रथम संत जो प्रोफेसर बने। और भी न जाने कितने प्रसंग हो सकते हैं जो उनके साथ जुड़े हुए हैं, जिसमें उनकी अद्वितीयता नजर आती है।

मुनिश्री के जीवन की सबसे बड़ी विशेषता मुझे नजर आई, जिसने मुझे बहुत प्रभावित किया वह उनकी विनम्रता। इतने बड़े विद्वान फिर भी गुरुओं के प्रति, रत्नाधिक संतों के प्रति भी विनम्रता। विद्वत्ता के साथ विनय का अद्भुत संगम था उनके जीवन में।

तीन-तीन गुरुओं की अनुपम कृपा उन्होंने पाई थी। गुरुदेव तुलसी के करकमलों से तो दीक्षित भी हुए और उनके युग में ही अपनी सेवाएँ मुनिश्री ने देनी प्रारंभ कर दी थी। जिंदगी के लंबे सफर में उतार-चढ़ाव भी आए पर मुनिश्री का मनोबल बहुत मजबूत था।

आचार्यश्री महाप्रज्ञ जी के युग में वे उनके निकट सहयोगी रहे कई कार्यों में। आचार्यप्रवर का राष्ट्रपति ए०पी०जे० अब्दुल कलाम से जो इतना घनिष्ठ संपर्क बना उसमें मुनिश्री का बहुत योगदान रहा था।

आचार्यश्री महाश्रमण जी ने तो मुनिश्री का बहुत ही सम्मान बढ़ाया और विशेष कार्य का जिम्मा भी सौंपा। जहाँ मुनिश्री को बहुश्रुत परिषद् संयोजक बनाया तो 'भगवती' जैसे आगम संपादन की जिम्मेदारी भी दी। समय-समय पर आचार्यप्रवर मुनिश्री का उल्लेख कराते ही रहते थे। आज मुनिश्री अचानक प्रयाण कर गए हैं। विश्वास नहीं हो रहा पर काल के आगे किसी का जोर नहीं चलता। मुझ पर भी मुनिश्री का अनंत उपकार है। मेरे वैराग्य को मजबूत कराने वाले, मेरी दीक्षा कराने में भी मुनिश्री का महत्त्वपूर्ण योगदान रहा। मुझ पर मुनिश्री की बहुत मर्जी भी थी वह तो जानने वाले जानते हैं। मुनिश्री की सेवा में अद्भुत निष्ठा के साथ मुनि अजीत कुमार जी स्वामी जुड़े हुए थे कितने वर्षों से। सेवा का दुर्लभ इतिहास अजीत स्वामी ने बनाया है और भी संत सेवा में रहे।

मुनि अभिजीत कुमार जी स्वामी, मुनि जागृत कुमार जी, मुनि सिद्धकुमार जी इनको भी सेवा करने के साथ विकास का अवसर मिला। मुनि महेंद्र कुमार जी स्वामी की आत्मा के प्रति शत्-शत् मंगलकामना।

स्मृति सभा का आयोजन

छापर।

आगम मनीषी मुनि महेंद्रकुमारजी के देवलोकगमन के उपरांत स्मृति सभा का आयोजन किया गया। जिसमें शासनश्री मुनि विजयकुमार जी ने कहा कि मुनि महेंद्रकुमारजी तेरापंथ धर्मसंघ के एक देदीप्यमान संत थे। २० वर्ष की उम्र में मुंबई यूनिवर्सिटी से बी०एस०सी० ओनर्स करके आचार्यश्री तुलसी के करकमलों से उन्होंने दीक्षा ली। उनके जीवन में अध्यात्म और विज्ञान दोनों का दर्शन होता था। उनका समय प्रबंधन अनुकरणीय था। अनेक भाषाओं के वे जानकार थे। आचार्यश्री महाप्रज्ञ जी ने उनको आगम मनीषी अलंकरण से अलंकृत किया।

आचार्यश्री महाश्रमण जी ने उनको सम्माननीय बहुश्रुत परिषद् के संयोजक घोषित किया। जैन विश्व भारती मान्य विश्वविद्यालय के मानद प्रोफेसर के रूप में उन्होंने अनेक वर्षों तक अपनी सेवाएँ दीं। संत परंपरा में उनका एक विशेष स्थान था। इसी ६ अप्रैल को ८५ वर्ष की उम्र में वे मुंबई में दिवंगत हो गए। हम उनके गुणों की स्मृति ही नहीं, अपने जीवन में उतारने का प्रयास करें। मुनिवर की स्मृति में शासनश्री मुनि विजयकुमार जी ने गीत भी प्रस्तुत किया।

कार्यक्रम की शुरुआत तेरापंथ महिला मंडल के मंगलाचरण से हुई। मुनि हेमराज जी, जीवनमल मालू, सूरजमल नाहटा, हुलासमल चोरड़िया, रेखाराम गोदारा, मंजु दुधोड़िया ने मुनिश्री के व्यक्तित्व व कर्तृत्व पर प्रकाश डाला। तेरापंथ सभा प्रवक्ता प्रदीप सुराणा ने संयोजन किया व मुनि महेंद्रकुमारजी का जीवन परिचय दिया।

मुनि महेंद्रकुमार जी आध्यात्म एवं विज्ञान के पर्याय थे

नोखा।

तेरापंथ भवन, नोखा में ख्यात संत मुनि महेंद्र कुमारजी की स्मृति सभा का आयोजन हुआ। जिसमें साध्वी राजीमती जी ने कहा कि अनेक विशेषताओं के धनी मुनि महेंद्र कुमार जी तीनों आचार्यों के कृपा पात्र, आगम मनीषी व प्रबुद्ध और अद्भुत विलक्षण ज्ञान भरे हुए संत थे। वे अध्यात्म एवं विज्ञान के पर्याय थे। साध्वी समताश्री जी, साध्वी कुसुमप्रभाजी, साध्वी विधिप्रभाजी, साध्वी प्रभातप्रभा जी ने मुनिश्री को भावांजलि अर्पित की।

तेरापंथ सभा उपाध्यक्ष इंद्रचंद बैद ने मुनि महेंद्र कुमारजी के कई प्रेरणादायी संस्मरण सुनाए। सभा में श्रावक मांगीलाल संचेती, अलायचंद मालू, हंसराज भूरा, तोलाराम धीया सहित श्रावक-श्राविकाएँ उपस्थित रहे।

जैन साध्वियों का आध्यात्मिक मिलन

सरदारपुरा।

शासनश्री साध्वी सत्यवती जी व साध्वी प्रांजलप्रभा जी का आध्यात्मिक मिलन हुआ। प्रातः साध्वी प्रांजलप्रभा जी आदि साध्वियाँ पाल गाँव स्थित जैन एन्क्लेव, सोसायटी से तेयुप, सरदारपुरा व तेरापंथ कन्या मंडल की सदस्याओं के साथ मंगल विहार किया। पैदल विहार करते हुए साध्वीश्री पार्श्वनाथ सिटी पधारे। जहाँ विराजित साध्वी सत्यवती जी आदि साध्वियों से सौहार्दपूर्ण मिलन हुआ। आध्यात्मिक मिलन के इस दृश्य को देख उपस्थित श्रावक समाज का रोम-रोम आनंदित हो गया।

इस अवसर पर तेरापंथी सभा, सरदारपुरा, तेयुप, महिला मंडल, कन्या मंडल के सदस्यों व पार्श्वनाथ सिटी के श्रावक समाज की उपस्थिति रही। सायंकालीन सत्र में साध्वी सत्यवती जी आदि साध्वियों द्वारा स्वागत कार्यक्रम का आयोजन किया गया।

PDF Compressor Free Version

मुनि महेंद्र कुमार जी के प्रति

एवं हवइ बहुस्सुए

❐ मुनि अजित कुमार ❐ मुनि जम्बू कुमार (मिंजूर) ❐ डॉ. मुनि अभिजीत कुमार
❐ मुनि जागृत कुमार ❐ मनि सिद्ध कुमार 'क्षेमंकर ❐

ज्ञान के निर्मल झरने में सदा प्रवाहित रहने वाले, निर्मल चरित्र संपन्न, विपुल ज्ञान के धारक, बहुमुखी प्रतिभा के धनी, श्रुत के पारगामी, अप्रमत्त योगी मुनि महेंद्रकुमारजी स्वामी ने अपने जीवन को सबके लिए प्रेरणास्पद एवं आलोक स्तंभ बना दिया। उनका उदात्त व्यक्तित्व ही कहता है एवं हवइ बहुस्सुए–ऐसे होते हैं बहुश्रुत।

प्रारंभिक जीवन

जैन श्वेतांबर स्थानकवासी ८ कोटी नानी पक्ष के झवेरी परिवार में आपका जन्म सन् १९३७ मुंबई में हुआ। आपका पूरा परिवार बौद्धिक दृष्टि से उन्नत एवं तत्त्वज्ञ था। सघन चर्चाओं के बाद शास्त्रीय एवं तार्किक सूझबूझ से आपके संसारपक्षीय पिताजी जेठाभाई झवेरी ने पूरे परिवार सहित जैन श्वेतांबर तेरापंथ की गुरु धारणा स्वीकार की। कॉलेज जीवन के दौरान ही मुनिश्री के मन में वैराग्य भाव उत्पन्न हुआ। मुनिश्री ने ३ वर्ष तक कॉलेज की पढ़ाई और साथ में धार्मिक स्वाध्याय कंठस्थीकरण एवं मुख लुंचन का अभ्यास किया। कॉलेज मध्य में अवकाश (break period) मिलने पर संतों के सान्निध्य में पहुँचकर समय का सदुपयोग करते थे। इसी दौरान मुनिश्री ने हस्तलिखित प्रति से जैन सिद्धांतदीपिका कंठीकरण तथा हृदयंगम किया। ३ वर्ष के अपनी वैरागी अवस्था में मुनिश्री मुंबई में रहते हुए भी चप्पल-जूते का प्रयोग नहीं करते थे। जब भारत के प्रथम उपराष्ट्रपति सर्वपल्ली राधाकृष्णन को पता चला कि मुंबई का एक ग्रेजुएट लड़का संन्यास लेने जा रहा है तो उन्हें अपना निर्णय बदलने के लिए उपराष्ट्रपति ने साक्षात्कार हेतु बुलाया। मुनिश्री के उत्तर सुन वे इतने संतुष्ट हुए कि उन्होंने जेठा भाई को कहा कि इसे जरूर दीक्षा लेनी चाहिए, इसकी दीक्षा पूरे विश्व के लिए कल्याणकारी होगी। मुनि महेंद्रकुमार जी स्वामी B.Sc (honours) भौतिकी में स्वर्ण पदक प्राप्त कर २० वर्ष की युवा अवस्था में धर्मसंघ के प्रथम ग्रेजुएट के रूप में आचार्यश्री तुलसी के करकमलों से सुजानगढ़ (राजस्थान) में दीक्षित हुए।

कार्यक्षेत्र

मुनिश्री ने हजारों किलोमीटर की पदयात्राएँ करते हुए विभिन्न राज्यों, अंचलों का स्पर्श किया। अपने प्रेक्षाध्यान, जीवन विज्ञान, अणुव्रत, अहिंसा प्रशिक्षण, जैन दर्शन एवं विज्ञान इत्यादि आयामों को व्यापकता दी। धर्मसंघ की प्रभावना हेतु तेरापंथ के पूज्य आचार्यों ने दिल्ली में मुनिश्री के १८ चातुर्मास करवाए। जैन विश्व भारती एवं जैन विश्व भारती इंस्टीट्यूट के विकास के लिए भी मुनिश्री के लाडनूं में १८ चातुर्मास करवाए गए। मुनिश्री ने अपनी जन्मभूमि मुंबई में बहुत वर्ष पहले एक चातुर्मास किया और जीवन के अंतिम ८ चातुर्मास भी मुंबई में किए।

सन् २०१० में ध्यान, अनुप्रेक्षा के प्रभावों के वैज्ञानिक अध्ययन पर आधारित अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन में जैन दर्शन के एकमात्र प्रतिनिधि के रूप में आपको निमंत्रित किया गया। सम्मेलन में विश्व स्तरीय वैज्ञानिक एवं विद्वान आपके वक्तव्य एवं व्यक्तित्व से अभिभूत हुए। श्री दलाई लामा ने मुनिश्री की प्रशंसा में कहा–'What a wonderful presentation.' वर्ष २०१६ में मुनिश्री की आध्यात्मिक मार्गदर्शन में IIT Bombay में जैन दर्शन एवं आधुनिक विज्ञान पर अंतर्राष्ट्रीय कॉन्फ्रेंस आयोजित की गई। लगभग १५ देशों के वैज्ञानिकों ने इसमें भाग लिया। इसकी विश्व भर में काफी गूंज हुई।

सन् २०१७ थाने में इंडियन स्पेस रिसर्च ऑर्गेनाइजेशन इसरो के वैज्ञानिक डॉ० नरेंद्र भंडारी द्वारा अध्यात्म एवं विज्ञान पर करीब ७ घंटे लंबा साक्षात्कार रूपी संवाद चला जिसमें उन्होंने करीब ४० प्रश्न पूछे जिनका मुनिश्री ने वैज्ञानिक एवं आगमिक दृष्टि से समाधान दिया। यह संवाद प्रकाशित होने पर सुधी जनों के लिए आकर्षण का केंद्र बना।

सन् २०२१ में फ्लोरिडा इंटरनेशनल यूनिवर्सिटी द्वारा आयोजित अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन में मुनिश्री का प्रभावशाली वक्तव्य कीनोट एड्रेस हुआ जिसका करीब १०,००० बुद्धिजीवियों पर गहरा प्रभाव पड़ा।

साहित्य सर्जक

अध्यात्म और विज्ञान, गणित, प्रेक्षाध्यान, न्यूरोसाइंस, परमाणु विज्ञान, विद्युत और जैन तत्त्वज्ञान पर आपने अनेक गहन ज्ञान से परिपूर्ण पुस्तकों का लेखन किया, जो विद्वत जनों के स्मृतिपटल पर अपनी अमिट छाप रखती हैं।

कुशल अनुवादक

करीब २२ पुस्तकों का आपने अनुवाद कार्य किया। जब-जब डॉ० एपीजे अब्दुल कलाम आचार्यश्री महाप्रज्ञजी के दर्शनार्थ आते तब उनके संवाद के सेतु मुनिप्रवर बनते थे। अब्दुल कलाम ने उन्हें इंटलेक्चुअल मीडियम कहा और उनके त्वरित अनुवादन कौशल की प्रवचन सभा में प्रशंसा भी की।

समीक्षक-संपादक

मुनिश्री को विभिन्न ग्रंथों को संपादित करने का गौरव प्राप्त हुआ। पुस्तकों आदि में प्रकाशित लेख हो या किसी की वाचिक प्रस्तुति वे उसकी तटस्थ समीक्षा करते थे। मौलिक गलती होने पर उसका खंडन मंडन भी निर्भीकता से किया करते थे।

प्रेक्षा प्राध्यापक

प्रेक्षाध्यान की दार्शनिक एवं वैज्ञानिक पृष्ठभूमि में आचार्य महाप्रज्ञ जी के निर्देशन में मुनिश्री का भी काफी श्रम रहा तथा वैज्ञानिक धरातल से जोड़कर गहन रिसर्च किया, इसलिए आचार्यश्री तुलसी ने ६ अक्टूबर, १९८६ लाडनूं में आपको प्रेक्षा प्राध्यापक के रूप में नियुक्त किया।

आगम मनीषी

प्रायः प्रारंभ से ही मुनिश्री का जीवन आगमों के अध्ययन, अध्यापन, शोध, अनुवाद, मनन, समीक्षा आदि में निरंतर संलग्न रहे। इसी का मूल्यांकन करते हुए आचार्यश्री महाप्रज्ञ जी ने २००६ लाडनूं में आपको आगम मनीषी अलंकरण से अलंकृत किया।

बहुश्रुत

धर्मसंघ के बहुश्रुत परिषद के आप संयोजक थे। बहुविध विधाओं में विज्ञ आपश्री विज्ञान, मनोविज्ञान, परामनोविज्ञान, ध्यान, इतिहास, तत्त्वज्ञान, भारतीय एवं पाश्चात्य दर्शन, आगम आदि में निष्णात थे। युगप्रधान आचार्यश्री महाश्रमण जी ने २०११, राजलदेसर में आपको बहुश्रुत परिषद के सदस्य बनाया एवं तत्पश्चात २०२०, हुबली में बहुश्रुत परिषद के संयोजक के रूप में मनोनीत किया।

बहुभाषाविद्

करीब १७ भाषाओं पर आपने अधिकृत ज्ञान प्राप्त किया। गुजराती होते हुए भी आपकी राजस्थानी भाषा इतनी सधी हुई थी कि लोग अनुमान भी नहीं लगा पाते कि मुनिश्री की मातृभाषा क्या है। पाली, संस्कृत, प्राकृत आदि प्राचीन भाषाएँ, हिंदी, अंग्रेजी, गुजराती, मारवाड़ी आदि भाषाओं के साथ ही जर्मन आदि विदेशी भाषाओं के भी मुनिश्री ज्ञाता थे।

शतावधानी

अवधान एक प्राचीन विद्या है जिसमें स्मरण शक्ति एवं गणित का समायोजन हैं। जनता के द्वारा बताई गई चीजों (जैसे अंक, विदेशी भाषा, श्लोक, वस्तु, विश्व का शब्दकोश इत्यादि) एक बार में ही सुनकर याद कर लेना एवं उसी कार्यक्रम में अंत में उसी क्रम में सुनाना। इसी प्रकार बड़ी संख्याओं के साथ मानसिक गणित करना जिसमें कोई कागज एवं कलम का बिलकुल भी उपयोग नहीं होता है। इतनी चीजें याद रखने के बावजूद भी गणितीय प्रश्नों (जैसे वार शोधन, समानांतर जोड़, सर्वतोभद्र यंत्र, गुप्तांक शोधन, घात मूल, माला शोधन इत्यादि) का तुरंत उत्तर देना। यह प्रोग्राम धर्मसंघ की प्रभावना एवं लोगों को जोड़ने में खूब सहायक बना।

मुनि महेंद्रकुमार जी स्वामी भी इस अनुपम, अलौकिक, विस्मयकारी विद्या के धनी थे। भारत के अनेक महत्त्वपूर्ण स्थानों पर एवं महत्त्वपूर्ण लोगों के बीच में उन्होंने ऐसे अवधान के कार्यक्रमों की झड़ी लगा दी। उनमें से कुछ विशिष्ट कार्यक्रमों का उल्लेख इस प्रकार है–

१९५८ में बनारस हिंदू यूनिवर्सिटी, वाराणसी

१९६६ में गवर्नर संपूर्णानंद के समक्ष गवर्नर हाउस, जयपुर

१९६० में आईआईटी दिल्ली

२००५ में आयोजित अंतर्राष्ट्रीय कॉन्फ्रेंस, राष्ट्रपति भवन, नई दिल्ली इत्यादि।

सुधीजनों के उद्गार

उदयपुर २००७ में युगप्रधान आचार्यश्री महाप्रज्ञ जी ने फरमाया–'हमें धर्मसंघ में अनेक महेंद्र मुनि चाहिए जो अध्यात्म, दर्शन, विज्ञान, आगम एवं अंग्रेजी सभी का अधिकृत ज्ञान रखते हों।'

सरदारशहर, २०१० में मुनिश्री की पुस्तक 'द एनिग्मा ऑफ द यूनिवर्स' के विमोचन के अवसर पर युगप्रधान आचार्यश्री महाश्रमण जी ने फरमाया–'एक और ५० पुस्तकें और दूसरी ओर यह पुस्तक रखी जाए तो यह भारी होगी।'

इसी पुस्तक के विमोचन पर दिल्ली में डॉ० एपीजे अब्दुल कलाम ने कहा–"मैं देर रात ३ बजे तक यह पुस्तक पढ़ रहा था। मुझे लगा कि मुनिश्री न केवल एक संत बल्कि उच्च कोटि के दार्शनिक एवं वैज्ञानिक भी हैं। विश्व की पहेली सुलझाने में लगे नोबेल लॉरेट को मुनिश्री का मार्गदर्शन प्राप्त करना चाहिए।"

आचार्यों की वचनसिद्धि

मुनिश्री के लिए समय-समय पर तीनों युगप्रधान आचार्यों (आचार्यश्री तुलसी, आचार्यश्री महाप्रज्ञ जी और आचार्यश्री महाश्रमण जी) ने कृपापूर्ण अंतःकरण से जो आशीर्वाद प्रदान किया, वे शब्द मुनिश्री के लिए चमत्कारिक सिद्ध हुए। तीन संस्मरण उदाहरण स्वरूप प्रस्तुत कर रहे हैं–

(१) मुनिश्री के संयम पर्याय के २५ वर्ष की परिसंपननता पर जो आचार्यश्री तुलसी ने विद्याभूमि, राणावास में २९ अक्टूबर, १९८२ को आशीर्वाद प्रदान किया वह इस प्रकार है–

"मुनि महेंद्र जी! तुम्हें दीक्षित हुए २५ वर्ष हो गए पता ही नहीं चला। समय कितना गतिशील है। हमारे धर्मसंघ में तुम प्रथम ग्रेजुएट दीक्षित हुए। तुम्हारी दो विशेषताएँ हैं –अध्ययनशीलता और श्रमशीलता–प्रत्यक्ष और परोक्ष में एक जैसी है। स्वास्थ्य तुम्हारा यथेष्ट अनुकूल नहीं रहा फिर भी इन दो बातों में कोई क्षति नहीं आई। इसके साथ-साथ तुम्हारा समर्पण भाव भी विशिष्ट रहा।---तुम जीवन भर इसी प्रकार शासन की सेवा करते रहोगे। यह शुभाशीर्वाद देता हूँ।"

गुरुदेव के आशीर्वाद के अनुरूप ही मुनिश्री जीवन भर काम करते रहे।

(२) उदयपुर चातुर्मास में मुनिश्री के उम्र के ७० वर्ष की परिसंपन्नता पर आचार्यश्री महाप्रज्ञ जी ने जो आशीर्वाद प्रदान किया वह इस प्रकार है–

"स्वस्थ रहो। सक्रिय रहो और आगे कम से कम १५ वर्ष तक संघ की सेवा अच्छी तरह करनी है।"

मुनिश्री ने उसके पश्चात् ठीक १५ वर्षों तक अपनी सेवाएँ दी। सभी १६वाँ वर्ष चल रहा था।

(३) छापर चातुर्मास में आचार्यश्री महाश्रमण जी का मुनिश्री के लिए चेंबूर चातुर्मास की संपन्नता के बाद जो निर्देश प्राप्त हुआ वह इस प्रकार है–

"—चातुर्मास की संपन्नता के बाद यथासंभवतया चेंबूर से विहार करके विलेपार्ले पधार जाएँ और यथासंभवतया विलेपार्ले को अपना मुख्यालय बनाकर रहें, जब तक कोई नया इंगित न मिले तब तक।"

मुनिश्री ने विलेपार्ले को ही अपना मुख्यालय बना लिया।

इस प्रकार से तीनों आचार्यों के वचनों का मुनिश्री के जीवन में चमत्कारिक प्रभाव रहा।

वे अंतिम क्षण

धर्मसंघ की प्रभावना का जब भी अवसर आता मुनिश्री अपनी अनुकूलता को गौण कर त्वरित उस ओर अभिमुख हो जाते थे। काल धर्म प्राप्त होने के ६ दिन पूर्व ही मुनिश्री ने मुनि अभिजीत एवं मुनि जागृत को भारत जैन महामंडल द्वारा आयोजित महावीर जयंती कार्यक्रम में भेजा। मुनिश्री का स्वास्थ्य उतार पर था, संत भी मुनिश्री के पास ही रहना चाहते थे, फिर भी मुनिश्री ने संतों को कार्यक्रम हेतु भेजा। मुनिश्री की कल्पना के अनुरूप कार्यक्रम बहुत ही संघ प्रभावी रहा। कार्यक्रम संपन्न कर अगले ही दिन दोनों संत २५ किलोमीटर का विहार कर मुनिश्री के सान्निध्य में पहुँच गए।

(शेष पृष्ठ १४ पर)

PDF Compressor Free Version

अखिल भारतीय
तेरापंथ टाइम्स
17 - 23 अप्रैल, 2023

✦ संगठन की सुदृढ़ता के लिए आवश्यक है अनाग्रही चेतना का विकास।

–आचार्यश्री महाश्रमण

मुनि महेंद्र कुमारजी के देवलोकगमन पर विशेष आलेख

तेरापंथ धर्मसंघ के वरिष्ठ एवं विशिष्ट संत थे मुनि महेंद्र कुमारजी

❐ शासनश्री साध्वी संघमित्रा ❐

बहुश्रुत परिषद के संयोजक मुनि महेंद्रकुमार जी स्वामी तेरापंथ धर्मसंघ के वरिष्ठ एवं विशिष्ट संत थे। वे प्रांजल प्रतिभा के धनी थे। अंग्रेजी, हिंदी, संस्कृत, गुजराती आदि अनेक भाषाओं के विज्ञाता थे। अपनी क्वालिटी के वे इकलौते संत थे। धर्म की विज्ञान के साथ तुलना में उनका नजरिया अनुपम था, सटीक था। ज्ञानाराधना, श्रुताराधना में उनकी लगन अद्भुत थी। संघ एवं संघनायक के प्रति उनका समर्पण अनन्य था। युगप्रधान आचार्य त्रिपुटी के वे विशेष कृपापात्र एवं परम विश्वासपात्र थे। उनकी सैद्धांतिक एवं तात्त्विक अवधारणाएँ विलक्षण थी। वे आगम मनीषी थे, आगम महाग्रंथ भगवती सूत्र पर किया गया उनका विशाल स्तरीय कार्य युगों-युगों तक अमर रहेगा।

उनका आगम ज्ञान अगाध था। आगम–अनुसंधान में उनकी पैनी पकड़ थी। आगम ज्ञान की गहराइयों में उतरकर अनमोल दुर्लभ रत्नों को बटोरने में उन्होंने अपनी तीव्र मेधा का भरपूर उपयोग किया आपकी अध्यात्म साधना, संघ निष्ठा, गुरुनिष्ठा, श्रम निष्ठा बेजोड़ थी।

राष्ट्रीय व अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर आयोजित प्रेक्षाध्यान के अनेक शिविरों के कुशल संचालक रहे। संघ में अवधान विद्या के प्रसार में आपका श्रमदान अविस्मरणीय रहेगा। आचार्यों ने आपको प्रेक्षाध्यापक, आगम मनीषी, बहुश्रुत परिषद के संयोजक के रूप में नवाजा। संघ में बी०एस०सी० डिग्री धारी ये प्रथम संत थे।

वे उदारचेता थे। ई० सन् १९८५ का मुनिश्री का पावस प्रवास अणुव्रत भवन, दिल्ली में था और हमारा सदर थाना रोड, दिल्ली सुराणा धर्मशाला में। प्रायः हर रविवारीय प्रवचन एवं अन्य विशेष आयोजनों में मुनिश्री हमें भी सहभागी बनने का मूल्यवान अवसर प्रदान करते। टी०वी० चैनल पर होने वाले एक प्रभावी कार्यक्रम–'अपनी धरती अपने लोग' प्रोग्राम का अवसर स्वयं न लेकर हमें प्रदान किया एवं उसका समुचित दिशा-दर्शन भी हमें दिया। जबकि कार्यक्रम की आयोजना में मुनिश्री का ही अपना श्रमदान था। हम आपके इस औदार्य भाव के प्रति गद्गद थे।

राष्ट्रपति भवन में महामहिम राष्ट्रपति ज्ञानी जेलसिंहजी से मुलाकात के समय हम साध्वियों को भी संभागी बनाया। मुझे भावाभिव्यक्ति का विशेष अवसर प्रदान किया। उस दौरान मैंने कहा–'जिस प्रकार सम्राट अशोक का राजकुमार महेंद्र एवं राजकुमारी संघमित्रा अहिंसा का संदेश लेकर लंका गए थे उसी प्रकार मुनि महेंद्रकुमारजी और मैं (साध्वी संघमित्रा) आचार्य तुलसी का अणुव्रत का संदेश लेकर भारत की राजधानी दिल्ली और आज राष्ट्रपति भवन, में आए हैं। मुझे विश्वास है मुनिश्री के प्रयास से आपके द्वारा अणुव्रत के रूप में यह नैतिक आवाज पूरे भारत में गुंजित होगी।

मुझे गौरव है मुनि महेंद्रकुमार जी भंसाली परिवार से हैं और मैं भी भंसाली परिवार से हूँ। आपके पिता का नाम प्रो० जेठाभाई झवेरी और मेरे पिताजी का नाम डॉ० जेठमलजी भंसाली, किसी-न-किसी रूप में आपके साथ भाई-बहन का संबंध पाकर गर्व ही नहीं, गौरव की अनुभूति होती है। साध्वी शीलप्रभा जी ने मुनिश्री से अवधान का प्रशिक्षण प्राप्त किया। वे कई बार इसका उल्लेख किया करती थी।

जैन विश्व भारती एवं जैन विश्व भारती संस्थान की विकास यात्रा में आपका सघन पुरुषार्थ एवं कर्तृत्व हमेशा अंकित रहेगा। भारत की राजधानी दिल्ली में आपने १८ पावस प्रवास किए और जनता को अपने लंबे प्रवास से लाभान्वित ही नहीं किया, बल्कि आपके वैदुष्यपूर्ण प्रवचनों की प्रबुद्ध जैन जैनेत्तर समाज में आज भी अनुगूंज है।

ई० सन् १९८६ में योगक्षेम वर्ष के कार्यक्रमों की व्यवस्थित रूपरेखा तैयार, करने में आपकी अद्वितीय भूमिका रही है। प्रतिभाशाली संत के रूप में आपका नाम हमेशा स्मरणीय रहेगा।

महान तपस्वी एवं सेवाभावी मुनि अजितकुमारजी स्वामी ने लंबे समय तक छाया की तरह आपके साथ रहकर आपकी उत्कृष्ट सेवा का लाभ लिया है। अनेक अनुभवों को बटोरा है। मुनि प्रवर से प्राप्त अमूल्य निधि का संरक्षण ही नहीं संवर्धन भी हो। श्री जम्बूकुमारजी, अभिजीत कुमारजी, जागृत कुमार जी एवं सिद्धकुमार जी ने भी आपकी निकट सन्निधि में जीवन का बहुमुखी विकास किया। उनकी चित्त समाधि में सहयोगी रहे। उनसे प्राप्त संस्कारों का शतगुणित विकास हो।

संघ महान है। श्रम के महादेवता, व्यक्तित्व निर्माण के महाशिल्पी, युगप्रधान आचार्यश्री महाश्रमण जी के विशद् मार्गदर्शन में विद्वद्वरेण्य सौ-सौ मुनि महेंद्र तैयार हों एवं धर्मसंघ की प्रभावना में नए-नए अध्याय जुड़ते रहें।

आध्यात्मिक विकास की मंगलकामना।

एवं हवइ बहुस्सुए...

(पृष्ठ १३ का शेष)

शरीर में असहनीय वेदना होते हुए भी मुनिश्री ने और असाधारण तितिक्षा का परिचय दिया। दृढ़ मनोबल ऐसा जिसके सामने डॉक्टर भी नतमस्तक थे। नानावटी हॉस्पिटल के गुर्दा एवं गुर्दा प्रत्यारोपण विभाग के अध्यक्ष डॉ० जनित कोठारी ने कहा–"एक बार डायलिसिस चालू हो जाए तो उसे जीवन भर चालू रखना पड़ता है। उसमें रिवर्सल नहीं होता परंतु मुनिश्री हजारों में से एक ऐसे व्यक्तित्व थे जिन्होंने अपने संकल्प बल से एक डायलिसिस होने के बावजूद भी उस पर विजय प्राप्त की और बिना डायलिसिस भी मुनिश्री का काम चला।"

अंतिम समय तक मुनिश्री की जो श्रमनिष्ठा रही वह उल्लेखनीय है। जितनी बार हॉस्पिटल में भर्ती किया जाता एक थैला तो आगम कार्य का अवश्य साथ होता। ठीक अप्रैल तक मुनिश्री प्रायः निरंतरता के साथ आगम संपादन के महायज्ञ में संलग्न रहे। मुनिश्री प्रायः जीवन भर सक्रिय ही रहे। मात्र सचेत अवस्था में अंतिम २ दिन मुनिश्री परवश रहे। आहार आदि भी मुनि अजित कुमार जी स्वामी, मुनि सिद्ध कुमार जी अपने हाथों से करवाते। मुनिश्री को यह बिलकुल अच्छा नहीं लगता कि उनके कारण संतों को मेहनत पड़ रही है। ४ अप्रैल को शाम ६:३० सिद्ध मुनि जब हॉस्पिटल से ठिकाने के लिए प्रस्थान कर रहे थे मुनिश्री ने आशीर्वाद देते हुए भावुक स्वरों में फरमाया–"सिद्धू! तुम्हें बहुत मेहनत डाल देते हैं।"

डेढ़ घंटे पश्चात् कार्डियक अरेस्ट हो गया जिसके बाद अंत तक मुनिश्री अचेत अवस्था में ही रहे। ६ अप्रैल को प्रातः हम पाँचों संतों ने (मुनि अजित कुमार, मुनि जम्बू कुमार (मिंजूर), डॉ० मुनि अभिजीत कुमार, मुनि जागृत कुमार, मुनि सिद्ध कुमार 'क्षेमंकर'), डॉ० पीयूष जैन (पगारिया) से विचार-विमर्श कर मुनिश्री को नानावटी हॉस्पिटल से विलेपार्ले कल्याण मित्र बी०डी० गोयल निवास में लाना निश्चित किया। अपराह्न में प्रवास स्थल पहुँचते ही ३:०६ पर मुनिश्री को समसमाचारी में सागरी संथारा पचखाया गया एवं ३:२३ पर मुनिश्री ने अपने नश्वर शरीर का त्याग कर ऊर्ध्व लोक की ओर प्रस्थान किया।

तेयुप के विविध कार्यक्रमों के आयोजन

निःशुल्क चिकित्सा जाँच एवं परामर्श शिविर

भीलवाड़ा।

तेयुप, भीलवाड़ा एवं निर्मला देवी ओस्तवाल सेवा संस्थान के संयुक्त तत्त्वावधान में निःशुल्क चिकित्सा जाँच एवं परामर्श शिविर का आयोजन काछोला ग्राम में किया गया।

कार्यक्रम संयोजक राजेंद्र प्रसाद ओस्तवाल ने बताया कि शिविर का शुभारंभ समाजसेवी कानसिंह ओस्तवाल, डॉ० सुरेश भदादा, डॉ० एल०एल० सिंघवी, डॉ० प्रमोद शर्मा, डॉ० हर्ष बाफना, अंकिता मेहता, गिरीश ओस्तवाल, एटीडीसी के राष्ट्रीय सदस्य गौतम दुगड़, तेयुप अध्यक्ष कमलेश सिरोहिया सहित अनेक पदाधिकारीगणों ने नमस्कार महामंत्र की स्तुति की।

शिविर प्रभारी गौतम दुगड़ ने बताया कि मल्टीस्पेशलिटी शिविर में विभिन्न रोगों के इलाज के लिए शहर के अनुभवी चिकित्सकों की सेवाएँ उपलब्ध थीं। जिन्होंने २६३ मरीजों की जाँच कर परामर्श दिया। शिविर में १५० से अधिक मरीजों के ब्लड शुगर, ब्लड प्रेशर एवं पल्स ऑक्सीजन की जाँच निःशुल्क की। शिविर में तेयुप के कोषाध्यक्ष सुरेश चोरड़िया, अनुराग नैनावटी, शैलेंद्र नैनावटी, राजेश खाब्या, बालकिशन, मंत्री, नारायण सोडाणी का पंजीयन में सहयोग रहा।

संगठन यात्रा

इचलकरंजी।

तेयुप, इचलकरंजी की संगठन यात्रा मंगलपाठ से शुरू हुई। सामूहिक नमस्कार महामंत्र, विजय गीत एवं श्रावक निष्ठा पत्र का वाचन परिषद प्रभारी मनोज संकलेचा ने किया। स्वागतीय भाषण परिषद के अध्यक्ष महेश पटवारी ने किया। अणुव्रत समिति के अध्यक्ष विकास सुराणा ने शाखा प्रभारी मनोज संकलेचा का स्वागत करते हुए युवकों में नई ऊर्जा और उत्साह बढ़ाने की प्रेरणा दी।

तेयुप के कार्यक्रमों की जानकारी परिषद मंत्री अंकुश बाफना ने दी। इचलकरंजी में कुल १०८ परिवार व तेयुप सदस्य संख्या ६८ है।

आठों पदाधिकारियों में से ६ पदाधिकारियों ने अठाई व अठाई के ऊपर की तपस्या की। तेयुप के पूर्व अध्यक्ष, जैन संस्कारक, तेयुप परामर्शक विकास हनुमानमल सुराणा ने मासखमण की तपस्या की। तेयुप मंत्री अंकुश ने १५ की तपस्या की।

आयंबिल तप में सेवा देने वाले संतोष भंसाली एवं नवरतन गिड़िया ने भी ६ दिन आयंबिल किए।

उपासक-उपासिका परिचय प्रेरणा संगोष्ठी का आयोजन

हिंदमोटर।

मुनि जिनेश कुमार जी के सान्निध्य में जी०टी० रोड स्थित फणिंद्र भवन में उपासक-उपासिका परिचय प्रेरणा संगोष्ठी का आयोजन तेरापंथी सभा द्वारा किया गया। इस अवसर पर मुनि जिनेश कुमार जी ने कहा कि तेरापंथ धर्मसंघ एक व्यवस्थित मर्यादित धर्मसंघ है। मुनिश्री ने कहा कि आत्म भक्ति, गुरुभक्ति, संघभक्ति, श्रुतभक्ति के द्वारा आगे बढ़ना है। गुरु के प्रति पूर्ण समर्पित रहें। आत्मा की आराधना के लिए ज्ञान, दर्शन, चारित्र तप की आराधना करें।

मुनिश्री ने आगे कहा कि उपासक का जीवन विलक्षण व विशिष्ट हो यह अपेक्षित है। कार्यक्रम का शुभारंभ उपासक-उपासिकाओं द्वारा गीत के संगान से हुआ। स्वागत भाषण स्थानीय तेरापंथी सभा के अध्यक्ष मनोज कुंडलिया ने किया। उपासिका डॉ० प्रेमलता चोरड़िया ने अपने विचार व्यक्त किए। आभार ज्ञापन मंत्री धनराज सुराणा ने किया व महावीर दुगड़ ने विचार रखे। कार्यक्रम का संचालन मुनि परमानंद जी ने किया। इस अवसर पर कोलकाता हावड़ा उपनगरीय क्षेत्रों एवं कोलाघाट, सेंथिया से लगभग ६४ उपासक-उपासिकाएँ संभागी बनें। उपासक-उपासिकाओं का परिचय कार्यक्रम भी हुआ।

✦ स्पष्ट लक्ष्य के साथ जीने वाला व्यक्ति अपने जीवन को सार्थक व सुफल बना सकता है।

– आचार्यश्री महाश्रमण

PDF Compressor Free Version

✦ *हिंसा के तीन कारण होते हैं—अज्ञान, अभाव और आवेश। इनके कारण व्यक्ति कई बार हिंसा में प्रवृत्त हो जाता है।*
—आचार्यश्री महाश्रमण

अखिल भारतीय तेरापंथ टाइम्स
17 - 23 अप्रैल, 2023

विजन-2025 का आयोजन

अहमदाबाद।

आचार्यश्री महाश्रमण जी के सान्निध्य में अभातेयुप के निर्देशन में तेयुप, अहमदाबाद द्वारा आयोजित विजन-२०२५ का प्रथम सत्र तेरापंथ भवन में आयोजित किया गया। नमस्कार महामंत्र से प्रथम सत्र की शुरुआत हुई। तत्पश्चात मुट्ठी–Engineering Process विषय पर मुनि योगेश कुमार जी ने मुट्ठी विषय पर अपना प्रेरणा पाथेय प्रदान किया। उपस्थित सभी युवा साथियों द्वारा तेयुप के आयाम–सेवा, संगठन, संस्कार के आयामों को सात ग्रुप एवं एक किशोर मंडल ग्रुप में विभाजन कर सभी ग्रुप द्वारा अलग-अलग आयाम पर सुझाव एवं प्रस्तुति की गई। मुनि दिनेश कुमार जी ने युवकों को प्रेरणा पाथेय प्रदान करते हुए मुट्ठी के महत्त्व को समझाया, जिस तरह एक खुला हाथ कार्य नहीं कर सकता उसी तरह अगर एक बंद मुट्ठी कोई भी कार्य को अंजाम तक पहुँचा सकती है। प्रथम सत्र का संचालन विजन-२०२५ के संयोजक अमित सेठिया एवं अक्षय संकलेचा ने किया।

विजन-२०२५ दूसरा सत्र

युगप्रधान आचार्यश्री महाश्रमण जी के सान्निध्य में जैनं जयतु शासनम् संवसरण में प्रवचन पंडाल में आयोजित हुआ। जिसका विषय था–युवा ३६०° विक्रम संवत् २०८० के पहले दिन जैन श्वेतांबर तेरापंथ धर्मसंघ के आचार्यश्री महाश्रमण जी से गुजरात के पूर्व मुख्यमंत्री विजय भाई रुपाणी सहित श्रद्धालुओं ने आशीर्वाद लिया। आचार्यश्री ने उपस्थित जनमेदिनी को समय का सदुपयोग करने के लिए पावन प्रेरणा प्रदान की।

भारतीय नव संवत्सर जैनं जयतु शासनम् संवसरण में आचार्यश्री ने लोगों को १ वर्ष के लिए अच्छे धार्मिक आध्यात्मिक संकल्प करवाए। आचार्यश्री ने कहा कि समय का सदुपयोग, दुरुपयोग और अनुपयोग भी किया जा सकता है। व्यक्ति को समय पर सदुपयोग करने का प्रयास करना चाहिए। अच्छे कार्य, सेवा, मुमुक्षु निर्माण आदि की दिशा में पुरुषार्थ करना चाहिए।

पूर्व मुख्यमंत्री विजय रुपाणी की उपस्थिति में उन्होंने कहा कि राजनीति सेवा का साधन है। राष्ट्र, राज्य आदि के शासन के संचालन के लिए राजनीति आवश्यक है। राजनीति में भी धार्मिक मूल्य बने रहने चाहिए।

अभातेयुप के राष्ट्रीय अध्यक्ष पंकज डागा ने संपूर्ण युवा शक्ति के बारे में एवं विजन-२०२५ के बारे में उपस्थित जनमेदिनी एवं पूज्यप्रवर को अवगत करवाया। तेयुप, अहमदाबाद के अध्यक्ष अरविंद संकलेचा ने अपना स्वागत वक्तव्य दिया और एक छोटे से निवेदन पर पधारे पूर्व सीएम विजय भाई रुपाणी का भी आभार ज्ञापन किया।

आचार्यश्री महाश्रमण युवा व्यक्तित्व पुरस्कार से सम्मानित मुकेश गुगलिया ने अहमदाबाद की युवा शक्ति के कार्य करने की समता को नमन करते हुए अपने भाव व्यक्त किए।

साध्वीप्रमुखाश्री विश्रुतविभा जी ने संपूर्ण युवा शक्ति को युवा ३६०° में अध्यात्म में और भी अधिक अग्रसर होना चाहिए। युवकों में संस्कार संपन्नता बने, युवक नशामुक्त रहे, शिक्षा संपन्न बने, जैन दर्शन के सिद्धांत पढ़ने का प्रयास करें। साध्वीवर्या सम्बुद्धयशा जी ने युवकों को विशेष प्रेरणा प्रदान की।

गुजरात के पूर्व मुख्यमंत्री रुपाणी ने कहा कि मैं अपने आपको बहुत सौभाग्यशाली मानता हूँ कि नववर्ष के प्रथम दिन राष्ट्रसंत महाश्रमण जी के दर्शन करने एवं आशीष प्राप्त करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। रुपाणी ने कहा कि भारत विश्व गुरु बनने की ओर अग्रसर है, इसमें युवाओं की भूमिका अहम् है। अभातेयुप के तत्त्वावधान में तेयुप, अहमदाबाद इकाई की ओर से विजन-२०२५ संरचना शिखर का कार्यक्रम आयोजित किया गया। राष्ट्रीय अध्यक्ष पंकज डागा, तेयुप के अध्यक्ष अरविंद संकलेचा, प्रवास व्यवस्था समिति की ओर से मुकेश गुगलिया, असरवा के विधायक दृश्ना बेन वाघेला, अहमदाबाद के रेल मंडल प्रबंधक तरुण जैन ने आचार्यश्री से आशीर्वाद लिया।

विजन-२०२५ तृतीय सत्र

नमस्कार महामंत्र के सामूहिक उच्चारण के साथ कार्यक्रम का शुभारंभ तेरापंथ भवन में हुआ। विजय गीत संगठन मंत्री दीपक संचेती द्वारा प्रस्तुत किया गया।

श्रावक निष्ठा पत्र का वाचन राष्ट्रीय अध्यक्ष पंकज डागा द्वारा किया गया। तेयुप, अहमदाबाद अध्यक्ष अरविंद संकलेचा द्वारा उपस्थित सभी अभातेयुप प्रबंध मंडल, अहमदाबाद के गणमान्य व्यक्ति एवं युवा शक्ति का स्वागत-अभिनंदन किया गया। तत्पश्चात विजन-२०२५ की विस्तृत जानकारी अभातेयुप महामंत्री पवन मांडोत ने संपूर्ण समाज को विस्तृत जानकारी दी। सेवा, संगठन और संस्कार के तीनों आयामों के विषय को प्रस्तुत किया गया। अभातेयुप पूर्व अध्यक्ष विमल कटारिया ने सभी का अभिनंदन करते हुए विजन-२०२५ को किस तरह से हमें आगे लेकर जाना है और इस विजन का जो सपना अहमदाबाद में संजोया है उसको संपन्न करना है। उस पर अपनी अभिव्यक्ति प्रस्तुत की। विजन-२०२५ के तहत आचार्य तुलसी डायग्नोस्टिक लैब का विस्तार, आचार्य तुलसी जैन हॉस्टल का प्रोजेक्ट, ब्लड बैंक का निर्माण इन सभी विषय पर विमल कटारिया ने अपने भाव व्यक्त किए। Talk Show with Experts के तहत एक्सपर्ट पंकज डागा, विमल कटारिया, मदन तातेड़, गौतम बाफना के साथ में अभातेयुप राष्ट्रीय उपाध्यक्ष जयेश मेहता ने सभी एक्सपर्ट से अपने सरल अंदाज में टॉक शो किया एवं सभी युवाओं को जिज्ञासाओं का समाधान दिया।

मुनि दिनेश कुमार जी एवं मुनि योगेश कुमार जी ने विजन-२०२५ को पूर्ण करने के लिए युवा शक्ति को प्रेरणा पाथेय प्रदान किया। आभार ज्ञापन तेयुप, अहमदाबाद के सहमंत्री जय छाजेड़ ने किया। सत्र का संचालन तेयुप, अहमदाबाद उपाध्यक्ष प्रदीप बागरेचा, कोषाध्यक्ष विशाल भरसारिया ने किया।

ज्ञान, दर्शन व चारित्र साधु की संपदा : आचार्यश्री महाश्रमण

वासद, आणंद ५ अप्रैल, २०२३

दिव्य दिवाकर आचार्यश्री महाश्रमण जी प्रातः लगभग ६ किलोमीटर का विहार कर वासद के सरदार पटेल विनय मंदिर परिसर में प्रवास हेतु पधारे। आज चतुर्दशी एवं पक्खी भी है।

मर्यादा पुरुषोत्तम आचार्यप्रवर ने पावन प्रेरणा प्रदान करते हुए फरमाया कि दसवें आलियं आगम में साध्वाचार का शिक्षण दिया गया है। धर्म की संक्षिप्त-सारभूत बात भी बताई गई है। नवदीक्षित साधु के लिए आगमाधारित प्रशिक्षण देना हो तो अति संक्षेप में दसवां आलियं एक सुंदर माध्यम बन सकता है।

शास्त्रकार ने बताया कि मृषा न तो स्वयं बोले, न दूसरों से बुलवाए। मृषावाद बोलने के कई कारण बताए गए हैं। साधु वाणी से अयथार्थ बात, गुस्से या भय के कारण न बोलें। साधु को न तो गुस्सा न भय का भाव रखना चाहिए। अभ्याख्यान तो त्याज्य है ही। शास्त्रों के ये संदेश मननीय, पठनीय और अनुसरणीय हैं। दूसरे का अहित करने वाला मानो स्वयं का अहित तैयार कर रहा है।

यथार्थ बोलने से कठिनाई भी आ सकती है। साधु के असत्य बोलने का त्याग है, पर हर बात सत्य ही बोलना होगा, यह जरूरी नहीं है। मौका हो तो मौन तो रह जाए पर साधु झूठ न बोले। ज्ञान, दर्शन, चारित्र ही साधु की संपदा होती है। सच्चाई के लिए ऋजुता को रखना आवश्यक है।

आज चतुर्दशी है। हाजरी का वाचन करते हुए पूज्यप्रवर ने मर्यादाओं को समझाते हुए प्रेरणा प्रदान करवाई। मुनि देवकुमार जी ने लेख पत्र का वाचन किया। समूह रूप में साधु-साध्वियों द्वारा लेख पत्र का वाचन किया गया।।

साध्वी राहतप्रभा जी ने संतों को वंदना की। मुनि धर्मरुचिजी ने संतों की ओर से उनको मंगलकामना संप्रेषित की। मुनि ऋषि कुमार जी ने सत्य के लिए प्राण न्यौछावर करने वाली मुनि मेतार्य की घटना को समझाया।

पूज्यप्रवर ने विनय मंदिर के विद्यार्थियों को प्रेरणा प्रदान करते हुए फरमाया कि विद्यार्थियों के लिए ज्ञानार्जन का अच्छा समय है। ज्ञान के साथ अच्छे संस्कार आ जाएँ तो आदमी अच्छा जीवन जी सकता है। पूज्यप्रवर ने सद्भावना, नैतिकता और नशामुक्ति को समझाकर संकल्प स्वीकार करवाए।

विनय मंदिर के चैयरमैन दौलतभाई पटेल ने पूज्यप्रवर के स्वागत में अपनी भावना अभिव्यक्त की। व्यवस्था समिति ने विद्यालय परिवार का सम्मान किया। विद्यालय के विद्यार्थियों को जीवन विज्ञान व अणुव्रत के बारे में समझाया गया।

कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेश कुमार जी ने किया।

शरीर में बीमारी आने के पहले आभामंडल में आती है

कांकरोली।

भारतीय पर्व में होली का त्योहार अपने आपमें एक गरिमामय एवं महिमा मंडित पर्व है। भीतर के स्नेह एवं वात्सल्य को बाहर लाने का पर्व है होली। भीतर के तनाव एवं कुंठा को दूर करने का पर्व है होली। जैन धर्म के अनुसार जैसा भीतर आव होता है वैसा उसका ओरा होता है। रंगों के ध्यान से आभामंडल पवित्र एवं निर्मल होता है। उक्त विचार मुनि संजय कुमार जी ने व्यक्त किए।

इससे पूर्व मुनि प्रकाश कुमारजी ने चैतन्य केंद्रों पर मंत्र प्रेक्षा के प्रयोग करवाए तथा मुनि सिद्धप्रज्ञजी ने आभामंडल एवं रंग विज्ञान की जानकारी देते हुए कहा कि हमारा ओरा हमारे बारे में वो भी जानता है जो हम भी नहीं जानते। शरीर में बीमारी आने के ३ माह पहले बीमारी हमारे आभामंडल में आ जाती है। आदमी के मरने के ४५ दिन पहले उसका आभामंडल मरना शुरू हो जाता है। उन्होंने लेश्या ध्यान के प्रयोग भी करवाए। तेरापंथ सभाध्यक्ष प्रकाश सोनी ने सभी के प्रति आभार व्यक्त किया। योग प्रशिक्षक विनोद बोहरा का सराहनीय सहयोग रहा।

PDF Compressor Free Version

अखिल भारतीय
तेरापंथ टाइम्स
17 - 23 अप्रैल, 2023

✦ ईमानदारी केवल व्यवसाय के क्षेत्र में ही नहीं, आदमी के हर आचार, विचार और व्यवहार में होनी चाहिए।
—आचार्यश्री महाश्रमण

ज्ञानदाता व ज्ञान का सम्मान करें : आचार्यश्री महाश्रमण

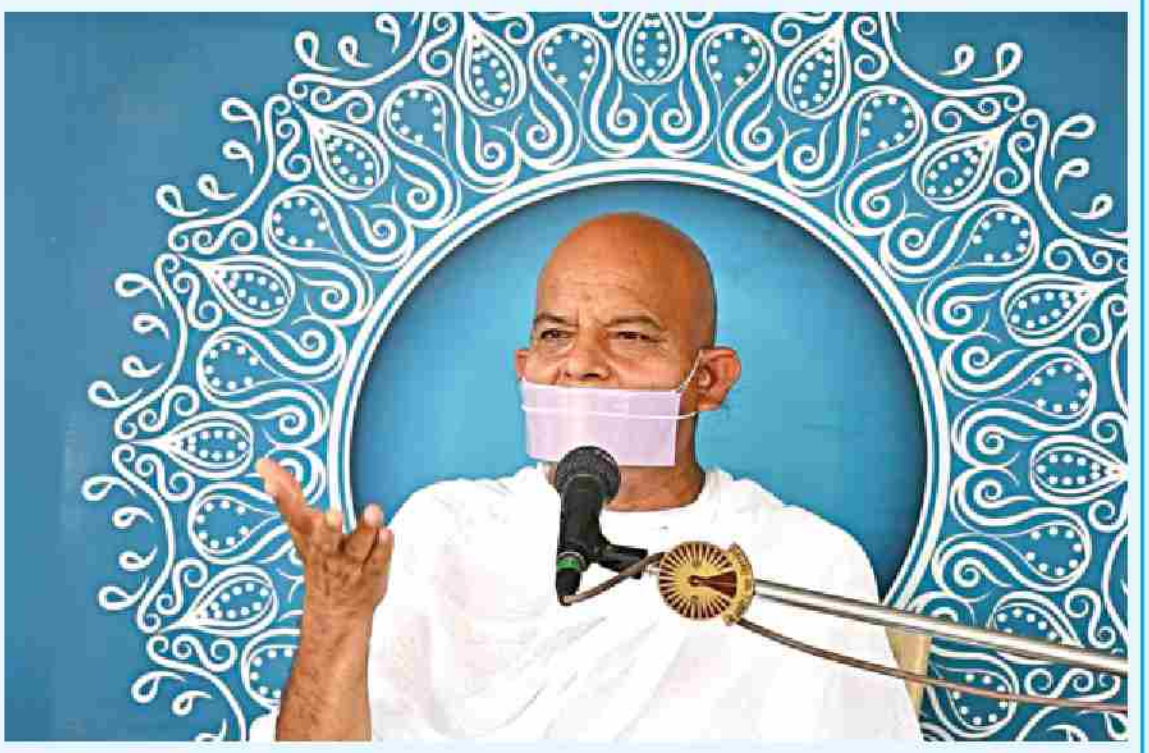

पीर, वड़ोदरा, ६ अप्रैल, २०२३

अनंत आस्था के केंद्र आचार्यश्री महाश्रमण जी अपनी धवल सेना के साथ लगभग ६ किलोमीटर का विहार कर पीर ग्राम के श्री पटेल ग्लोबल स्कूल में पधारे। मंगल देशना का रसास्वादन कराते हुए अणुव्रत अनुशास्ता ने फरमाया कि शिक्षा का, ज्ञान प्राप्ति का बहुत महत्त्व है। शिक्षा प्राप्ति के लिए विद्यार्थी विद्यालयों, महाविद्यालयों और विश्वविद्यालयों में पढ़ते भी हैं। विदेशों में भी पढ़ने के लिए जाते हैं।

शिक्षा अपने आपमें एक पवित्र तत्त्व है। शिक्षा लौकिक और लोकोत्तर रूप में होती है। लोकोत्तर-अध्यात्म विद्या जहाँ धर्म शास्त्र है, आगम आदि की भी उपलब्धि होती है। अच्छी चीज को जान लेना एक उपलब्धि है। जानने के बाद उसे जीवन में उतारने का प्रयास होना वह और भी बहुत बढ़िया बात हो जाती है।

ज्ञान का सार है—आचार। जो आध्यात्मिक अच्छी विद्याएँ हैं, उनका आचरण हो वह ज्ञान की निष्पत्ति का तत्त्व है। शास्त्रकार ने शिक्षा प्राप्ति में पाँच बाधाएँ बताई हैं—अहंकार पहली बात है, यह एक प्रसंग से समझाया कि ज्ञान देने वाला गुरु होता है। गुरु का मान-सम्मान रखना चाहिए। गुरु को अपने से उच्च स्थान दें। ज्ञानदाता और ज्ञान के प्रति सम्मान का भाव हो।

दूसरी बाधा है—गुस्सा-आक्रोश। तीसरी बाधा है—प्रमाद। व्याकरण तो अलूणी शिक्षा है। व्याकरण का ज्ञान होने से एक आलोक मिल जाएगा। चौथी बाधा है—रोग-बीमारी। पाँचवीं बाधा है—आलस्य। ज्ञान के लिए परिश्रम चाहिए। आलस्य विकास में रिपु है। श्रम हमारा मित्र है। इन पाँच बाधाओं से विद्यार्थी दूर रहे।

साधु हो या गृहस्थ परिश्रम करने से ही विकास हो सकता है। गुरुदेव तुलसी और आचार्य महाप्रज्ञजी ने बहुत ज्ञान कंठस्थ किया था। परिश्रम करो सफल बनो। ज्ञान प्राप्त करने से शास्त्र में चार लाभ बताए हैं—श्रुत मिलेगा, मैं एकाग्रचित्त बन सकूँगा, अपने आपको धर्म में स्थापित कर सकूँगा और स्वयं धर्म में स्थापित हो दूसरों को भी धर्म में स्थापित करूँगा।

ज्ञान के लिए समय निकालना चाहिए। सलक्ष्य ज्ञान के क्षेत्र में समय निकालने पर आदमी विकास कर सकता है।

कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेश कुमार जी ने किया।

आत्मशुद्धि का साधन है धर्म : आचार्यश्री महाश्रमण

पदमला, ६ अप्रैल, २०२३

अणुव्रत अनुशास्ता आचार्यश्री महाश्रमण जी अणुव्रत यात्रा के साथ प्रातः विहार कर पदमला गाँव स्थित ओमकार जैन तीर्थ के परिसर में प्रवास हेतु पधारे। परम पावन ने मंगल देशना प्रदान करते हुए फरमाया कि धर्म आत्म-शुद्धि का साधन है। धर्म शब्द का अर्थ कर्तव्य के रूप में भी किया जा सकता है कि जैसे राष्ट्र धर्म, ग्राम धर्म।

धर्मास्तिकाय को भी धर्म कहा जा सकता है, जो पूरे लोक में फैला हुआ है। एक महाव्रत धर्म और एक अणुव्रत धर्म होता है। गृहस्थ जीवन में भी व्यवहार रूप में धर्म जितना हो सके, रहे। अहिंसा, संयम और तप यही धर्म है, धर्म का सार है। व्रत और त्याग अच्छी चीज हैं। साधु धर्म का बड़े रूप में पालन करने वाला होता है।

सामान्य धर्म की जो बातें गृहस्थ जीवन में उपयोगी हो सकती हैं, वो हैं—पात्र में दान देना एवं शुद्ध साधु को अपेक्षानुसार दान देना। गुरु के प्रति विनय भाव रखें और सब प्राणियों के प्रति दया रखो। न्याययुक्त वर्तन व्यवहार हो एवं परहित करें, दूसरे का आध्यात्मिक कल्याण करने का प्रयास हो। लक्ष्मी-संपत्ति का घमंड नहीं करना चाहिए। सज्जनों-संतों की संगति करनी चाहिए।

ॐ अक्षर में पाँच पदों के आधाक्षर आ जाते हैं। पूजनीय आत्माओं का स्मरण करें। भाव शुद्ध रहे। आचार्य तुलसी ने जो अणुव्रत की बातें बताईं, उन सामान्य-सी बातों को कोई भी जैन-अजैन स्वीकार कर अपने जीवन को अच्छा बना सकता है। साधु के तो सर्व हिंसा का त्याग होता है। गृहस्थ जीवन में भी अहिंसा की ओर कदम बढ़ाएँ तो गृहस्थ मोक्ष की दिशा में आगे बढ़ सकता है।

पूज्यप्रवर के स्वागत में बाव पंथक की बहनों ने गीत से अपनी भावना अभिव्यक्त की।

कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेश कुमार जी ने किया।

प्रो० मुनि महेंद्र कुमारजी का देवलोकगमन

मुंबई।

आगम मनीषी बहुश्रुत परिषद संयोजक प्रो० मुनि महेंद्र कुमार जी स्वामी का दिनांक ६ अप्रैल, २०२३ को दोपहर ३:२३ पर गोयल भवन, आइरिन अपार्टमेंट, विले पार्ले में देवलोकमन हो गया।

आपका जन्म मृ०कृ० ६, संवत् १९९४, २३ नवंबर, १९३७ में मुंबई में हुआ। (मूल निवासी-कच्छ, भुज)। आपके पिता का नाम जेठालाल झवेरी एवं माता का नाम सूरजबहन झवेरी था।

आपने २० साल की उम्र में मुंबई विश्वविद्यालय से बीएससी (ऑनर्स) में प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण होने के बाद का०कृ० ६, संवत् २०१४, सन् १९५७ में सुजानगढ़ में आचार्यश्री तुलसी के करकमलों से दीक्षा ग्रहण की।

अग्रगण्य : लाडनूं (सन् १९८५)। आचार्यश्री तुलसी द्वारा।

– 'मानद प्रोफेसर' व 'शोधमार्गदर्शक' रूप में मनोनीत, १९९३, JVBI यूनिवर्सिटी द्वारा।

– 'आगम मनीषी', २००६, लाडनूं, आचार्यश्री महाप्रज्ञजी द्वारा।

– 'बहुश्रुत परिषद् के संयोजक', २०२०, हुबली, आचार्यश्री महाश्रमण जी द्वारा।

अन्य उल्लेखनीय बिंदु : विज्ञान, मनोविज्ञान, पराविज्ञान, जैव-विज्ञान, भारतीय एवं पाश्चात्य दर्शन के विद्वान्।

– जैन आगम, जैन दर्शन और प्रेक्षाध्यान की वैज्ञानिक व्याख्या के विशेषज्ञ।

– संस्कृत, प्राकृत, पाली, अंग्रेजी, जर्मन, हिंदी, गुजराती, राजस्थानी आदि अनेक भाषाओं के अधिकृत विद्वान्।

– शतावधानी।

– अणुव्रत आंदोलन, प्रेक्षाध्यान, जीवन विज्ञान, अहिंसा-प्रशिक्षण जैसी अध्यात्म-मूलक प्रवृत्तियों में सक्रिय प्रचारक की भूमिका निभाई।

– अनेक राष्ट्रीय, अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलनों में सहभागी रहे।

– आचार्यों के इंगितानुसार दिल्ली में सुदीर्घ विहार कर अकालीदल के नेता संत लोंगोपाल से भेंट की। उन्हें आमेट में विराजित पूज्य गुरुदेव श्री तुलसी के दर्शन हेतु प्रेरित किया, जिससे आगे चलकर पंजाब व भारत की एक बड़ी समस्या का हल हुआ।

– अग्नि-परीक्षा के रायपुर प्रसंग के समय मुनिश्री दिल्ली में विराजमान थे। उस समय प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी से संपर्क साधने में मुनिश्री का भी योगदान रहा।

– जैन विश्व भारती के विकास के लिए आचार्यश्री तुलसी के निर्देशानुसार मुनिश्री ने लाडनूं में १८ चातुर्मास किए।

– योगक्षेम वर्ष के कैलेंडर निर्माण में अपनी सेवाएँ प्रदान की।

– उत्कर्ष एवं उत्थान के रूप में मुंबई चातुर्मास की आध्यात्मिक तैयारी कराई।

– आगम संपादन के महत्त्वपूर्ण कार्य से भी मुनिश्री लगातार जुड़े रहे। भगवती सूत्र के भाष्य लेखन में मात्र अंतिम दो शतक—४० और ४१ शेष रहा था।

– तेरापंथ के आचार्यों की सन्निधि में आने वाले विशिष्ट व्यक्ति (यथा-मदर टेरेसा, ए०पी०जे अब्दुल कलाम इत्यादि) और आचार्यों के संवाद में अनुवादक की भूमिका निभाई।

– आपश्री ने प्रेक्षाध्यान पर कई पुस्तकों का संपादन किया है। अवधान विद्या में भी आप पारंगत थे।

– आपश्री द्वारा १५ से अधिक पुस्तकें लिखी गईं हैं।

– अंतर्राष्ट्रीय प्रेक्षाध्यान शिविरों के दौरान प्रेक्षाध्यान पर ऑडियो-विजुअल व्याख्यान भी आपने दिए।

मुनिश्री के भावी भव के उत्थान की आध्यात्मिक मंगलकामना।

अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद् के लिए मुद्रक, प्रकाशक एवं संपादक - **पंकज कुमार डागा** द्वारा मै. जी.के. फाइन आर्ट प्रेस, सी-1, एफआईएफ, पटपड़गंज, औद्योगिक क्षेत्र, दिल्ली-110092 से मुद्रित तथा 210, दीनदयाल उपाध्याय मार्ग, नई दिल्ली - 110 002 से प्रकाशित। कार्यकारी संपादक : **दिनेश मरोठी**